

दिक्षायाउपाध्याविधिमाह

धर्मरत्न ब्रह्मचार्य सुरत श्री महाविहार

II-197





ॐ नमः श्रीमहादेवाय नमः ॥ ॥ दिक्काया उपाध्याय विधिमाह ॥ ॥
नकम. लिखायः ॥ गुग्गुलुलः ॥ पक्कगवः ॥ सिन्धुगवः ॥ आदिपूजा ॥ आदिका
य ॥ मन्त्रुलथिल ॥ सगाकन ॥ प्रिसमाधि ॥ ॥ कृम ॥ मर्ग ॥ मामिकपूजा ॥ ॥
विधिथं देवपूजा ॥ निलाक ॥ नादि ॥ यधर्मा ॥ वलि ॥ पं ॥ ला ॥ चं ॥ गुति ॥ ॥ यनसि
षापनि ॥ मप्रानलस्यय ॥ गुग्गुलुलदनक ॥ नूध्वषनाकन ॥ स्थानकिग हाकल ॥
पंचीने ॥ ॥ स्वकन ॥ नूध्वषयामिदं नाथत्वमेव आत्मा महाविद्या ॥ देनाय देगुग्गु
किमि सात्मा ॥ लपोल ॥ किमि सनप्रार्थनायाना ॥ लपोल ॥ यगथि क्रधा लभा ॥
॥ ॥ सर्वसत्तात्मात्मान सागनादूह्य वरुत्वं प्रमिच्छापनाय ॥ सर्वसत्त्व ॥ नूध्वदिंस
मर्त्त संसावहादी संमद्रकन ॥ गथधालसा ॥ समद्र समग्नपंक सदूनावीरु ॥ कल

कुरुहिनिर्मगल. व्याह. शुक्र. दा. ॐ ग्यादिं थ हा डाय मरु स्या चाह थ गी थां. थ थं जि
पनिथ कास्य विद्या डी. ॐ ल पा ल स्य. ह ना थ हं गु नू. चू या न धा ल सा. वू ध पु नि ग्म या यः
यन ॥ ॥ आ हं नू क स्य व पु थ रि धे का य म हा म गु ली व रू न वा ॥ **आ हं नू क या च तु** ॥
थ रि धा क ला य या नू ध न ॥ म हा म गु ल न अ धा ६ म गु ल द य के मा ल सा ॥ ॥
ह म वा क वि ष्या मि यू ष्मा रि का य के व नी यं न ल क रू वी ॥ **ह ना थ हं गु नू. ह नू चू ल**
पा ल या नि र्म ह म स ही न या य ॥ यू ष्मा रि ॐ ग्या दिं गु लि नी मा ल उ लि नी या नो डी. ॐ ल
पा ल प नि र्म ॥ गु नू. मा प्रा. उ पा ध्या. च आ पा. क ल्या न गु नू ॥ पु लि र्म जि प नि स का र्थ
स ॥ क नू ल वि रू या दा डी. नू का का व ल र्म यो वि ष्या रू न ध र्क ॥ ह ना थ हं गु नू. चू ल पा
ल र्म थार्थ ना या ना ॥ थ न गु नू र्म कि र्म न ॥ ॥ **थ न जि ष्या पि. र्म न र्म ला व ना ॥**

तं नातिन्यत्र न विमलुतलं कं कावकि वदेरु ऊ ना कं कावो हू गं कृष्णाकि कृष्ण नृप नः
 जन सं कृष्ण लख लं उद्ध कं भो यि आ न व ग्यां यं ना नि का गत ४ नि आ यो गं न कं काव ह
 दि नी त्या पा वि ना म्य य कृ मा न व ड हं का वं म हा क्री टं वि हा व्या ॥ ॥ श्री ख ल ख न
 हा य ॥ ॐ ह्र म् ह नि ह्र म् हं हं हं ॥ ॐ गं ह्र म् हं हं हं ॥ ॐ गं क्रा प य २ हं हं हं ॥ ॐ
 आ न य हा ४ त ग व न वि द्या ना ड हं नृ म् क स्य स र्व पा प ना स य हं हं हं ॥ ॥ ध न म
 लु त वि स हं न य व कं ॥ प च ग र्थ वि य ॥ पा द्या दि ॥ नि सा अ न ॥ ली हा नि न क ॥ व ड ॥
 ना का ॥ म न हं ना य ॥ ॥ ध नं उ व प्र हं पा य कि पा ति स नृ ध या च क ॥ सा दृ द् ना य नृ
 कृ म् व ल ता य द्वा हा स्तां भि म् भ त स्य हा य कं ॥ वा क्य ॥ ॐ डी प्र व न स स्का ना य स ग उ व
 प्र स्ता ना य ॐ व ड सा यो य स क म् व डि न पा दा नी नृ ध प्र मि ट्वा हा ॥ ॥ प च

पञ्चावपूजागुत्रयापा १२. दक्षनादं १२. स्यां गुत्रनमस्कात्र ॥ **धन** पादप्रकाशं ख
नहास्यं गुत्रप्रहानस्नानविय ॥ ॥ **क**जीमानस्याथयप्रमिञ्चास्मर्गं वारिना
षिर्गं सिद्धिं रुक्मिणी सानिध्यां कुरु ॥ **धन** यथा यथा यथा ससं श्रीने ॥ ॥ **धन** मि
थ्यथकालिनकिं निम्नस्य नत्तमलुलवीयके ॥ गुत्रयामदाहलप ॥ **नृ**ध. पूजा ॥ **ध**
नत्तमलुलयाखकने ॥ **धन** सिद्धिं नृमिष्यतावना ॥ **क**मलं षड्विय ॥ **ता**वना ॥ ॐ
वज्रकीलकीलयास्य सुषीविज्जानुवन्ध १२. दं. दं. का नोहृापिगत्रस्यंत पृथकी
लयित्वाकीवलस्मिहिना १२. सर्वदेवानिर्दक्षर्गं चमिष्य सैकाय तत्तमनरुद्रप
विचिन्म गिलगि चन्द्रक. हंजागमू. गिलसर्कमासका कानाम ध्यपकसचिक
वज्रविरोध. गंज्ञानदवीहृ चन्द्रक वज्रवनकानमर्गं मनुमागीत्यनपीगहृक वः

ऊलसिद्धनले ४ पूर्वजमहिवापकवचिर्गंध्यात्वा ॥ ॥ धनं गुणं नारायणं नमस्कृत्य ॥
 रूपयाया ॥ मन्त्र ॥ ॐ श्रीसंकर्षणाय नमः ॥ चरुं च गनिद्यामयं चरुं नीलमूकस्य न
 कुरु स्वाहा ॥ ॐ स्वस्त्यो नमः ॥ ॥ धनं गुणं नारायणं नमस्कृत्य ॥ वज्रं
 नवसप्तलसधिय ॥ ॐ सप्तगिरिस्तुतव ऊं स्वाहा ॥ धनं वाक् पूजा ॥ मन्त्रं लघिलं ॥ स
 कस्य न किमनं ॥ भगवन् ॥ कृष्णाय नमः ॥ सगं भो हनिमय ॥ दक्षिणा पूजा ॥ दंतुति
 समय ॥ अद्भुतलहिय ॥ समयो वक्रवलि दाय ॥ गीत ॥ मधुमिन् ॥ नील ॥ नक
 वल्क ॥ नमस्कृत्य ॥ पितृवक् ॥ हाता रक्तधुमि ॥ ॐ नमिष्ये तं ग्रहविधि ॥ ॥ धुमिन्
 रूपूजा ॥ गनवक् च वाहालं मन्त्राल ॥ धूमिन् गनि दाय मन्त्राल ॥ ॥ धनं नमिष्य
 पविद्रा सुय ॥ प्रथमं गुणं च न दूतिर्यस्य पकाननं ॥ दूतिर्यमिष्ये तं धर्मं चतुर्थं

सहस्रैरव. पञ्चमं आदिकर्म. त्वष्टमं समयपञ्चमिका ॥ धर्ममस्तु च तत्तत्पूज
मिष्याया प्रष्ट्या स्वया आचतुर्थमिष्या कवियज्ञं गुरुमृष्ट ॥ ॥ ॥ ॥
ॐ नमो श्रीमहादेवी तनवजसत्ताय ॥ नमो लोका नाथाय ॥ ॥ अथ श्रीविद
न विधि ॥ १ वाय ॥ १० मण्डल ॥ पञ्चगव्यम् अर्चन ॥ सिद्धगया ॥ प्रिस्माधि ॥ कुंभमधि
वासन ॥ श्रीमद्यपास लोकेश्वर पूजा ॥ वसिष्ठविय ॥ ॥ माघान्तस्वय. धनधनप
निस्वने ॥ १० मण्डल दनके ॥ विसर्जन याचके ॥ मिष्याधि वासन ॥ पञ्चगव्यविय ॥
वज्र. गात्रा. मण्डं गीय ॥ धनमण्डलथाचके ॥ वाक् ॥ अन्तर्धर्मिणादि ॥ धनमूलमण्ड
लसुखानन्दोऽयं के वीय ॥ श्रीमद्यपासमण्डलसर्वविज्ञान् कार्त्तिक ॥ स्थानवीयके
॥ ॐ श्रीमद्यपास लोकेश्वर वायवज्रपूर्यप्रतिष्ठ स्वाहा ॥ ॐ श्री १० लोका वीजयाय नमो

[illegible]

कि॥ रव अथ युक्॥ पाठुता॥ इ अथ युक्॥ गा ना॥ रव अथ युक्॥ पञ्चपरावपूजा
॥ ॥ सुनि॥ नृकाजि कामसीदीविकल्पसितर्षा॥ पुद्गलचक्ररुर्न॥ काम ह
कोटविषविगर्कदर्शन॥ नागप्रचक्रुर्न॥ मोहास्यश्वसनीयकोटनभयं॥ चिन्ता
नगदावर्त॥ प्रह्लादमन्त्रवर्तनया॥ सजिगवान्द्रुदायन॥ स्मनम॥ ॥ रवकन॥ सोर
ह॥ उर्वदग्निना॥ ॥ रव नष॥ किपनिस्त॥ थअरनामनथथा॥ दस्तनायाना॥ ॥ श्वयं॥ र्म
दिवसामृत्यादाय॥ यावदावाचिमहुलनिरवहुता॥ थनियादिवसथुगुधम्मलाराया
न॥ रव नष॥ धालसावाचिमहुलनिरवहुता॥ ॥ रव नष॥ रगवर्नमहाकावृत्तिक॥ स
र्वदग्निम॥ सर्ववन्तरयापह॥ ॥ रव नष॥ रगवानरुयगधिंक्षुधालसा॥ कनूत्तवन्त॥ रग
हविष्यवर्नमानसिअन्त॥ समस्त॥ रवनाविश्याक॥ समस्त॥ वेपियारायमोचक॥ ॥

महापूत्रपुत्ररंशकार्यः नूनं नूनं वकार्यः गवर्नग कामिदीपादिनामयं ॥ **मङ्गलार्चनं पूनं**
नानागममुनैमाचकैमकिडा गपुल्य मदसत्रिव यथोक्त वृद्धयाकैडिपनिमवतडा
नैमनूष्यलाकसत्प्रवृ ॥ **॥ धनधर्ममलुलदनकै ॥** उँ आर्यधर्ममलुलसर्व
विष्णानूसावेहै ॥ **॥ उँ आर्यप्रह्लापावमिनायेवजपूर्य्यप्रमिह स्वाहा ॥ मध्य ॥** गं
धयूहा ॥ **हने ॥** दसहरमिगवा ॥ **खडा ॥** समाधिवाजा ॥ **धनै ॥** लंकावगावा ॥ **डा ॥**
डा ॥ ललितविषवा ॥ **खडाकथुर्कै ॥** सधर्मा ॥ **खडाकथुर्कै ॥** सवर्कपुरासा ॥ **डा ॥**
थुर्कै ॥ गथागगउकका ॥ **डा ॥** **कथुर्कै ॥** पत्तपवावपूजा ॥ **॥ लुगि ॥** या
जायादिकदूखगफमहसांरदूष्यनंप्रासिनां राणधामुकपऊलादहनहृदसत्वा
समाकषर्गि नूपासंरजगगसमधनगिरयक भदूखवाकैकोनसंरदूष्यपूगठय

गायमहागंधर्वाय नमः ॥ ॥ रवकने ॥ सा ६ ह्रस्वनामा प्रवृद्धिनामार्थ
मंदिवसमूदाय ॥ ॥ रवकने ॥ किंपनि सध अ २ नामर्न धर्था दस या नाम धनि यादि नः
सधुगुलि धर्मसाययाग ॥ ॥ यावदावाधि मलुल निरव लुना धर्म भवती गद्य
मिवि वाग नामर्ग ॥ ॥ रवकने ॥ वाधि मलुल रव लु मरुल ॥ ॥ रवकने ॥ धर्म स्कि किंपनि स
नलाने धर्म रुय गायि क धल सा वाग ६ ॥ ॥ रवकने ॥ आदिना वगा विज्या क क धर्था
क धर्म प्रहापा वमिना या सवन अने ॥ ॥ धन संघ मलुल वाय क ॥ ॥ ॐ आ
र्य संघ मलुल सर्व विद्या न सा वे हं ॥ ॥ ॐ आर्या वली कि नं गव याय वज्र पूर्ण प्रति रु
खाहा ॥ ॥ रवकने ॥ मधुय ॥ ॥ रवकने ॥ गगन गंजा ॥ ॥ रवकने ॥ समन रुजा ॥ ॥ धन ॥ वज्र पा
नय ॥ ॥ रवकने ॥ मरु धी पा ॥ ॥ रवकने ॥ रव अथ धु क ॥ ॥ रवकने ॥ किंपनि गती

रुडाथधुकी ॥ खगती ॥ डड ॥ धुकी ॥ पक्षपवावपूजा ॥ ॥ कुनि ॥ चलावप्र
तिपन्नकाहवसुखिसेषादविर्द्धिषिनश्चलावश्चरुतस्मिनासमवेनासा नामहाशा
गिनः ॥ ॥ सोवन्नपूगलाहगवगायसंगलव्याहना. प्रह्लाजितसमाधिगफवे
पूष्य. संचायनसमनमः ॥ ॥ खकने ॥ साहमवनामानुर्वदनिना. ॥ मंदिवसम
त्यादाययावदावाधिमुखनिखलुह ॥ ॥ खला ॥ किपनिग. थडा ॥ नामनयध्वंदसया
नामथनियादिमस. पुगुलिधर्मजाययाग. खला ॥ वाधिमुखलेखलुमइली ॥
अवेवर्तिकसंघसवर्तग. मिमिपूना. आयावलाकिने. खननेवेवर्तिकवाधिसत्यः ॥
गमनामय ॥ ॥ खला ॥ अवेवर्तिकसंघयाककिपनिसवनजन. संचकेयुगधिंक्र. धा.
लसा. आयावलाकिने. खननेसमलसत्वप्रानियाग. मुकि. पदलोकाविद्याकक्र. धा.

धिं क्रु द वनादकी या ह डाने प्र य थ धिं क्रु सं घ या स जन डाने ॥ समं वा ह न क्रु मां
द गदि रत्न के धा तु स नि य नि नी वृ क्षा र ग व नी वा धि स स्वा श्र न्ना वा र्था या धा य ॥ **कि प**
नि स न्र क मन या ना थ धिं द मि दि ग सं म् दा वि ज्ञा क था स प र्व द कि त प र्दि उ क न न्र
जि न ने नि य वा य ॥ २ ॥ न्र उ र्ध थ मि दि ग सं वि ज्ञा क था स ग था ग न द की र्क ह ने वा
भि स त्व द की र्क गु नु पा धा ष नि स ह डाने ॥ न्र ह न्र व ना मा य की चि का य वा धा त्ता
हि ४ स र्व वृ क्ष वा धि स स्वा न मा ना पि त मा नु द या सं ग मा ॥ २ ॥ न्र न नि र वा न न्र ष म या वा र
प र्क ३ क र्म क र्म का वि र्ग वा र व न् ॥ **कि प** नि ग्व व र्त्त कि मि र्थ न्र क र्म पा प वि कि र्थ या र
ना द य ड ग वि न न व व न न्र ग र्त्त या दा पा प द यि ड ॥ ह ने स म र्क ग था ग न वा धि स त्व या
क या दा पा प द यि ड ॥ ह ने मा म व द या क या दा पा प र्क र्थ स द यि ड ॥ म व न या न का ३

पाप धर्म सा दा पाप द यूडा ॥ युगुतिऊ नमसा दा पाप ॥ हनं हं थुऊ नमसा दा पाप ॥
 किमिस्थं धर्मिं र पाप सकल्यं गीतन किडा ॥ ॥ गत्सर्वत्र कथ्य विनुयित्वा तु ययित्वा
 सर्व कुरु वाधि सत्वा ता न्ना वाया स्या निके न्ने य या व व या प्र व न या पु नि दे स न या ॥ हं
 ना प थ पाप सकल्यं च गु तिया चा ज्यल मूदा उ ति ग्य न का ॥ समस्तं न थ ग न वा धि स
 त्वा ह जने ॥ गु तु या नि क न स प्र का स या स्या वि ज्ञा क ॥ द ज ना या स वि ज्ञा क थ स थ
 धिं क च त पा ल या ह ड न ॥ ॥ ज्ञान सम ल त प्र ति द्या द या मि ॥ कि मि ति न ध र्म या
 दा गु म सि या डा च त पा ल कि गु म व द या ना समस्तं पा प गी ल न रू ल ॥ ॥ त र्म न्वा ह
 न ह द न य धा ग न्ना य रि ह ना या व डि र्व पा ता दि पा र्ग प्र ति वि न ना ॥ ह ति ध्य पिं क मि स्थ
 न क वि न्नु न क म न या डा ध क गु न्ने न न्ना ह्य द य क र्व ग थ धा र ता ॥ क पा या द डा पू य

पिह्यं ॥ ज्वलनजिवनवृहत्तपूतसं ॥ यत्तर्गप्राप्तियाजिवसुत्रसमस्तु ॥ ॥ निरुक्त
दक्षानिहर्तृभक्त्या-वर्जितोदयाङ्गो-सर्वसर्वेष्वन्नेसकने-कृत्तुपिपिलिकाम्
यादाय ॥ नालेन्द्रादि ॥ ज्ञानाङ्गदायाङ्गमेत्याक ॥ हृत्सुत्रेनूत्रुस्वजन्त्रादिप्राप्ताङ्ग
मस्याक ॥ महाकनेनावने ॥ समस्तप्राप्तियेकस्याकेदयावने ॥ खड्गनज्जायसपुस
प्राप्तिर्वादि ॥ यथैर्यपिंस्त्वप्राप्तियाम् यधर्मनप्रतिपालयाम् ॥ ॥ अवमकाह
० मांवेनाम्पादाययावच्चनादिभिमिनियावत्सुथीदियाने-प्राप्तमिपार्गपुत्रायप्राप्त
मिपार्गपुत्रिचित्रयामि ॥ ह्युत्रहनाय ॥ यत्तलपालस्यन्नाहोदयकस ॥ किमिह्यं य
धर्मसाययाम् ॥ ज्वलनोधालसायनियानाद्रिङ्गना ॥ ज्वलोनासूर्यउदयमस्तु ॥ य
लोनाप्राप्तियाजिवकायमष ॥ प्राप्तिस्यायमष ॥ ॥ निरुक्तदक्षानिहर्तृभक्त्या

चक्रिणादयावन्सर्वसत्त्वेषु प्राप्तिरूपं पूज्यदत्तकूटकूटपिपिलिकाभूषादाय
॥ **हनाय हनु** किमिहं नालं आदिं दयाया रयं मयूगा ॥ मयूगं मयूगं मयूगं मयूगं
नयाय मयूगा ॥ लकावन्कुराया प्राप्तिरूपं दयावन्कुराया कुराये ॥ समस्तसत्त्वप्राप्तियार्थं
हन्व ॥ खड्गनकायसत्त्वप्राप्तिरूपं ॥ यथिपिं सत्त्वप्राप्तिपनिस्तु यथ धर्मनैवमि
पालयाय ॥ मयागुनालं कुराया किमिहं ॥ ॥ नवमेवाहं प्रथमं नौगं नौगं मायाया
महना नूविचियं नूविचियं नौमि ॥ **यथी किमिहं** यथ सविर्गयथ वृषिहं किथं गयथ
स्यनगयथ विचियं गयथ यथी किमिहं याय ॥ ॥ पुनरप्यनं समन्वाहं रदनयथ अगं
नौय ॥ **हनीयावडिर्वं नूदत्तदानं नूवन्कुराया** ॥ **हनिष्यपिं हनं नौ** हनिष्यं यक
मनयागुनालं धाय ॥ गयथ धातसा ॥ वृषपूयपिहं जीवनवहसत्त्वप्राप्तं ॥ मयनम

विश्वकंदानमकाडा ॥ नृवंससंमनडा ॥ वृंक्रचर्यमवृगुलिंमनडा ॥ ॥ मृषावा
दंरुनाभेवयमशुप्रमादरुनं नृयगीतवादिमालागन्धविलेपनं ॥ **हर्नं नृसख** म
क्राक ॥ लूप ॥ गकि ॥ वजा ॥ ॥ ॥ नृदिनंकायनडा ॥ वृवमुकदं मनडा ॥ ॥ धर्ममननया
खनंमदडा ॥ मर्नमहाडा ॥ वाद्यंमथाक ॥ लाकल्यानंमदक ॥ नखाकउपकगन्धन
लेपनमयाक ॥ चिकनंमवडा ॥ ॥ वर्ककरुषनंउच्चसयनमहासयननृकास
हाऊनंपुगिविचगा ॥ **हसिध्विर्हर्नं** नानावर्कवमुनंमगिडा ॥ हिंदोलवागापलंकिदा
संमचाद ॥ गकाडा लासालिव नृदि संमचाद ॥ वलमशुयकं नृवंससंमनडा ॥ ॥ धर्मि
पिंकनसमशडा ॥ धुगुगिहमिह्यंथुलिनीलमंमाला ॥ ॥ ॥ वमवाहं नृमूकनामा
॥ मीवला मृषादाययावच्च वादिगमिनीयावच्च सूर्यादयाननं नृदशदानं नृवक्रव

र्था ॥ हं नाथ हं गुत्र गच्छात् लपो लस्य आह दयका न्त्रार्थं ॥ किमिह्यं च डारना मनथुगु
 सिवा साहा ॥ थ धर्मसाय सागरम सागध तसा ॥ थनिरा नागिडा डाडा ॥ ग्व साग सूर्य उड
 दय मरु ल थ साग न्त्र स ग्य मझागा ॥ मवन मवि यक दाने मका लो ॥ वृक्ष चर्य मषू गुलि
 नय मषू गा ॥ ॥ मृत्वा वा दं सूना मे यर्य मद्य प्रमाद स्य न नृ गी गवा द न मा ना गं ध
 लं वनं ॥ हं नाथ हं गुत्र किमिह्यं नृ स ग्य वझाय मषू ॥ लू प्र गजि वजां आदिं काय रीगु
 वस्तु क नय मषू ॥ थ गी ने गु ४ प्या वन दू य ४ म हा लं ४ वा द पा य ४ ला क खाने दू य ४ प क ग
 न्ध न लं व न या य ४ न ला क चि क नं दू य मषू गा ॥ ॥ व र्क के रू व नं उ च्च स य नं म हा स य नं
 नृ का ल हा क नं पु नि वि त्र या मि ॥ हं न ना ना व र्क वस्तु न गि य मषू गा ॥ हं डाल ४ खा ना ४ प
 लं की ल ४ ना डा डा ला सा ४ २ वा आदिं ची मे गु ॥ वी मरु यक नृ वं ल स न य गु ॥ थ र्थि गु व

सुकसक्तिमित्रसमकूल॥ ॥ न न ना हं नू क मां ग न ग मां नू यी नां गि ष्यां नू नू गि ष्यां
नू नू वि धि य नू नू क मां मि ॥ ह ना थ ह गु नू थु गु ति न कि मि स्यं ॥ या ग नू नू म वि न न ह
न ॥ स म स म थ ग न पि न ग थ स ना ॥ कि र्थ ग थ वि धि या न ह गु नू ॥ आ डा कि मि न ह
ल पा ल स्यं ॥ आ हा द य का थ ध ध र्म कि मि स्यं ध ल ल प रू ल ॥ पु नू कि कि न न कः न
म ल्का न ॥ ॥ ध न नू र्ध या य ॥ ना य नू क ग सा द द नू ल सि नू र्ध दा र्हा र्हा थु मि
न स्यं म लु ल स र गि हा य क वा ना स रू य ॥ वा क ॥ ॐ स न र सि मि र क व र प व र ह र हा र ह
ही र हं २ ॐ का न व व क र व स ध न र धि वि र धू नू र न व र म न र व व र न मि स ह थ प्र ति म लि
ग म वि ने क ल र ग प रू र ग व नू हा मा दि य क म व नू ह क र व न व व क र ध ध न द रू म वि ग ल
य चि रू च न ल य नू र्ध पु ति रू व न दा य र्हा हा ॥ ॥ व ग का ग य न नू ॥ ॐ स न र ह

रुडाथयिं कुरु ॥ ॥ विशाचमसम्पन्नरुगल्लोकविदन्मन्त्रपुत्रपदस्य सा
नयिसासादवानाचमन्त्रपुत्रानाचकुरु रगवान ॥ **धुक्ररगवान** रवि विद्यानिवर्त
मानसिडा ॥ गयधमससाडां गुडायिगुवींगुवेरुमानसिडा ॥ स्वर्गमेधपानसयो
रवसिडा ॥ विशानसंरुकरुडाक ॥ थयिं कुरुगयगल्लोकविदसिडा गनुसंमद ॥ प्रा
निदकस्यालालाकुरिदस्यदुरुयावीन ॥ देवनायांमन्त्रपुत्रां देवनायसंसेनथस ॥
थयिं कुरुगयगल्लोकविद ॥ ॥ ॐ दं चपाषधं आलसम्पन्नसंमादानं चिकित्सका वा
यचिद्रूपविष्कावाययागसंलगायसर्वस्यनां मूक्यायदुरुत्वं प्राफयेत् ॥ **वास्वधं**
आलं थयिं गु धर्मलाययर्थं अर्थनि ॥ चिद्रुया आनंकावयागचिद्रूपविष्कावयाग ॥ स
मलं यागलाययाग ॥ समलं प्राप्तिपनिथकाययाग ॥ किमिष्टं दुरुत्वं पदमाययाग ॥ धु

गुणिधर्मधतलपेरुतधकमुत्र्याके प्रार्थनायाय ॥ ॥ विमर्कनयावके ॥ भीतर
 ननसिफांगमध्यानपत्राववनसगावाधंगकसमावकिर्कविहनेध्वयधशुभं ॥ ॐ
 कृतावसुसिखायपद्यादि ॥ ॥ धनपुनकानहानके ॥ पिथादिपूजा ॥ महुलचित्त
 आभाषविय ॥ सज्वंवेतपूजा ॥ मूलयादकनावियरुली ॥ ॥ ॐ गिशी नूमी घ
 पाभनूदमीवदविचिसमाफ ॥ ॥ धनधननाडापातनयावकेकाय ॥ त
 मिषनैविमर्कनरुलीशुभम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॐ नमः श्रीमहादेवी नवनवजसखाय ॥ ॥ धनपुनमहुलरुतसा ॥ मिषानूचि
 वासनखर्क ॥ दनेसमलधकप ॥ महुल ४ कृ ५ सज्वन ४ पकसात्रदिगसगसं ॥ नू
 नन्नादिवाहिन्युनिधकलपधूनका ॥ पिहाडायाडा ॥ मिषापिंनूविदनके ॥

धुमिधूनकाडां दुहाडां न॥ ॥ २ ॥ राय॥ गुनमधुल॥ पद्मगवच्छाय॥ सिन्धुन
 आदिपूजा॥ आगं वीपूजा॥ आदिद्वार्य वीद्यायक द्वाय॥ आदिकाय॥ गालपूजा
 मधुसंधिल॥ गालझाय॥ ॥ नमस्कावकाय॥ ॐ नमः श्रीपद्मनृत्नशाय॥
 ॐ नमः श्रीचक्रसम्भवाय॥ अहं बुद्धा लुखलुत्तादि ॥ ॥ नमः ॥ यथा चैतद्गुण
 टिकोटि विमलपद्मनिष्ठात्सर्वेषु धर्मेषु मधुपानलं पतयात्प्रतिरिति विदुषां
 निश्चानसवायवीधनकविरि॥ नस्यवित्तावसि प्रुष्यर्कमृनिहिस॥ पद्मवतगवन्श
 पद्मनृत्नशाय ॥ ॥ गीतविश्वस्यो नृपय्यीर्गगीतयत् ॥ धनशीसमाधि ॥
 संपूर्णचक्रसमाधि ॥ ॥ ५५ ॥ सग्वन ॥ मामकिपूजा ॥ ॥ धनकिलनेनाय ॥
 किलननायना ॥ ॐ ऊटिठि शुन्यागाननं वं वं जागतिष हं ऊ ॥ विश्ववज्रस्त्रिं हं का

नकिवनरुजीवद्वयविसंघेनिसंध्यकगुह्यवीरकाववउपजलवउसवजाग
 विगानमध्याशुकासदःसहकालविश्वकलीसमयीहमीविलय॥नमध्याशुनिरिवः
 उसत्वस्वयंपंनकल्पप्रिलोकाविजयापमानामावउहंकायाविश्ववउसूर्यसु॥स
 नवकावनालासीरुचयतदयकम्यकुधन॥कल्याननववर्षतिविसंनयःकवसः
 यन्निवनिशिवलुगदिद्या॥वृक्षानिनीन॥पिन॥हविममूलसर्वेकृतेवाक्यवकुप्रयाव
 काःकमलसकिंका॥प्रतिमूर्यसुयंगकृटिजकचतुवप्रिनयःखउमृजाललाटलु॥प
 केकपासागलावलम्विमलदशुगिनः॥अतिहृषनसमृदधैखलालसुय॥वाचुवर्मा
 वलीनिलाननवलयिगार्धकालकयितकमन॥नरुकादिनागनाजीकममभुला॥वउर
 घल्लविमकनायां॥वउमूरिदयंपृक्षलनैकनिविकादयं॥अवलिर्नरुनिदयंपु
 हनमिति॥प्रेलाकमृदवास्वराप्रहासमापनः॥सवकनायांनरुपाशे॥वामायां

कपालखर्वांगदधानी ॥ गऊँ हँ का नमस्वयदिगमस्व ॥ खहुङ्गनहँ का नाल्यहननस्मि
सिद्ध ॥ दभदिगिर्विचित्राकृष्यहँ का नमस्वयदिगमस्वयदिगमस्वयदिगमस्वयदिगमस्व ॥ ॥ श्री ॥ पा ॥ ६
धूनि ॥ स्नान ॥ मनुखा ॥ नकचन्दन ॥ से ॥ पुकादिनागुलिसुथुन ॥ नकापासघाय ॥ प
जायाय ॥ पं ॥ ला ॥ र्व ॥ सु ॥ न ॥ र्व ॥ वज्रनधिसं काप ॥ मनु ॥ हँ ॥ ॥ यधर्मा ॥ वलिविरा
॥ पूर्वनिहं किसननायमिदिगसं ॥ ॥ पूर्वकाकाश्वातगवामिमाकषयत् ॥ ॥ काका
अघघघाटय ॥ सर्वद्वयदवन्द्यासुपविवावानकीलयहँ रुद्र ॥ पूर्व ॥ ॥ उरु ॥ न ॥ उ
नूकाश्वातगवामिमाकषयत् ॥ ॥ उरुकाश्वाघघघाटय ॥ सर्वद्वयदवन्द्यासुपविवावानकीलयहँ रुद्र ॥ पूर्व ॥ ॥ उरु ॥ न ॥ उ
विवावानकीलयहँ रुद्र ॥ उरु ॥ ॥ पश्चिमस्नानाश्वातगवामिमाकषयत् ॥ ॥ उरु ॥ न ॥ उ
नाश्वाघघघाटय ॥ सर्वद्वयदवन्द्यासुपविवावानकीलयहँ रुद्र ॥ पश्चिम ॥ ॥

दक्षिणसुकलाम्भारगवर्णिमाकर्षयन् ॥ उँ सुकलाम्भघघघाटय २ सर्वदक्षान् कीलय
 हँ हँ ॥ दक्षिण ॥ ॥ अग्नि यमदाति रगवर्णिमाकर्षयन् ॥ उँ यम अति य घघघा
 टय २ सर्वदक्षान् नृपविवायान् कीलय हँ हँ ॥ अग्नि ॥ ॥ नेमन् यमदग्नि रग
 वर्णिमाकर्षयन् ॥ उँ यमदग्नि य घघघाटय २ सर्वदक्षान् नृपविवायान् कीलय
 हँ हँ ॥ नेमन् ॥ ॥ वायव्य यमदक्षिमाकर्षयन् ॥ उँ यमदक्षि य घघघाटय २ स
 र्वदक्षान् नृपविवायान् कीलय हँ हँ ॥ वायव्य ॥ ॥ ॐ नमो यममर्थनि रगवर्णि
 माकर्षयन् ॥ उँ यममर्थनि य घघघाटय २ सर्वदक्षान् नृपविवायान् कीलय हँ हँ
 ॥ ॐ नमो ॥ ॥ उँ उँ उँ विषवक्वर्णिमहाकोट नाड्यमाकर्षयन् ॥ उँ उँ विषवक्व
 र्णिमहाकोट नाड्य य घघघाटय २ सर्वदक्षान् नृपविवायान् कीलय हँ हँ ॥ उ

६॥ ॥ श्रीसुम्भनाम् महाकाष्ठनाम्ना कथयिष्ये ॥ ७॥ सुम्भनाम् यद्यद्यद्याटयस्सर्वद
ष्टपृथिविसप्तविद्यमानकीलये रूंदरु ॥ श्री ॥ ॥ पं॥ लो॥ घं॥ ग॥ मु॥ सनाम्भवे
यनदेवपूजा ॥ मनुते कीलपूजा ॥ वाक्पूजा ॥ ॥ यनश्रुत्समकास्यं पिहाड
पाडाकापायाश्रमसंघोडावलिपात १ विर ॥ सिष्यपिंकथं चतस्रं ॥ पुत्रमनु
लदनकं ॥ पुत्रउहं पुत्रिपुत्र ॥ ॥ खकने ॥ गप्रमिष्यमकदोवाकवाकन
मनुलापूष्याश्रुतिं ॥ हजिष्यपिं रुद्रनंगडानि क्रनंगडानुकारनंगडादयकामु
लसस्यानकास्यं साहानहाकलपंचोदफिप्रविंहाकलपंचोने ॥ ॥ ॐ हलीक
वाश्रुदयार्थनापि पत्रलोके श्रुदयारकिंतु ॥ हजिष्यपिं ॥ ॐ हलीकयार्ममपुत्रवला
क्रयार्ममपुत्रयार्ममालसा ॥ ॥ गथागनकायप्रयसंप्राप्तायमनुते प्रवेगकाय

गथा गगनादि नृकी लीया सत्री उलायया न हनं मलुल सदा हा अनया न ॥ ॥ ता
वना ॥ ॥ सवित्र मूरवन पुदि ॥ वजा निर्गम प्रहाप न स्तान् स्व दृष्टि की वला ह की मूर्ध
न वि की स प्रहाप न स्तान् स्व दृष्टि की वला ॥ की मूरवन वि की स प्रहाप न स्तान् स्व दृष्टि की वला
न हि वि का न प्राव क सम्य न नृ पी न था ला ॥ मलुल सदा पूर्व द्वा के उ प वि ल प्र या व य न् ॥
निष्ठा चिदासन ॥ ॥ वकन ॥ मूरु क न न न व क म क या दि स या न का न र वा
क न म उ र्क का न म व म स्ता म हा न ग ॥ ॥ गायत्री व य यां ग्या थ यां ल व क ल कं तु या ह
त य मू म्वा स क प्रानि पानि सं स य स म्प दं थ का डा कि मि सा ला रु त पा ल ॥ ॥ ॐ स्वा म्वा
ह म हा ना थ म हा वा चि न यं द धं द हि म स म य न त्वां वा चि वि रु क्त्वा दे ही म ॥ ॐ स्वा म्वा
त कि मि ह ना थ ह गु न् म हा या न ग त्वा वि स्य वि ज्ञा ह ग था ग ग या वि रु वि स्य वि ज्ञा

रूने॥ ॥ वृद्धधर्मसंघः दहिमभजतदुशः पुर्वे सयस्यमहानाथमहाभारुपूर्व
वं॥ **वृद्धधर्मसंघ** थस्यस्यस्यनविद्यविद्याहूः डिपिंदूतवीनायसविद्याहूहृगुभूत
अर्धमहाभारुपूर्वस॥ ॥ नदिवत्समहायानमनुचर्यानि यविधिंदशयिष्यानि
मसंभ्यकुलांजनसंमहानय॥ **हमिष्यपिं** उभयाधकमनुचर्यायाविधिदिमिसंभ
नः ॥ **पिं** महायानयाथलरुसः ॥ **मि** हरिनकं कर्ने॥ ॥ वृद्धाक्षिरयं च संरुगाका
यकाकुचिरुवर्किनः ४ संप्राफहानमनुसंवेडमनुपुलावने॥ **हमिष्यपिं** गथमगगपि
यर्धसंउत्पदिहानभूयचिरुनः प्रकाययापापंगालगुः लीकहाननेतुल्यवडडा
उर्धमनुयापुलाव॥ ॥ मनुप्रयागमनुसंयनग्वमहावर्माभजनेमहाधोः
वंभक्तिसंहादिरिवसे॥ **हमिष्यपिं** थमनुयागगागुलैर्दमदगथासंनयागमहा

वलडाभपि स्यं मा न सं न्यतयंक व थपिं म्म क सिंद आदिं मन्त्र यावलं ऊय लपलं ॥
 ॥ श्री कान्तरुमागप्राप्य चक्रवर्त्तुनि ईगा गत्वा लमिमिमां वत्स क नू सर्वकुषा
 फयन् ॥ **लीक या नू** विर्हि नाग डीया थ धर्म चक्र प्रवर्त्तना याग थ थ थुति वर्या
 डीना द मिह्यं या निश्चयं गथा गत या पद लाय ॥ ॥ गनी वत्स प्रयम सवर्त्त सर्वपति
 दि आ मर्च नू मा द्वा ऊग ल्प नं वृद्ध वी द्वा द ध्य मनः प्रिया थयन् ॥ **ह ना थ ह गु वृद्धः**
 धर्म संघ या के कि पिं स वल डी ने पा प स क लं गी र्त्त रु ल नू मा द ना या ना सं सा म या प न्यं द
 व स ग या कि मि ह्यं ग था गत या गु क लाय मन रु ला ॥ ॥ चक्र वत्स सत्स कंद ला ना
 थ व द स्य म चक्र द व ग या ल लं आ चा र्या पि वि क र्म्म च ॥ **थ चक्र वि ह्य वि या डी ग ल्व**
 ६ नं ह गु वृ द व दे वी या ग ल्व ह नं आ चा र्या या ग ल्व कि मि ग वि ह्य वि ज्ञा हं ॥ ॥ स म यं

सर्ववृक्षानां समग्रं गुच्छं मूलं मंत्राचार्यस्याम्यहं नार्थं सर्वसत्त्वार्थकारवनात् ॥ तन्नावाधि
विष्णोः सादनी ॥ **हनाथ हगुत्र** तत्त्वसकलं वृक्षया समग्रं गुच्छं या उरु मगु हने न्नाचार्यया
नागु समस्तं धानिया कारवनाय कं वाधि सत्त्वपी निविष्णु उरु मगु ॥ ॥ समं वा हवं नु
मां सर्ववृक्षवाधिसत्त्वान्नृहं ममूकं नामा र्मा वं लामूपा दाय जावदा वाधिमलुत्तनिष
लुना ॥ **किं निस्यं** त्रव मनयाना सकलं वृक्षवाधिसत्त्वया किमिना मनयधिन वं लाम ॥ ॥ धर्म
लाय याग ग्वला गो धातसा वाधिमलुत्तखलु मरुगलं ॥ ॥ उत्सादयामिष वमं वाधि
विष्णु मनुर्वयथा विधनाथानां सर्वोक्तानि श्रयं ॥ **थली** उत्साहिया यगु लिं
युक्ते गुलिं वाधिविष्णु मातुल्य मद्र गथा श्रयगुलिं गथा गगनां निश्रयं महायाने लार्ग ॥
॥ ॥ सत्त्वार्थं च क्रियाभितप्रतिगृह्णाम्यहं हृदं वृक्षधर्मसंघं च प्रिनलागमनूत

नं. अथाप्यत गृहिष्यामि कृष्णं लं धर्मसंयुतं ॥ **प्राप्तिं यागं** यायगुमि तं किमिहं कार
 रुली. कृष्ण धर्मसंघप्रित्तगापुत्र मद्रुगुडिमि स्या लाय रुली ॥ **सम्बन्धवृक्ष**
 गङ्गा वज्र घट्टाक मूत्राक प्रणिगृह्णामि तत्त्वमन्त्राकार्यं गृहिष्यामि ॥ **संभववृक्ष**
यागं उत्पत्तिवज्र घट्ट मूत्राहिष्यक कारयथुगुत्त्वमन्त्राकार्यं हिष्यक कारय ॥
 महावज्रकृत्वा च यतुः वतु दानप्रदायामि तत्त्वमन्त्राकार्यं हिष्यक कारय ॥
 मयत्तमना जम ॥ **नडाध्वं** कृतसंयगादान विषयं गृह्णामि तत्त्वमन्त्राकार्यं हिष्यक कारय ॥
 कृतसंयगागसंनत्त्वमन्त्राकार्यं हिष्यक कारय ॥ **सधर्मप्रणिगृह्णामि** वायगुका प्रिया निर्यमहाय
 न कृतसंयगागसंनत्त्वमन्त्राकार्यं हिष्यक कारय ॥ **सिंघुधर्मकार्य** यिनंदनं स्वगाहं दनं चानं गडाध्वं
 कृतसंयगागसंनत्त्वमन्त्राकार्यं हिष्यक कारय ॥ **संभवसर्वसंयगागसंनत्त्वमन्त्राकार्यं**

[illegible]

ॐ सितसिपंकृतपद्मचक्रापरिसर्यसूर्यचंद्रकानिवाहकपू. वक्र. शुक्रानि हूं आ ४ हूं ६
 त्रैलोक्यानि चिन्तया ॥ ॥ आ ॥ वा ॥ तिलोङ्क ॥ म्प खलषने हायक स्वां च्छू के ॥ ॐ आः
 हूं ॥ धननूग. कथु. कपा चतननिक ॥ स्वानैच्छू के ॥ ह ३ नै ४ धूं ४ मगा के नै ॥ ॥
 धनप्रक दामनमुलवाया ॥ धनसिष्यपिं दीया ॥ नुकातशुक्रतया ॥ स्वस्तिकसुतस्यं मिषापि
 यक. दमकावडुमंदा के जंगु १२ हाडा ॥ नकु ॥ ॐ नड हा स हूं ॥ त्रैलोक्यानि चिन्तया ॥
 नो वाया ॥ मकु ॥ ॐ डी विशुद्ध धर्म सचिदापानि वास वि म्प च्छया निर्विकल्पान्नपनय हूं ॥
 धनप्रक दामनमुलदधनिया च के ॥ त्रैलोक्यानि चिन्तया ॥ मकुलसुतस्य के ॥ दै २ ददना च्छा
 य के ॥ झाई का कूदुष्टि मिषया के दाया. स्वध्या ध्याय गपिष्टि. य. स्वधु नो हामननुन
 नकाविय ॥ ॐ दूध मे मित्र न कू २ सचिन्तया हा ॥ धमकु न ना हा मि सचिन्तया च्छाया ॥ ध ३ २

यससंकाश ॥ ॥ एक ॥ नूनककल्पकीति ॥ यत्कृतं पापकं पूनागत्सर्वक
यंयानि दृष्टा सुबुलमिदं सं उक्तनादुर्जनि नृणां सर्वदृष्टव्यं सं रवा ॥ ॥ नूनक कल्प ॥
कारिकनकायाया तु लिपापयाना उलिपापरुग ॥ ॥ युगुममुलसं यां किपिनवकस
डानं मून्वात ॥ ॥ नृणां च यवलेन कृत्स्निं वृद्धि नूननिर्मिता. अथ यथा शिवगु वा
वद्धलाता महा मति ॥ ॥ हनु वृद्ध सपास या प्रसादन समस्तं दृष्टव्यं ॥ ॥ गव वले निह्यं
युगुच यो धनतया ॥ ॥ अवले निह्यं वृद्धि वधयकृत ॥ ॥ आशु धर्मी गुण पुत्र्य मद्रुप दत्ता
न ॥ ॥ आशु धर्मी वृद्ध वरुणी ॥ ॥ यनयूर्यं किने सर्वं सपुत्रं विरुहा सन. सर्वं पविगृहि
ताश्च. जायमानो महात्मनि. ननयूर्यं महायाने. सूजागदिर विषय ॥ ॥ गुगुलि संदृष्टिं
नयगता या प्रवृत्त सधर्मां गुग्गुलमसृष्ट पिगृह्णाति मषूगदृष्टिं म्वा नाया सारुल्या

कृतसूक्तानि कृतौ ॥ ॥ एकमार्गविश्रामान्महायाननहोदयः यनययंगमिष्यन्
 रुविष्यधनथागग ॥ युगुमार्गस्थगुगुयनउत्तगुगुयननडाधंउत्तुलिचुपिं
 अनिताः उत्तुलिनेष्टपिंनथागगइयदय ॥ ॥ मूलकार्यदकाडा ॥ धनकृ
 हि विद्या ॥ कपातसः वैशतन ॥ कथुसः नृमिगात ॥ नृगससः नृकाया ॥ दूरवस्व
 पुरुकावैखलुमीहामनुनगाउनयाकावकाविय ॥ सिषल्यप्रदने ॥ उंभीखाहा ॥
 उंवउतिद्वर्व ॥ खलुमीहामनुकने ॥ सिर्कल्य ॥ वऊवका ॥ सिषपिंष्टकाया ॥ मनु
 लविस्कर्नयाय ॥ ॥ धनदहाडाडाडामनुलप्रवस ॥ पिथादिपूजा ॥ किनने ॥
 गताकृ ॥ कृमापन ॥ सग्वंतय ॥ वगपूजादकृना ॥ दगुलिसनय ॥ आदृसगिगद
 प्रमात ॥ समयचक्र ॥ धूमांगमविमूनाल ॥ नृचिवातर्नदृवियाः उवर्नकृतसा आगंवा

पूजा माला ॥ अथिवासन अस्ति द नैरु कुरुत सा माला कुरुती ॥

॥ इति अथिवासन

न अथिवासन विधिः ॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥

ॐ नमः श्री महादेवाय नमः ॥

॥ अथिवासन पूजा ॥ नमः

कावगीत उर्गि माला ॥ अथिवासन पूजा ॥ विधि पूजा ॥ दत्त पूजा ॥ मलुत पूजा

॥ माह निराधन ॥ पिथादि पूजा ॥ स्वां गने ॥ माह निवृत्ति ॥ याम ॥ कोष्ठा ग ॥ सावदी

ग ॥ कर्क प्रताका पूजा धून का ॥ चक्र अथिवासन पूजा ॥ मलुत पूर्व सया

य ॥ अथिवासन पूजा ॥

॥ अथिवासन पूजा ॥

सुख प्रद पत्र म सुखा गम सिद्धि ॥ अथिवासन पूजा ॥

खन ॥ पश्चिम स वाचा पूर्व या स्वा खन ॥ ॐ वजा घाट म सम य पूर्व सय ॥

पुद्गलं रवन् ॥ हृदि नैवाकाशं स्वानमात्मना च यथाहातया ॥ ३ ॥ यत्र न सूर्या अथ सूर्यत्रि
 मविता अनेमा मिते मग्री नमानिक ४ हूँ वै हा ४ ही ४ प्रणित क सूर्या अलिनाथ हा ॥ ॥
 नृणां मूढाकाशां स्वानं धर्मं च ॥ ॐ वज्रं नृणां ४ ॥ हूँ नमस्तु तस्य चाकडय ॥ आकाश
 त्यादचिह्नं ४ दनादिनिधनं ॥ महावज्रं समयस्य ४ अक्षाणां वज्रं प्रसिद्धं ॥ स
 र्वगं मा महासिद्धि ४ मा हस्तं यदि दत्तं ४ ॥ सर्वं च यथा भागा ४ सिद्धिं भवमा कुर्या ४ ॥
 निदीप्य ४ अथर्वगं ४ सर्वयोगं नृणां ४ ॥ गत्वेन सिद्धिं भवगवन् ४ महाभारतं महा
 वज्रं ४ अक्षाणां च ४ अक्षं च ४ ॥ आदिभूतिं स्यात् ४ ॥ समन्तरं च ४ वीधिं ४
 सत्यं प्रसिद्धं ॥ सर्वगं मा महासिद्धि ४ ॥ मा हस्तं यदि दत्तं ४ सिद्धिं वज्रं महाकलात् ॥ व
 ज्रं गत्वेन नमः ॥ सर्वस्य नमो वापि ४ सर्वस्य हृदि स्थितं ॥ सर्वस्य पिता चैव ४ का

माय सुमयापिता ॥ नून सगं न संज्ञां ४ प्र ह्यपाया सममुत्तं ॥ न न सति न म नार्थः ॥
कामार्थं पवि प्रवर्तत ॥ ॥ मनुसं क सं क क म ॥ प्र नि वि न्य द्या दि ॥ म न क न ॥
न य गा न त्य नि र्था ना ॥ न नि स स न म मु लं ॥ प्र नि वि न्य रू न ति ष्या ॥ स च प र्थ त्व क ल्य ना
॥ य न र वा ड ल हि च क ॥ य न पि र अ या अ गु न मा गान ॥ गु न म मु ल व ति पा न १ वि र ॥ मि
व्य पिं गु न म मु ल द न क ॥ वि स रू न ॥ गा य ता व ना ॥ न न ति व्य वे यो व न रू पा ना ल ति न
सा र्व क र्मि के क व म ड ला ति ष्य क ॥ सं ष ल र व न हा य ॥ ह न क ल गि ल रू व ड प म च व
सू र्य च द्वा प वि रू रू ह का व न क ॥ ४ सू र्य का व न मि प्र ता थ व म वि वे हं ॥ ॥ य वा
य ॥ नि ला ऊ न ॥ व ड ॥ गा वा ॥ म न रू ॥ प क ग य वि य ॥ म न ॥ ॐ स र्व न भ ग ना नू न व वा ॥
ध्म सं का व डू जा म घ स मू द रू व न स म य हं ॥ ॐ व ड व रू हं ॥ य न गु न र्क म र्च यो य ॥

ले ॥ गाय ॥ अरु ॥ सादर ॥ हीयु दादा सां न ह्यं नृधियाय ॥ हगवन् आरु चक्र सन्वत ॥
 गाय कस्य च गुथि विषय क न लाय निमिषार्थ गुनी च वन कम लाय नृधिय प्रमिष्ट सादा ॥
 यन वल मनु स वाय क धन का ज दं २ द रु लो ला सं गुन्या न दो ह ल प ॥ वाक ॥ वगु वल म
 यं यादि ॥ यन गुन न द व प्र मूखं उ पा ध्या च वा पा क लां गुन मिषा प निरु स ग्व ड ग्व ड
 व ता व द ग य ॥ ध्य थं उ पा ध्या नं ग य ग्व २ वि य क्र मिं मा ग्रा न सि क्क द य क ॥ उं व ड उ वि
 ख हूं ॥ मा द स अरु ड म ल ग य ॥ उं व ड व ध न मा य हूं ॥ अरु प ड न वि य ॥ उं ख लु की
 हूं ॥ ह ल क ॥ उं आ र वं वि नी हूं ॥ ग्व च जी न क ला य जी ड ल प द ग य न ॥ द न ग म ह न
 हं वा दा गुन न प य थ ॥ क स रं ला स र ग पि य ॥ ह मि ॥ ह पिं स र हिल न ड या ख ड ला ॥ सि ध
 न धाय क ॥ स र ह म हं म ल स र धी ती ॥ ग ड ल स र व न डि मिं ड या ॥ मा द स व ड धि य ॥ उं

सर्वयोगविदुर्मस्यादयामि ॥ न गतुं सकर्तव्यं ॥ ॐ ह्रस्वगणसमयत्वं हा ॥ सिद्धवज्रय
धमसूर्यं ॥ नृत्तं सर्वगणमधिष्ठितां हविष्यामि ॥ ह सि व्य पि न्ना ॥ अ ॥ इ पिं सक
स्यं धनं नमस्तु न गथागनन अधिष्ठानया कइ पाय ॥ ॥ न च त्वं मयं सर्वगण
गाय नमस्तु हस्यामस्तु प्रविष्टाय वक्तव्यं ॥ ॥ अ ॥ इ मि सं गथागनया गुक् मस्तु स
दस्ता अया गुख स्या गं क्ता य म द ॥ ॥ न च स्रक्ष दा न वं मि र्क्ष ॥ धन उ व न्ना द
दिं विया न नी. कने म द. कं साम् र्क्ष र्क्ष म कं सा ॥ पिं न क्ता इ य ॥ ॥ ॐ क्ता च
व हं र्क्ष ॥ ॐ खलु वी हं ॥ ॐ न्ना खं वि वी हं ॥ ग म क्ता अ का य ॥ धन मस्तु उ य कं ॥ गी
न प्रविस्तु. प न पति दि के. र्क्ष नृत्त का व य न ॥ क्ता अ सि नस्तु पृष्ठ दा व स ॥ ॥
वा ग रं ना वि ॥ प्रविस्तु ग्ना दि ॥ अ हि व त्ता ग्ना दि ॥ म ध्या ॥ ॐ सर्वगणग क्ता च व न

पूजाप्रसूनायास्तानंनिर्यागयामि॥समस्तंनथागगकृष्णवचपूजायाययाम
 धडासविद्रदाहवपा॥सर्वनथागगवडसवधितिवर्मा॥समस्तंनथागगकृष्णवच
 वडसस्तंनृधिविधानयाकरूपाय॥ १ ॥सर्वनथागगपूजनयादि॥पू॥सर्वव
 कृष्णवचपूजाप्रसूनायास्तानंनिर्यागयामि॥समस्तंनथागगवचवडकृष्णवचपूजायायया
 गकिमिसविद्रदाहवपा॥सर्वनथागगवचववेवाचनधितिवर्मा॥समस्तंनथाग
 गवचववेवाचनंनृधिविधानयाकरूपाय॥ २ ॥कृष्णमडकयादि॥द॥सर्वनथागग
 पीतावचपूजाहिष्कायास्तानंनिर्यागयामि॥सर्वनथागगपीतावचपूजायायनृशि
 धकसाययागकिमिसविद्रदाहवपा॥ॐसर्वनथागगपीतावचवडकृष्णवचवलाहिधितिवर्मा॥वि
 तावचवचलसंस्तवंनृधिविधानयाकरूपाय॥ ३ ॥नमामि२प्रचक्रयादि॥प॥ॐसर्व

तथा गतवकाचनपूजाप्रवर्तनायात्मानं निर्याम्यामि॥ **समस्तं वकाचन** तथा गतया
कर्मसिद्धिमिदं सविदुदाहृतम्॥ ॐ सर्वतथा गतवकाचनवदकर्मप्रवर्तयमी॥ **स**
मस्तं वकाचन नमिता रं धर्मकर्मवर्तनययशपाय॥ ५ ॥ **ब्रह्मवर्तु** त्यादि॥ ३०
न ॥ ॐ सर्वतथा गतश्चानाचनपूजाकर्मनश्चाननिर्याम्यामि॥ **समस्तं चानाचन**
तथा गतपूजाकर्मयायया न किमिदं सविदुदाहृतम्॥ ॐ सर्वतथा गतश्चानाचनवदकर्म
कर्मप्रवर्तयमी॥ **समस्तं चानाचन** नमिता रं धर्मकर्मयायशपाय॥ ६ ॥ **पूर्वकाचन**
स ॥ ॐ गुर्वचनप्रवर्तनायात्मानं निर्याम्यामि॥ **गुर्वचन** तसि उभयायया न किमिदं
मिदं हृतम्॥ ॐ सर्वसत्त्वविद्यानायात्मानं निर्याम्यामि॥ **समस्तं सत्त्वानिवका** याय
याकाचनार्थन किमिदं सविदुदाहृतम्॥ **वागकाय** ॥ ७ ॥ **तिष्ठप्रवर्तन** ॥ **धनरव**

[illegible]

[illegible]

कुंवा मांगविषं तपत्रिहोत्रतकात्रकिर्यां कृत्वा नवकपगनं स्यात् ॥ **दिनधायामः**
योगसाधनसन्दिपकाथं विषनदहलपकासियूज. नवकसकटिडान्य ॥ ॥ **२३**
वदत् ॥ **धुमिसमयादानविधिः ॥** ॥ **धनमिष्यधिधिंमधिकंग ॥** ॥ **श्रीवेभलुवधः ॥**
नगः ॥ **नविहोवउयागसूदृष्टं** मावयातदनूनिष्यं कटिगि शुन्यगानं गनं श्रीकान
कामिगारुपनिष्याद्यस ॥ **सर्वगधगगा** ॥ **अधितिष्वमावउसत्वमे** श्रीवेसविगिवाचयि
॥ **४८** ॥ **हृदि** नैजागवजो कचगुकानपित ॥ **प्रियिमलुतसूर्यनीलदूकात्रमित्रसिर्व**
हवशुक्रवर्कः ॥ **नकवसाकवागूनमलुलापिचिचयं** ॥ **५५** ॥ **हकात्रकहृयकात्रकच**
तपागकाद्वयंकचं न्वातुनियानिचमलुतचयं नक श्रीकात्रेविताय ॥ **सुहृदीउवद**
सिहचि ॥ **कायवाकवजानानिययथा** कर्मगत्वराय ॥ **६४** ॥ **श्री४** ॥ **हकात्र** ॥ **२३**

नविशपादयायधस्तान्वायमभुल्लोद्धिधिर्गं ॥ वंप्रवितर्गं नंदंकात्रनद्रिकानेस्ते
 स्तिनत्तननेमभुल्लोद्धिधिर्गं ॥ अंकात्रैस्तदिप्यमानं ॥ सिषमिकात्रसिसमूहं
 पादयुक्तीवप्रविष्टः ॥ हूं का वादि बसिहिश्च पुर्यामाने समस्त गीर्वध्यमा
 ॥ ॥ गालझाय ॥ धूप उमन्नु तला वादमद् ॥ ॥ आवेशमन्त्र ॥ ॐ आवेशये
 क्षात्यवन्नन्नचायय २ हूं हूं ४ आम् ४ ध्व मन्त्र ध्वा १०६ ॥ धन विरुत्वं अलिटपद
 यानाथमस्तन्नन्नचायय १ नडा सद्यर्न आवेशयाय ॥ उमन्नु धूप दह कादं ॥ गी
 र्ननामा हूं ॥ ॥ ॐ तिष्ठ महाक्रा टावे सय हूं था हे नू कारा विच्छ हं विभाजाराधी
 नहेत्याहा ॥ ध्व मन्त्र न आवेशसिद्धिरुयुता ॥ ॥ विशर्जन ॥ ॐ कृणाव सर्वसत्या
 थसिद्धिनत्वायथावद्भविविषय ॐ आ हूं ४ हूं हूं ४ आ ॥ ॐ भूर्भुवि ॥ ॐ गि आवेशवि

धि॥ **॥** धनमिष्यति मगकं नमूनाचार्यन ॥ आग १ पीग २ वक ३ क कू ४ रुवि
ग ५ वरा सो ॥ **॥** आनि १ पूदि २ व ३ अ ३ अरि ४ वा ५ मा ६ न ७ सि ८ नि ९ क १० या ॥ **॥** धपके
वल्क होचकं रुस्यकने ॥ **॥** मिष्य मनुते दूरक ॥ **॥** **अथ ॥** ॥ **॥** एयं मनुते सम्यक मया
मिष्यपविष्यसि १४ यथा पूर्वान् गथास्तानु देवतानां कृताक्रम १४ यादक सिद्धि र्विग १४
स्य १४ प्रयत्निं १४ हां कने यादक पुन्या नूराव १४ गा १४ ग्यां सु मनुते ॥ **॥** **धनपूषा**
नगयक ॥ ३६ ॥ **॥** वा दोलां रुहा विरो ॥ **॥** प्रां ॥ **॥** हां थकी प्रयकन ॥ **॥** इति वद मरुव १४ अ १४
तामरुवददयं भि विनि व सर्व सिद्धि मप्रयदु हं हुरुह रु १४ आ १४ र्व विवद प्रणि १४
रु क सुमा १४ लिना थ रु १४ ॥ **॥** आहं वक वउ पूर्वा प्रणि रु हं ॥ **॥** **लानगयक ॥** मनुते
स ॥ **॥** अर्ध पनकी कायक ॥ **॥** **॥** तामिष्य हवन् अवि परि लता न वदने प्रदयं

ॐ ह्रीं स काला ॐ ह्रीं विहावा ॥ ॐ वेङ्कटसुखः स्वयं गच्छ चक्र नृचाटनगल्पनः उल्हास
दयति वजा ॥ ॐ वेङ्कटसुखः स्वयं गच्छ चक्र नृचाटनगल्पनः ॥ ॐ वेङ्कटसुखः स्वयं गच्छ चक्र नृचाटनगल्पनः ॥ ॐ वेङ्कटसुखः स्वयं गच्छ चक्र नृचाटनगल्पनः ॥
॥ **धनमिष्ट** नमस्तुते पूजाया के दे २ दक्षिणाया के किर्तने ॥ ॥ **धनम**
स्तुते स्वकने ॥ ॥ **धनम** नमस्तुते स्वानरु कया स्वकने ॥ ॥ **मिष्ट** सुखि प्रदा
पूष्यं पतनिक दामसु मृदा सिद्धि ॥ **मोद** स वस पात स स्वानरु कया स्वकने ॥ ॥ **मोद** स वस पात स स्वानरु कया स्वकने ॥ ॥ **मोद** स वस पात स स्वानरु कया स्वकने ॥
जा सिद्धि ॥ ॥ **उद्ग** मां ग उद्ग म सिद्धि ॥ **नृग** त स रु ग सा उद्ग म सिद्धि लाय ॥ ॥ **मध्या**
मां ग म ध्या मा ॥ **वसं** धि रु ग सा म ध्या म सिद्धि ॥ ॥ **मध्या** मां ग म ध्या मा ॥ **वसं** धि रु ग सा म ध्या म सिद्धि ॥ ॥ **मध्या** मां ग म ध्या मा ॥ **वसं** धि रु ग सा म ध्या म सिद्धि ॥
रु ग सा रति रु क सिद्धि ॥ ॥ **विम्ब** स्या निद्र वति ला त्सि मे कि प्र सिद्धि ॥ **वाक्य** दे
वनद्रु रु ग सा रति रु क सिद्धि ॥ ॥ **दे** वानां किय स्व स्थाने कादा दि विष्ट द गी ह्रीं

[illegible]

धायानाडा ॥ ॥ खंखवृद्धकलंजागीमूद्रानुनेत्रचिह्निका ॥ **आडावृद्धिं वृद्धकलस**
जागदलमनुमूद्रानेत्रचिह्नानयार्ग ॥ ॥ संपदासर्वसिद्धिर्ना ॥ **संपदिसकलसि**
द्धियावस्तुककल ॥ ॥ समयाश्रयाहविष्यासि ॥ **नखपदसायू** ॥ ॥ वज्रपद्माग्र
संसिर्ग ॥ **वज्रअपद्मा** मनाहर्षनिवीन ॥ ॥ मनुष्यानाधनंकरू ॥ **मनु** आनाध
नायाडा ॥ ॥ **धनसिष्यानधायक** ॥ वज्रमनुलंमहामनुलंप्रविक्षोह ॥ **वज्रम**
नुलंमहानर्धमहामनुलंकिप्रिंदूहाडायधूनी ॥ ॥ **यागमनुलंमहामनुलंदभि**
नीह ॥ **याग** मनुलंमहानर्धमहामनुलंस्वयधूनी ॥ ॥ **गुक्कमनुलंमहामनुलंदि**
किनीह ॥ **हेनाथ** हेगुगुक्कमनुलंमहानर्धगुक्कमनुलंयादिकाकायधूनी ॥
॥ **हा४हा४हा४** ॐ नमोऽस्तुते ॥ **हा४हा४हा४** किमिमहानर्धराग ॥ ॥

धनस्त्रीविय॥ गुननदं २४ कृत्वा काय॥ मन्त्र॥ ॐ पुतिगृहं लं निर्मवत्समहाव
 सति॥ ॐ तिनाला रिष्यक विधि॥ ॥ धनसिष्यया पानरु गुतिस्त्रि विद्य॥
 आसं यदि गुनं अदिं लाय॥ मिष्यन्ने॥ गुनमनु लदनकं॥ ॥ अथ वना॥ वा
 द्वि वडेन न्यादि॥ ॥ हनाथ॥ हं गुनं वा द्वि वडेन गगनं गथा अरिष्यक विद्य विज्ञात॥ अ
 र्थं किं पिं वका याय याग॥ ख वडे अदिं विद्या र्थं किं नित अरिष्यक विद्य विज्ञा कर्त॥
 ॥ ॥ लावना॥ नग ४ वजा लातिषि ता दू द वक म वा प वि च उ स्रय उ प वि स्र मि
 र्थं स प लीकं वज्र व रूपं वि लावा॥ ॥ आ॥ वा॥ निला॥ ताता॥ नगदं॥ ॥ मि
 र्था वाच॥ वृक्षा नामा रिष्यक नु जगता नाय वार्जिनी गुला क नीय था द रु न था द द व
 म स्यादि॥ ॥ हनाथ॥ हं गुनं गथा वृक्ष पिं न अरिष्यक विद्य॥ अर्थं संसा उ वा न या य याग

उनाक २ तथ गगन गथ विसे विज्ञान नृथं विस्व विज्ञा दूने ॥ ॥ **थन कृष्णरुद्र**
वक ग ॥ प्रह्लादा यया मा उ नाप साक ग ॥ **राव ना** ॥ हे गथा गगे ४ प्रह्लादमा पने महा
नाग नृ विह य वे वावन द्वा वे लान निर्वा श्व वड मा र्ग न निर्ग नृ ग दु वे श वे प न मृ धन
प्र वे सि मा आ र्ण र्ग टि नि शु न्य ना नं न र्ग दू व ड जा ग दि ह ड ४ स प्र ह्ला द्वा र्ग श्व रा व सम्
न र्ग प ह्ला न स र्वा रि न म रि षिं अ पु न र्ग डे म र्वा दि मृ दि रि ४ प न्ना मि ४ ५ ग ग न मा
प र्ण र्गि गे वा र्वा दि वि श्वा मि गे द्वा य च ड प्र ना का व लु वा दि न गी न नृ ग प र्ण र्ग कृ मा
दि र्वा दि रि ४ क र्वा कि स र्वा वा वे र्जि न वा चि चिं ता मृ ग प र्ण र्ग आ ग क र्वा ले र्ग मि र्ण्य प
नानि ४ ५ ग म रि षिं अ मा नं या गि ती ग न गी य मा नं म र्ग ल गी र्ग ॥ **नृ रि ष क वि य**
निवा ला हा नि स रु र्ण मि र्वा पि य ॥ य र्म म र्ग र्ग दि ४ ॥ ले मि ध न ४ का र्क न प र्वा रा

त्रि लोक नाथ हिमलपुदिनं ब्रह्मा वि ब्रह्मा ब्रह्म पप्रनर्गं गत्संगलं रवन्नुभानि कवगवाद्यं
 ॥ गनापुदि ४ प्रवत्रस्य कम्पाख्यातस्त्रिलोकनत्रदवपुत्र ४ धर्मोद्गम ४ अन्तिकेनेप्र
 जानीत्संगलं रवन्नुभानि कवगवाद्यं ॥ सधर्मयूकश्च निर्मगलाद्यसंघानिदेवास्तु
 नदादिनिया ४ यः धानिवास्तुप्रवत्रागलानीत्संगलं रवन्नुभानि कवगवाद्यं ॥ ४० ॥
 मङ्गलमथ ॥ ॥ वाधिवर्जन्यादि ॥ माशानपन्नतांजनप्रहीपाययाभादसंग
 ॥ ॥ रावना ॥ नतः ४ ४ ४ ४ का वाधिवर्जनं जानाकोर्यं धृष्टिजनम्या
 नीयज्ञानसत्त्वकी लगदकातंप्रय ॥ कल्यणिष्यनलाहागिसदयकमानक ॥ नकु
 ॥ ॐ महासुप्रवजसत्तातिष्यकेन त्वामहिषिच्छानि सर्वतथागगधिपतिर्वनदृष्ट्यः
 मेरुव ॥ ॥ सखलरवनहाय अलगहलही ॥ ॐ आवेजादेकाहिषिच्छं सुवगल्यमहं

॥ अतिथ्यकं महावर्जं ध्यातुकं नमस्कृतं दद्यात्तु सर्वव्याधीनां प्रियुक्ता लयसं
हवर्तं ॥ **अतिथ्यकं** वरुणागारुत्यरुयाचीं शुभं मध्यमागतं नमस्कृतं वरुणागारुत्यरुयाचीं
मयागुः समस्तं तथा गगनाः स्वगाते दनं उच्यते रुयाचीं शुभं मध्यमागतं नमस्कृतं वरुणागारुत्यरुयाचीं
पूजा ॥ **ॐ नमो उच्यते अतिथ्यकं** ॥ ॥ आदर्शनं हानं अविद्यामेव कातं अक्षायां
हार्दं नयागनाधनाय श्री नारिथ्यकं ॥ **किं न कं** ॥ ॥ **अध्वर्युना** ॥ वाधि
वर्जनं न्यादि ॥ **हनु** वाधि वर्जं वरुणागारुत्यरुयाचीं विततं अर्थं किमिदं वरुणागारुत्यरुयाचीं
न स्ववर्जं आदिं वियाथां मकरं विसं विज्यादूने ॥ ॥ **रावना** ॥ निर्व्यं नानलसं हव
नृपिर्न हानं सत्वं मेकी तर्गं नरुत्तं तथा गगनं देवीति ४ कृते वरिषि वं मानं नृपवकादि
ति ४ नृपीति र्यमानं मन्त्रलगीतिकं रावपगुवजाधिपतिनाम संकेष्यं ध्ववं गगनक

वस्त्रादिद्यटि तं जलसंहरवर्जं तत्संसारं हानसत्त्वस्य रूपं. पक्वमथागतं मध्याह्निमणि
व्यवेकवर्त्तिनमवध्यात्वा ॥ मकूटं तस्य सितमाममध्यात्तलगतपाश्चहिदयमूर्द्धि
पृष्ठवयथाक्रमं ॥ **मिसाङ्ककस्यागसिन्धुद्याय ॥ मनु ॥** उं रगवति त्रैविभरनेत्या
हृदयकंदंरुद् ॥ **धनमकूटं वयकं ॥** उं दं ग सर्वव्यानीप्रिधुर्कनमस्तु नैयष्माकं
पूजनाथमयमकूटपक्वमोहरवत् ॥ **धनमकूटं** समस्तं तथागतं नृप्रिहृवनननम
स्मानयानागयागुत्राङ्गिप्रिपूजायाकं याग. धनमकूटपूयं डीपक्वकूलसुआग
रुते ॥ **द्वियकं ॥** उं वज्रधाम्नी नृप्रिपिंक्वकं ॥ **मध्याग ॥** उं सत्त्ववजी नृप्रिपिंक्वकं ॥
पूष ॥ नलेवजी नृप्रिपिंक्वकं ॥ **दक्षिं ॥** धर्मवजी नृप्रिपिंक्वकं ॥ **पश्चिं ॥** केर्कवजी नृ
प्रिपिंक्वकं ॥ **उग्र ॥** सर्ववृद्धवृजामनिमहाहानमकूटपूगिन्धुस्याहा ॥ **संखलखनहाय**

[illegible]

रिगत्रूपं हान स त्वहिर्नं कृत्वा वृज चा मिग गाल्मकं विचि-
 न् ॥ **॥ धनवड विद्या ॥** नृशारिषिक स्वमसि वृद्ध वडे नामा रिषिक ००० द न सव
 वृद्ध लंगु क वड ससिद्ध यत् ॥ **॥ १४ वड ॥** या नृशिष्य के लाका ०० पिंन था गन या पद ला गा
 धर्यिं गु नृशिष्य के समस्त वृद्ध या रा वड या को गु वड का श रिं गु सिद्धि ला गा ॥
 शिष्या आनू ग के धु क पा न धिरा कं विद्या ॥ **॥ सर्व स एव न हा य ॥** उ वडा रिषिं व स व न स्य
 मरु ॥ **॥ सर्व स ह ॥** उ व व क ॥ १४ का व क ल स र वा म हा क व प द या फ न स ह
 न व स हि न ॥ **॥ समस्त ॥** सियु ट ना व क का व क ल उ ल पि र ड न र्थ नृ क प द ला ग म डि
 अ सिय ॥ **॥** हि न व ड रिष्य क प्र ग र व क ल हान नृ रि स ॥ **॥** उत्प श्व नाना री श
 हान या श्व ना ध ना वा ॥ **॥ १५ वि व डा रिष्य क ॥** **॥ नृ ध्य र व ना ॥** वा धि व ड न वा

[illegible]

जिअ. भोकारकार्यमडिअ. हानउदयइगु लायथं. धम्मउदयइअधम्मदियाथं
संन्या॥ **ॐ गिघल्लारि व्याक॥** **॥ अथ वना॥** दोचिक्कं न्यादि॥ **॥ हं ना**
॥ हं गुग्गुलीवज्जनवद्ध पृथुपिं तगय्यवित्तं अर्थं किमिन्नकायायया तस्ववज्ज
यागवियाथं नामातिखेक किमिन्नविषयविज्जाकूने॥ **॥ तावना॥** जिघांसदनु
उंकायात्पन्नवज्जसंहरं वेगीवनवृपं हानसत्तातिर्न विराय॥ **॥ सिध्यं** हानसत्ताति
नमित्तसिक्कं च वल्लभा॥ **॥ निष्यया** कपालसद्यच्छनपियकं॥ **॥ भंखल** सर्वसंय
॥ अरिषकं महावज्जणादि॥ **॥ धनवज्ज** जादं नाम द्यय॥ **॥ काता** पचिदं वंन
नगित्तकं॥ **॥ उं वज्ज** सत्तामहिषिक्कं मिवज्ज नामातिषकं ४८ हं आ नूक्कवज्ज नाम ग
आगागलं उरुवज्ज॥ **॥ पक्क** वल्लं सगुगुखनउगुक्कलखं गुनाम द्यय मग कं ना थास

स्वगुणानामस्तु ॥ ॥ वे श्रीचनगाय ॥ ॐ काववज ॥ ॥ अश्वतवज ॥ ॥ गथागव
ज ॥ मायावज ॥ वृक्षवज ॥ नृपवज ॥ कायवज ॥ ॥ धर्मे ॥ ॥ वज्रसत्त्वस्त्रि
ॐ ॥ पत्रमादिवज ॥ नूनपद्मवज ॥ सूत्रवज ॥ समवसवज ॥ विजयवज ॥ नृमल
वज ॥ सुखवज ॥ महासुखवज ॥ नृनंगवज ॥ हानवज ॥ सुहृदवज ॥ ॥ धर्मे वज्रस
व्यानाम ॥ ॥ ॥ श्रीकाश्याह ॥ ॥ हासवज ॥ विज्ञासवज ॥ वगिवज ॥ सीता
वज ॥ ललितवज ॥ स्वयंदवज ॥ वैभववज ॥ हृदयवज ॥ कवनावज ॥ चिद्रवज ॥
हंकावज ॥ ॥ धर्मे श्रीकाश्यानाम ॥ ॥ ॥ बलसंहारका ॥ ॥ बलवज ॥ विना
मनिवज ॥ खवज ॥ गगनवज ॥ गंजावज ॥ मागधवज ॥ हासकवज ॥ मानव
ज ॥ ॥ धर्मे बलसंहारया नाम ॥ ॥ ॥ श्रीमिगाहका ॥ ॥ ॥ वागवज ॥ नृवसाकिग

वज्र॥ धर्मवज्र॥ पद्मवज्र॥ वज्रकलवज्र॥ पद्मकलवज्र॥ सुगतकलवज्र॥ कनक
 कलवज्र॥ पद्ममाद्यवज्र॥ सुवर्गानन्दवज्र॥ भूमिवज्र॥ वाक्वज्र॥ **॥ धर्मभूमिनाम**
हयानाम॥ **॥ भूमाद्यसिद्धिः ॐ ॥** भूमाद्यवज्र॥ पद्ममाद्यवज्र॥ समग्रवज्र
 ॥ पात्रमितावज्र॥ कर्मवज्र॥ भूनिवज्र॥ शृंगवज्र॥ **ॐ ॥ भूमाद्यवज्र॥** **॥ धर्मभूमाद्यसिद्धिः**
द्वियानाम॥ **॥ धर्मनाममिदं नयागच्छ॥** **॥ वैवीचनयात्रिणां य॥**
 वज्रदाकिनी॥ वज्रमेवी॥ वज्रयाम्या॥ वज्रवीचिना॥ भद्रवती॥ **॥ वज्रसत्त्व**
यात्रिभिः ॐ ॥ वज्रवैष्ण॥ वज्रविद्यासिनी॥ वज्रमदा॥ वज्रकोकना॥ वज्रजानना॥ वज्रपद्म
 नाका॥ वज्रमाया॥ वज्रदया॥ **॥ भूको हययात्रिहाय॥** वज्रनेत्रास्त्रा॥ वज्ररुद्र
 स्त्रा॥ वज्रवत्सा॥ वज्रकला॥ वज्रमानकी॥ वज्रवती॥ **॥ वज्रसत्त्वयात्रिनामस**

॥ वज्रनामा ॥ वज्रमन्त्र ॥ वज्रकाला ॥ वज्रमासि ॥ वज्रकाश ॥ श्रीकामवती ॥
जुनतारयालि फा ३ ॥ वज्रनामा ॥ वज्राक्षरवा ॥ वज्रमती ॥ वज्रवेगती ॥ वज्रना
मा ॥ वज्रमातृका ॥ नागवती ॥ ॥ श्रीमोचसिद्धिवालि ३५ ३ ॥ वज्रघण्टा
॥ नामतथासिद्ध ॥ वज्रवक्त्र ॥ वज्रमाया ॥ वज्रनामा ॥ वज्रनक्षत्र ॥ वज्रसमया
॥ वज्रवती ॥ धर्मनाममितायागद्वय ॥ ३ वज्रनामासिद्धि ॥ वज्रवेगल्लवमर्द ॥
विज्ञानधर्मनागीर्ज्ञानसूक्ष्माक्षुणाविना ॥ हर्मिषि विज्ञानधर्मिषा रावज्ञान
सूक्ष्मवोद ॥ प्रकृतीगुणधर्मधर्मधर्मगुणगिगता ॥ दयका ॥ रावर्थधर्म
धर्मगुणराव. धर्मिगुनामासिद्धि ॥ वज्रमिता ॥ ०० ॥ तिनामासिद्धि ॥
जुनमाता ॥ उदका. मकुटा. वज्र. घण्टा. नामादयष ॥ उरिष्यको अर्ग ॥ धुमि ॥ माता

॥ उदका ॥ मकर ॥ वज्र ॥ घट ॥ नाम आदिं सूता नृसि प्रक धाय ॥ ॥ यदि नृसि
 रिष के ४ की यात्रया गन्तु याग भवन व्याख्यान ॥ **धुति** नृसि प्रक ता च्या क्रिया के ४
 मंत्र यायाय मन्त्र याग याय डन ह्वाय ॥ ॥ मन्त्र साधन उषा विरुणा र वीति ॥
मन्त्र साधन याय धुति सा ह्वा नृसि का विरु त रु पिं ॥ ॥ नृविद्या विद्य क या र्थी
 सादनादि शारिष क उवर्ग ॥ सर्वग वात नादि विद्या ना व्यापा यादिनि ॥ **उत्तर** क कि न
 न के ॥ ॥ **नृध्यापना** ॥ वजा वा र्थी रिष के श मर्क दहि कृपा निध ॥ **हनाथ** ह्वा
 नृवजा वा र्थी या रिष के कि मि न वि स विज्या कू ने रु त पी ल या द या कृपा न ॥ ॥ भव
 नार्थ समर्थ स्था य ना ह्वा ल्य आ द न ॥ **थडा** न म व या र्थ समर्थ या के न ग थ कि मि वा
 डा रु त रु त पी ल या प्र आ द ला य ॥ ॥ **तावना** ॥ निष्ठा वज्र सत्त्व नृप विहा य नि

[illegible]

गदनूत्राः कावर्जं च वृत्तं ॥ यं सा सर्वविद्यानां च वृत्तं धीमान् नृगं कृत्वा ॥ **यद्यच्छेदक**
 लं गथागर्गं धनाभ्युदयं मनोहरं प्रकृतं ॥ **॥** चतुर्गतिमिधर्मसिद्धिं सहस्रदम्भना
 मिदानं गथागर्गं निधिया कृतं यथा ॥ **यद्यच्छेदक** यच्छेदनाडः ॥ **यद्यच्छेदक** गथा
 यच्छेदकं यथाभ्युदयं नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥
 किं नृगं किं नृगं ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥
का ॥ **॥ यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥
यद्यच्छेदक नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥
यद्यच्छेदक नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥
यद्यच्छेदक नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥
यद्यच्छेदक नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥ **यद्यच्छेदक** नाडः ॥

यासमयचकंज्ञागमननलालर्णसूरिधंधंधडा॥ ॥सर्वमूर्तिदृष्टायनेनैतन्मू॥
जाप्रकिर्दिगा॥**कारुक** गयाने सर्वमूर्तिपुलिमूडाधकधयाकल्यानायाय॥ ॥
प्रह्लादायमयंभक्तिमहासुखात्मसंबद्ध॥**भक्तिजिवमय** महासुखसविनवद्ध॥ ॥
अहावदृष्टयाश्रुगाध्मनायसमयमूडा॥**थडा** स्वरावशिन्नककारुर्कजाग्यध्मा
अतपयोगपुत्रुडा॥ ॥**ॐ**निहाननूडामधिव्यायसर्वकामापरागत॥**ॐ**निप्रि
समय॥ ॥**थनघ**समयविय॥ ॥**तदूर्क**प्रमसाद्यनकुर्वडंतत्वेन
संश्रुचघ्मधर्मनवाद्यन॥**वड**कायानतलेचम्लनोधर्मसिद्ध॥ ॥**समयनम**
हामूडानूचिहानहृदाकृपदिनि॥**आलिं**गसमूडानेसमयानचरुलनूचिहानयाडा
नूगलनध्माअलपि॥ ॥**गवना**॥**नदनु**आवाय्यहृदहृदविनिर्गतदवगावृद्ध

[illegible]

धनजापज्ञाय॥ कस्य जापयाद भिष्यत्तं विद्या॥ **गुर्वपदप**॥ दक्षिणमया रगवन्
 अस्मिन्सन्निहिता रव॥ **॥ आर्ष्यं ध्येयकं ॥** इति नो सिमया रगवनमयि सन्निहिता र
 व॥ **॥ निष्पुष्टं रूपाय न्यादिसिद्धि वीजा धननायपत्रमार्थमनु सिद्धि कय त्रुद्धय**
मनुपाथनं ॥ कस्य मनुकनं ॥ भिष्यन् जापया चकं ॥ **॥ इति मनु सनर्थं सवि**
धि ॥ **॥ धन** लयाथलस. धल. कलि. भादुनि जाय. उभस जाकान नूक सा हिष्य
 कविद्या॥ **॥ रावना ॥** नग ४ भिष्य सचरू प्रकाव ध्यात्वा त ४॥ उं वजनं प्राय रुवयगन
 की॥ **॥ धन** भिष्य या मिषा स उलं ॥ अहानं न्यादि x॥ **॥ इति ध्येयं** इति नूहाननमि
 वासपिपिन प्रसं चों गु आडाग था गन रु कलं. ग था भर्तु वेद्यपि स्यं मिषा वृत्. ग था लोक
 नमिषी खन. य था रु मिष्यं खन॥ **॥ अहानपगलापनय. दिव्य वक्त्र हिष्य को स्य**

तया॥ **दुमि** न्न हानमि वा मश्वादि यव कृ दक्षिणस्यार्थिं शुभ्रं शुभ्रं तासि धिक् लागा ॥
मि न्न शुभ्रं तासि धिक् ॥ **॥ धन** कसकन विय ॥ **तावना** ॥ अका नडं निषी दमयि ॥
॥ मि ष्य कसकं कं न ॥ प्रमि विम्वसमा ग्यादि ॥ **कृ** र्क थं धर्म दकां शुभ्रं सति
वृत्तमश्वा कार्यं मज्जिडा डानं मज्जिडा वानानं मज्जिडा धरुतु थं धर्म उत्पत्ति कय ॥
दप्यनतत्त वजसत्त वृत्त ॥ **॥ ४३** ॥ अना विना शुभ्रं अना न ददिमि वृत्ति नैवत्त सर्वव
जाना धिपत्तयं शुभ्रं हत्वा शुभ्रं वृत्तमान निष्पत्ता वनना सयात्त कृत् ॥ सत्वा धिने तुलं जा
ना शुभ्रं मज्जि तापि ना ॥ **कृ** र्क न वा दथं वजसत्त वृत्ति का निम्मल उत्पत्ति शुभ्रं कामजिन म
दू काय मज्जि डा विम्वसत्त वृत्त ॥ **॥ ४४** ॥ कं ह मिष्य समर्क वृत्त या शुभ्रं पति धम धक ॥
थथ या शुभ्रं कानन सियो डा विम्वसत्त धर्म दया का स्वता वनद अलया मदय कया दू नै

सुखयातप्यं न्यतुल्यमदयक जाय लपि ड-कसकनसचाठ ध्यां हान ॥ गथमचप्रति
विम्वरुविश्वदग्नि-सस्कात्रमात्रापयगुं द प्यं नासिष्क ॥ ॐ नितवदन् ॥ ॐ नितदव्य
नातिष्क ॥ ॥ तावना ॥ नगाहा ॥ कावर्क ॥ धनूही विमिप ॥ दद्यान् ॥ धनूविय
॥ ॐ सर्वतमगमान्नागयस्व ॥ मिष्यन धायक ॥ ॐ सर्वतमगमान्नागयामि ॥ धन
मिष्यपिस्यं वलाउयकाडी कृताक उयक ॥ ऊडाकथं मिर्क-स्वडाकथं मिसा-धम्यस्य
कोश्वस्य द्वावक ॥ ॥ उकचप्रह्लाधनूसमारब्धाग उपायगुनगस्मृता ॥ हनिष्य
पिंज्ञानागयागुप्रह्लामि-धनूधाय उपायमिर्कन लिग्वनधथासिय ॥ ॥ नव४स
हृङ्ग रूपस्यान् विध्वं विकल्पनासर्न ॥ वलानं संयागस्य ताव स हृङ्गानन्द सा तावर्नं ज्ञाना
नं मातसकल्यं नासकल ॥ ॥ चतुर्मात्रवियासूक्त न धर्म धातुलक्ष्म प्रमिदं धवी

जा श्रीप नारायण भवक प० ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥** **॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥**
॥ **॥ धन पादक गुणकारि ष्यक विषय ॥** या कारक पि टाय. न न षय ॥ धन
प्रसूषक गुणम सुसदनक ॥ **॥** नृप पयन चतक ॥ हाथ की कलप गय ॥ यूप न
पादप आदन प्राप्ता मे नृनृप विषय ॥ **॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥** पादप आदन कि नित्य
साय च न गतु लं म दगु नृपि ष्यक ॥ **॥** नृप गुणकारि ष्यक न क नृनाथ नृनृप
॥ धन का व रं गुणकारि ष्यक या क न नृनृप ॥ **॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥**
न सूर्य प्रदो. मया काम सूर्यार्थ म गृह क नाथ कृपा कृप ॥ **॥ हा व ना ॥** नृनाथ नृनृप
अहं का व वान नया प्रा वृ ग ली रूप गुणार्थ निषादिवः देवी नृपाया वज्र धर्म सखा
न पूर्वकं समापेक्षि कृवन् ॥ **ॐ** सर्वगता गता नृनाथ नृनृप वज्र धर्म सखा वाम् कर्माहं ॥ नृनाथ

द्विज नमः शिवाय शिवनादि समापन्नं वैशिवनादि नमः शिवाय शिवनादि नमः शिवाय
 महा नारायण विदुः शिवनादि नमः शिवाय शिवनादि नमः शिवाय शिवनादि नमः शिवाय
 कात्यायन वज्रमणिपीडक वज्रमणिपद्मद्वय नमः शिवाय शिवनादि नमः शिवाय
 शिवनादि नमः शिवाय शिवनादि नमः शिवाय शिवनादि नमः शिवाय शिवनादि नमः शिवाय
 निश ४ जानूयातमपपा ऊति ॥ **॥ यन निषी** रुज प्रसिंतय. स्वडा प्रसिंतय काः
 यकं गुन्याकं नृध्यासना ॥ **॥ ह** रगवन्महासाम वज्रयोगकनस्य वमूद्राप्रभद कोश
 य. वज्रयोगसमूहव ॥ **॥ ह** गुन नृध्यासना नमः शिवाय शिवनादि नमः शिवाय
 नमः शिवाय शिवनादि नमः शिवाय शिवनादि नमः शिवाय शिवनादि नमः शिवाय
 कनूगद्वय. संसावपक संघात. मन्महं ग कसं वतमिति ॥ **॥ ग** य **॥ ह** लया ल नडा च

स्रष्टुल. समाधिया संविद्या कर्तुं. संसाधनं कदा सः सागव समुद्र समानं पंकसदृश
 ज्ञानं ह्युत्तु नृत्तु तपो लभ्यते. किंच कास्य विद्या कर्तुं ॥ ॥ पुन नमस्का यथा ॥ वृद्ध पू
 प्रायथ मीनः ॥ भिक्षा वज्र मया दिति ॥ वृद्ध पू प्र पिंन काया यापि स्यं गथ्य स स्रविले वज्र
 धन न्नादि ॥ ॥ सिंता मित्वा न यत्तु त्वा चित्ति धनं वा नृत्तु ॥ ॥ इति प्य पिं म्य स्रविले
 यथ्य वी चित्ति नृत्तु न च लभ्यते ॥ धनं कृत्यं मूल मन्त्र पद पं. भक्ति न स्व जाला दार्म म
 धृष्ट नृत्तु न कं पीत ॥ ॥ धन गीत ॥ वाग नाट ॥ सहज स्रव्यादि ॥ ॥
 न कं ॥ हान श्व नृत्तु पीत्यादि ॥ ॥ न कं ॥ उच्छिद्य त्यादि ॥ ॥ न कं ॥ गुन प्रस
 द्यादि ॥ ॥ न कं ॥ उपाय न ध्याय ॥ नृत्तु महा स्रव मिनि ॥ ॥ नृत्तु
 हं वृद्धा ज्ञान मूल्या दया मिथ ना मिता नाग नृत्तु स्रव्यात्ता वृद्धा रगवनी प्रक्षिप्त निधी

नप्राप्ता ॥ किन्तु नव यदं नृद व मनुलस्य पून होव क वं ॥ ॥ प्र हाउ स्का यस्का
 वडा स्का य मक न च विन्द न दान निवे मय न ॥ प्र हा न व र्पं जामि न न के उ पा र्प न के
 ॥ शु का प्र हा दू प्री क न ल्म र्थ वा कू शु का र्पं के ॥ न न ४ मि ल्म न व क य म व म स म्म मि
 ॥ आ चार्य म हा स र र र म न ॥ ॥ ॐ मि प्र हा पा य या ४ सं दू ग वा वि चि त्ता र्थी शु
 का र्थां शु का रि ष के न वा व ड वि श्व ध य ॥ ॥ ॐ मि शु का रि ष क वि चि ॥ ॥
 जू ध्य र व ना ॥ न नी यू ल्म स्या द प्र म्म द न प्राप्ता शु का म नू र्म न ॥ ह गु नू र्म ल पा ल या पा द
 प्र सा द या के न रा ना गु का रि ष क न डी र्चं ॥ ॥ प्र हा हो ना रि ष्य के न कू र्म ना थ नू र्म
 प्र हा ह ना थ ह गु नू प्र हा हो ना रि ष्य क वि स वि ज्ञा दू ने कि मि न नू र्म प्र हा डी ॥
 थ न नू र्म प न न की का य ॥ ॥ ॐ गं ल्म न ति न म्मा स व्या दू प्र क ल्पि ना ॥ थु लि च्म न ल्म

यानां मना ह्यवधनपरिहंस्य ह्यवधकृष्णं कल्पनायानां ॥ ॥ चक्रक्रमप्रथा
गनसमाख्यादयस्तत्सर्वं ॥ **चक्र** कथा कथं यागनसंभवकांडादिगुह्यस्वादनपर्य
कमात् ॥ ॥ सायिकं क्रमवचनपरिणीतं श्रीगुरुस्वस्वगच्छिस्वमेमाणापराहिति
निर्ववत्स्ववामिर्हमन्मन्मपदभति ॐ निवृत्त्यात् ॥ ॥ **स्तीनधायक** ॥ किं
मूर्च्छितस्वस्वविद्वद्भादिहकर्म ॥ **चक्र** उत्साहकर्म हेमिष्यविम्वरकर्मयाडा
॥ ॥ **चक्र** उत्कर्षकर्म मानसं स्तीनां रक्तिरथापव ॥ **चक्र** उत्कर्षकर्म मानसप्रियाकर्मरजल
पिडात्थर्व ॥ ॥ **चक्र** उत्कर्षकर्म मानसप्रियाकर्मरजल ॥ **चक्र** उत्कर्षकर्म मानसप्रियाकर्मरजल
मसक्ताडापिष्यगथस्वस्वस्व ॥ ॥ **चक्र** उत्कर्षकर्म मानसप्रियाकर्मरजल ॥ **चक्र** उत्कर्षकर्म मानसप्रियाकर्मरजल
उत्कर्षकर्म मानसप्रियाकर्मरजल ॥ **चक्र** उत्कर्षकर्म मानसप्रियाकर्मरजल ॥ **चक्र** उत्कर्षकर्म मानसप्रियाकर्मरजल ॥

कार्याहिकि सदास्ती त्वं च म्वनं र गप न स ॥ **कार्य** या स्ती या क व म्व ना या य र ग
 प म्व स ॥ ॐ नि वृ या न ॥ दृष्टा स य न प्र समा लो क य मि ॐ त्वा दि ना ॥ ॐ नि प्र ह्ना ति
य क ॥ ॥ नृ हो प न्न म दी र्य ही न दी र्य प न्न सो ष्य स न न्वि र्ग ॥ **आ वा र्थ** र ष्य र ग प
 न्न स म र्क स र व सं क रू ड ॥ ॥ यः सं च य मि वि ष्म न न ग त्या ह म प्र ग लि त ॥ **ग व**
क्र न स व ल प न वि चि र्थ थ न्न या ह्नु ड न र्वा न्य ॥ ॥ उ न्न प न्न य थ का र्थ सं व द्वा
 मा च ना दि क ॥ **र व या** का र्थ प न्न स व द्वा न्ना वा च ना दि ॥ ॥ स्व यं म हा स र व मा जा न्ने य व
 हि स दा लि त ॥ **य म** थ य म स र व मा जा न्न स दा ची ष र क र मा क र व ॥ ॐ नि व द न् ॥ **थ**
न य थ च य ॥ ॥ **ता व ना** ॥ स्व यं द व ग आ स म न मूर्तिः पु र्ण दे वी श्री व ज्ज य मि
 नी नृ पा नि ष्या च ॥ **जि वा** ॥ **ह दि** ॥ **ना रि** ॥ **उ क्रा** ॥ **जा न्** ॥ **वा द य** ॥ **य थ क** ॥ ॐ हं स्वा म्

४हा॥ ॐ गिपचकसकानीविनिहृत्वा ॥ ॥ गदनुजो४६॥ ह्याकमलकलिश
या४किंजल्कमतिश्रो४३॥ कुनिग४वडकपिग रुद्रकारं विहाय ॥ वामा ह्यांगनामा
दिमग्रल्लवक की कात्रया सिनरु न्या डिक्का यां कया वदू आ कात्रपूर्वकं संवा
ह्य ॥ श्री ३ रु४ लाहा ॥ ॐ हवतिथ गतनू ग गनवड स्वहा वात्मकोदं ॥ मनुमावदू
यतु गतिमात्रयतु ॥ ॥ वडपन्नप्रगिह्ला य वाचिचिह्न नवील्लुङ्ग ॥ वडप
न्नसंथापनासायवीचिचिह्न नववलपयकं ॥ ॥ कोरयित्वा मवात्मानं चिह्न
नूपाद्यवीचयतु ॥ जानावातेलं आनन्दचिह्न उत्पन्निरूप ॥ ॥ यावत्तत्कवर्ग
यागीवीचिचिह्न विवडयतु ॥ ग्यवागी मयागेशागिं वाचिचिह्न गालनं ॥
गावत्प्राणागि विष्टिर्न किं भरेवानन्दडं हर्ष ॥ गवलीन गायुचगनवर्षं ह्रस्वगुमेव

गच्छाय ॥ ॥ पतिनं वाचिचिह्नं तु सर्वसिद्धिनिष्पन्नक ॥ **वाचिचिह्नं** पनश्चयया
 तसमस्तं सिद्धियाथस ॥ ॥ मूर्द्धनस्कं च विज्ञानं कूटस्थसिद्धिनिनिन्दिता ॥ **मूर्द्ध**
गुलि विज्ञानसंगनया सिद्धिहेतु ॥ ॥ प्रज्ञासंपर्कगशामान्गल्वंसन्ममकय
 न् ॥ **वड** पर्याक नम्बिह्नमन्याङ्गनमिह्नयान् ॥ **हृदि** प्रज्ञातिष्ठकविधि ॥ ॥
यन मलुसविसृज्जनमभेद उल्लेख ॥ पिच्छायापिंथोअथससंगय ॥ ॥ नातिप्रिका
 हियायागीयागीत्वंनृतिर्वाहति ॥ **स** मलार्कं यथागवाद्यायाय ॥ ॥ हन्याग
 मूर्तिनाकाभपिवेचमृगनृदिका ॥ **ज** नृज्वगमृनिकस्यं आकाससूक्तार्थः ॥ **नृ**
 निनरुमिकात्तात्वंगुडाडगि ॥ ॥ धूमनहायगं वक्रिगनीमृगुवनाकय ॥ **क** दय
 समिद्वचकं शिरःवाहलदूधाहलषद्वचकसिर ॥ ॥ निमिह्नहायगं ज्वर्यवाचिस

तस्य धिमां ॥ **७३** नूना वां धासुनिमिदुदभिरवाधिसत्त्वया नरं ॥ **॥ अरिष्य**
कविचारि न अस्मिन् नृपकासिने ॥ **अरिष्य** कस्वगारि न स मन्त्रकृप्यमभिरुत
॥ **॥ आचार्य** गुणप्रहास च यस्तत्पुनस्तथा ॥ **आचार्य** गुणप्रहासान्नगुण
शिष्यक नायं पंगवाधाल ॥ **॥ पद्मानन्द** रंगं प्रापं निर्वानं तद्विवागते ॥ **॥ ७४ ॥** अ
नन्द रंगधालनिर्वानेनान्यभिरावेत स गगनादि गतं ॥ **॥ मध्यमानन्द** मार्ग
रुसहजामिव धिरात ॥ **मध्यमानन्द** मार्गद्वि स हजानन्द धक धाल ॥ **॥ अनादि**
निधनं भक्तं रावा रावात्मका विह ॥ **आदि** अन्तमदधनं ध्यामन्तु हिसिरामद
दूथामदूथ ॥ **॥ शुन्या** गाक नृत्तारि न वाधिविदुमिनिस्तु ॥ **अका** नमद
कनृत्तमय प्रहृष्टपाय रिन स नृप हृष्टा वाधिसत्त्वया चिन्थार्थि गुणकभिरा ॥

इयमि सुप्रवाजा यावकावनहि ४४ सुजादिगङ्गागां ॥ **इयमरुल** सुप्रवाजाथं हि ग
 स्वरावगुक्ताहिष्णु कथं उत्पत्तिरुत्त. धर्तसावसमूद्र धर्त ॥ ॥ **इसन** गुनिगदन
 समयवचनदविशिवत्तवसर्षह ॥ **इस** गत्वमयवचनयाश्मचवत्तगां मदभक्त
 नियाथं ॥ ॥ नकुंवीयिगुत्रकहयिनकुंवका ०० ॥ **गुत्र** नमस्त्वाकथुलि
 तिनंथमथयमंसिय ॥ ॥ सहजावस्त्वाभ्रवसकास्रकहिउयिकी ॥ **सह**
 जानन्दवत्तथं सुखपद ०० ॥ **गुत्र** गुयहिष्णुकविधि ॥ ॥
गुत्र नकुयालाहातकाभं पत्रखयालाहातिलविय ॥ गुत्रनघत्तकीनाखडीला
 हातनगिष्ठापिभं रुडाताहातिनवडाकाढ. निक्कल्यां भादनाप्रवाकनस्यवडाधिस्था
 लादि. धाय ॥ **सिद्ध** लय ॥ ॥ लादिनीयूयमनुसमपिगैगसिन्समयतिगय

गगननृणादि कृतं ॥ सादि कृतं दृपिं निष्कृष्टिपूषयां गगनसादि याना ॥ ॥
नान्या पायनवृद्धत्वं शुद्धचन्द्रकृतं यं ॥ प्रह्ला पायउपयानं मदवृद्धकृतं शुद्धकृतं
प्रह्वनसं ॥ ॥ तस्मादि योगमानसं माकासित्वं कदाचन ॥ यथ संप्रसादसा
क्षीपूषये मिवायमगैडाडि सादि दृपिं गवसे सं वायमद ॥ ॥ ॐ दंत सर्व
वृक्षानां विशाखगमनूत्तमं ॥ यथ संप्रसादसा विद्यायुततडाचं ॥ ॥ भूति
कामागि यामृष्ट ४ सिद्धिगल्यनतीगमं ॥ ॥ निष्कृतं कृतं लमदयकं वायुं डा ॥ यथ
यागलिद्धि मदयि डा ॥ ॥ ॐ ति वेदं च विशाखगदद्यात् ॥ ॥ ॐ ति विशाखगविधि
॥ ॥ सावना ॥ गदनु निर्व्यवजसत्त्वं नृपं विराज ॥ ॥ ॐ दंत सर्व वृक्षानां वजसत्त्वं
कदास्ति ॥ यथ वजसमकृतं दया साववजसत्त्वं याला हागि सचा ॥ ॥ ॥ त्वयापि

हिनथाध्यावावजपातिदृष्टवर्गं ॥ **रु** निर्यं धनत्रयि वजपातिं कागुफगयागु वज
 ॥ **वजविद्या** ॥ ॐ सर्वरथागगसिद्धि वज समयत्र खदीग धात्रया निवजसत्त्वकी
 ॥ ४ हिहिहिहिहं ॥ ६ ॥ ॐ अत्रमसा विर्यमरुद्या रंदलकर्म ॥ नूदाहि नूविष्म आचगु
 न्यागावजमूचात ॥ ॐ निप० नगृक्रियागू ॥ ॐ निवजवृग विधि ॥
 पञ्च निगृहकृतः धसिवजिन्नादिंसह शासन नके ॥ गीत वामादहिने ॥ कलक
 य ॥ **यन** निष्याया हजान पीगासन चाहपन्न चीया ॥ मूद्रातय ॥ क्रमिं स्वा
 लपात व बीय ॥ निष्यायाक हावना ॥ तना निष्यं सत्त्वत्रयं वजवागहि नूपं विरावा
 म्बहृद्विज मयूरवे नानिगं हानदवीती प्रवसा यानु यानिगी वजवागहि नूपं पूष्याया
 गान्नूपादवी नूपं पूष्यनु आ सत्त्वत्रयं विचिं गगल्लानिर्ग वाक् वीज मयूरवे

नीलं हानदेवनाप्रवीणं ॥ ॥ आकर्षणं पाद्यादि ॥ निला ज्ञान ॥ मूत्रासखान ग
संरावना ॥ गीत हा ज्ञान ॥ ॥ चक्रि कलुसकलि नीचक मे प्रला रत्न. नृको
य. नृमिता र. नल सं राव. वै नीचन. नृमा घसिद्धि. आ ह नृक नृपां कटि ति विचि नृ नृ
हान सर्व ग थानिर्ग. नृपा ग थ ग गं प्र वं नृ नृकाद्यादि पत्रिन ग नृकादि मूत्रा ४ नृ
काद्यादि स्वरा वा नृची मूं च ॥ थू प्र ॥ नि ॥ पं ॥ ला ॥ च ॥ ग ॥ सु ति ॥ ऊ प्र ॥ ॥
थन गी ल्य लं उ ल्का न ॥ थन मूत्रान गिय कं ॥ रत्न स प न प्री क फं ॥ ॥ गीत घ
न ॥ ॥ अंशा वज रुं नृक रुं रुं रुं ॥ आकि नी जात्र स न्व रं स्ना हा ॥ प्रि क फं वि ल ति उ प्र
य या ॥ प्र ह म्या ग ति च न ॥ ॥ ३ ॥ स व वृ क् आकि नी य वज वं नी य वज वे मा त नी य रुं रुं
रुं रुं स्ना हा ॥ ॥ प्रि क फं व्या घ्र च न्मा ॥ ॥ ३ ॥ च व र धा त य र म र्द र व ज घ्र क रुं

रुद्रस्वाहा ॥ **त्रिंशत्कर्णवकी** ॥ ॥ गृह्णामि मनो विन वक्ति न्रका लात्मकं आवज सत्व
स्य मूद्रयं वहि सध्यात्मसंस्तिगा ॥ **मिलति न्नयययगा** ॥ उं वज्रधनसमयत्वं रुद्र २ न्नो
जीलिक हं रुद्र स्वाहा ॥ उं डी ४ रुद्र ४ हं रुद्र ॥ **त्रिंशत्कर्णवकी** ॥ ॥ गृह्णामि मनो वि
न कलुतामृता लात्मकं आवज सत्वस्य मूद्रयं वहि सध्यात्मसंस्तिगा ॥ **कलुता** ॥ ॥
उं वज्रसूर्यगममो विधयमयसमयत्वं वला चक हं रुद्र स्वाहा ॥ उं सर्ववृक्षजकि ३
नीयवज्रवर्कनीयवज्रवेनाचनीय हं रुद्र स्वाहा ॥ **त्रिंशत्कर्णवकी** ॥ गृह्णामि मनो
वीचकलिकाचलसंरवात्मकं आवज सत्वस्य मूद्रयं ॥ **कलिका** ॥ ॥ उं अश्वग
पत्रमा अश्वग नृगेदिजिननृगेदिजिनिक हं रुद्र स्वाहा ॥ उं हं नमः ४ किं स्वाहा ४ हं
वोषट् हं हं हं हं रुद्र स्वाहा ॥ **नृचकधय** ॥ गृह्णामि मनो विन वृचकं अश्वत्सकं आ

वज्रसूत्रस्य मूदयं ॥ **त्रचक** ॥

॥ **उं हूं कीं ४ प्रह्लाध्वक हूं हूं स्वाहा ॥ उं वं हां यां कीं**

मां हूं कीं हूं हूं स्वाहा ॥ **मं वला ॥** गुरुदत्तामना वित्रमं वना नूमाद्यसिद्धिं वृषिः

नं धावजसूत्रस्य मूदयं ॥ **आत्ममं वला ॥**

॥ **उं आ वज्र हूं हूं वृचक हूं हूं हूं**

गाकिनी जालसम्बन्धं स्वाहा ॥ **नो पू वृचक शुप्रहा वा वृत्रिमुख मातादि ॥** ॥ **उं क वृ प्र**

वृंद हूं हूं ॥ **मन्त्रपाद्य ॥**

॥ **उं न मात गवय वी वं वी वं वं नाय यादि ॥ ख द्वांग**

उ मन्त्र ॥ गुरुदत्तामना वित्रख द्वांग उ मन्त्र पाद्य कं आ वज्रसूत्रस्य मूदयं वहिष्ठात्मसिद्धि

नं ॥ ॥ **उ मन्त्र ख द्वांग पाद्य आरु वल स्वा न द्याय ॥** ध्वं वल सत्रक मूरव सिंधु सिंघा

गम कर्क पका कोखा गम आदि द्याय ॥ **हुं डा नं वा नं वलि विय ॥ रा व ना ॥** स्वाक स्वा न श्री

दं गिष्या धि र्मूल मन्त्र नं न्या सयाय ॥ **पं ॥ ला ॥ घ ॥ ग ॥ रु ॥** समय स्वा ऊ द डा ह कं

कायगिष्ठात्वनक ॥ **॥** यनमभुतउयक ॥ दिगवत्तिविय ॥ पूजागीन ॥ वागव
 उचि ॥ चक्रिकुलुत्तादि ॥ **॥** यनसप्याषनरूय-धुडामसदिगवत्तिविय ॥ **॥**
 प्रससथाह्यादि ॥ **॥** यन यायमाप्रानदिगयापाप्रजादं दडास्कृष्टाय ॥ सातिने
 क ॥ **॥** वऊकवागकहाथचभियागादिचपूहात ॥ **॥** यनथडा ॥ थसस
 मया ॥ यनसपूजायाचक ॥ सकसन ॥ गीनकडाने ॥ दकनाचायक ॥ खाऊचपा
 चलहिवक ॥ गीनप्रिहदा ॥ धुसिधनकाकिगनक ॥ सगाऊन ॥ विसरून ॥ **॥**
 यनमूडाकीकाय ॥ गीनसोदगहाय ॥ धुसिधकाभूडासपूजायाया ॥ द ॥ दकवादा
 यक ॥ खानगनक ॥ खासवलिछोया ॥ **॥** गिवीवचय्याविधि ॥ **॥** गग ८ व
 यावृगमार्या ॥ **॥** यन ॥ चार्यदवगाभूपनचीन. कावायग ॥ वागवडा ॥ वाहागनकी

स्यं. इडा लोहानन नूतय मूढा याय ॥ ॥ नूतवाहं व्याक शानि लीवड सत्यनथा ॥
गम ॥ **हमि** **पिं** **थ** **न** **कि** **न** **व** **प** **सा** **द** **वि** **य** **व** **ड** **स** **त्वं** **ग** **थ** **ग** **स** **व** **रा** **व** ॥ ॥
रवदु ग्जि नि गीरु य नूत नीरु व आनय ॥ **संसा** **व** **दु** **र्ग** **नि** **थ** **म** **का** **या** **ह** **चि** **क** **र्न** **प्रा**
नि आन याय याग ॥ **ॐ** **नि** **व्या** **क** **र्क** **वि** **धि** ॥ ॥ **थ** **न** **कं** **प्रा** **प्र** **वि** **वि** **वि** **का** **ह**
विय ॥ **अं** **ध** **म** **च** **क** **व** **ड** **द** **पु** **मं** ॥ **उं** **व** **ड** **रा** **ष** **लं** ॥ **आ** **का** **व** **ड** **सं** **त्वं** ॥ **सं** **स** **व** **वि** **य** ॥ ॥
ददामि आदि श्व वं पूषक ॥ **पू** **षि** **वि** **य** ॥ ॥ **ॐ** **प** **नू** **वि** **वि** **य** ॥ **आ** **का** **भ** **ल** **क** **र्त**
सर्व आका संवा प्यल कर्त ॥ **स** **न** **लं** **आ** **का** **भ** **या** **व** **क** **त** **आ** **का** **भ** **ड** **उ** **थ** **ल** **क** **न** **म** **द**
आमा वलुक ॥ ॥ **आ** **का** **भ** **स** **म** **ग** **आ** **भ** **स** **र्वा** **शु** **स** **म** **ग** **सू** **ग** ॥ **आ** **का** **स** **ड** **स** **म**
या गया कं समलं हंडाने समलं प्राका भकल ॥ ॥ **अ** **थ** **प** **ह** **मि** **स** **ह** **वि** **नी** **या** **द**

मात्रेन धर्मवत्क प्रवर्तय ॥ **यनि** निर्यं दृष्टिं प्रह मिं सुदिन विदु रुया मा प्र न धर्म
वत्क प्रवर्त नायाडा ॥ ॥ **आप** र्यदि सन ना च धर्म सख मने रु व ॥ **पूर्व** राय
याग सक रि ने धर्म सख पुत्य म ॥ ॥ **ताव** ना ॥ नुर्व सामान्या नृ हा क स्वा इत्य
धिका नृ हा दा दि पु य था कम निव्य वे वा त ना दि नृ पां धा स्वा ॥ ॥ **यन** प च ग था
गग चि द्रा विय ॥ सर्व सख दि गा था या सर्व लोक सख ॥ **सक** ल्य प्रा नि दि न या य या
न सक ल्य लोक सख रि ने ॥ ॥ **यथा** वि न या ना वि श्व च र्म च क प्र व र्त य ॥ ॥
गथा वि न य स स सा व स धर्म पु नि पा स या न नृ थ च र्म च क प्र व र्त ना या डा ॥ ॥
प्र हा पा य स नृ पा ला वि ना म नि वि वा ना की ॥ **वि** ना म नि दृ द्ध थ्य प्र ही पा य नृ प
आत्मा ॥ ॥ **नृ** दि ना वि ग ना स ग ४ स स्वा थ क नृ थ प्र न ॥ **दि** न रु य म न्वा ल व
मु क नृ डा थ्व थ्य प्रा ति या नृ थ या डा ॥ ॥ **यन** मि थ्य न धा य क ॥ नुर्व क वि थ्य



भारत के आचार्य सुत श्री महाविद्यालय

II-197

मियथाप्रहापयानिपुह ॥ **हं गुर्वृ** रुतपीतस्य गथ्य आहादय कलत्रं नृप्यजिमिह्ययाय
 रुते ॥ **॥ यनरु** प्रकयक ॥ गदनूवे वीचननादि नृपेन वलं विनायसिध्याय नृनृ
 हादशात् ॥ **॥ वृचिर्ग** नचक ॥ हे शान्मूकवज्रनाम गथ्य गगसिद्धिः समयः
 ह्यं गुर्वृवः ॥ **॥ यन** निव्यत्वं मधुत उयक ॥ गुर्वृयाषन कृत्य ॥ गीतसुप्रः
 मिमगुन ॥ दिगस गथ्य गगचिद्रविय ॥ **॥ वाग** गादि ॥ सुप्रमिमसिगुग्यादिः
 ॥ **॥ वे** वीचनं च्वात्वा चक्रं गुर्वृगम हानं वे वीचनस्य प्रिरवचाविनः समन्तानः
 माहिगानमाहिगानां पातनाय वे वीचनस्य स्वचक्रं **॥ न** च्वा ॥ **॥ उं** नृको र्वां च्वा
 र्वा वज्रं गगर्ग गलहाना कात्यस्य नृसो व प्रिरवचाविहीकत्य नृरं च कार्यं प्राप्नुयन्
 कात्यस्य कविर्त्तं **॥ प** र्वा ॥ **॥ उं** नृत्तं संतर्वं च्वात्वा नृत्तमिम हानं नृत्तं संतर्वं संव

प्रितवचाविहगस्यदुःखनासर्नसुखार्थनलसंरवस्यनल ॥ ददिं ॥ ॥ उं नमि
तारं च्छात्वा न कं पदं सिं ह वि कि छि न हान नमि गार स व प्रित व चा वि ह नि ना
वर्क स हा धर्म न ना गि तं महा ना ग हे ना नमि गार स्य न कं पदं ॥ पदिं ॥ ॥
उं नमो च सिद्धिं च्छात्वा विश्ववर्द्धकं पदं हान नमो च सिद्धि न स व प्रित व चा
विहगस्य कं ग क्यार्थ नमो च सिद्धि न पि विश्ववर्द्ध ॥ उद्य ॥ ॥ अक्षक ॥ क
दी ग न मि दे न तु प्रित व न प्राप्ति ना मी क ना च कं च ह सि न्मा न र्वा न वि स या ना
हामि न क्का द रा ॥ नृपा शान व धर्म गा ल्म क या र्म म लु ले या ॥ ॥ वि श्व म लु ले च
क्रमा क न य न न ॥ ८ किं मू द्रा स्य सि ॥ ॥ पू न धर्म ग द ह्म न व ड न ल प द्म क
मि ग द प द्मा या न प द्म पा ये न नृ न व द हो द या न ॥ सर्व दि ता व द न ॥ धन कं

तनकं ॥ गोचकाडागुनूतडाकाया ॥ ॐ गिनू नू हान विधि ॥ ॥ यनथडा
 अससंगय ॥ ॥ खकन ॥ नूयनिवेदिम ॥ गिषीगनुधावीरविष्यागि ॥ हनि
 पिंथुतितार्यासि आडाकपिगनुधनरूपीकाग्नरुल ॥ ॥ मनुसंभवमन्यथ
 मिष्यभद्रदयंगर्मवदन् ॥ मनुसंया ॐ भवनायकरुल यमथाधर्ममिष्ययोह
 दयसदगी ॥ ॥ अधूनोमनुलाचार्यामनुगन्ताधवीहर्व ॥ आडा मनुलयाआ
 वार्यारुल मनुगनुधनरूपीकरुल ॥ ॥ द्धानावाचिसंयाभ्यदेवगानां सर्व
 न ॥ दूधयां वाचिसंत्ययां देवयाकं सकलिनविधियाय ॥ ॥ सत्यानीमनूकपा
 र्थविधिनामनुसंत्वया ॥ समर्क प्रातियाकंदयादययागविधित्थीमनुलयाडा
 रुमिष्या ॥ ॥ सिधित्थीययलनगनुयीयाभ्यसाधका ॥ वाय यत्ननगनु

श्रीकृतपि साधकः ॥ ॥ दक्षाप्रतिष्ठापयमनहृत्स्थान्ममभुलं ॥ **ध** मभुलं
स्ययांद्रहाडानीनहृत्स्थान्मभुलं ॥ ॥ सर्वपापे विनिर्मेकोरवानशेवसुखि
नः ॥ **आ** ड पिनवकडानेनूयाल दृथनैरिंकवी ॥ ॥ नहृत्स्थान्मभुलं
जीयानादस्मात्माहास्त्रवात् ॥ **प** र्धुनंमभुलं **ध** महायानयाकनूकिं सतीनि
डा ॥ ॥ निर्हृत्स्थान्मभुलं **न** नूयाल दृथनैरिंकवी ॥ **न** नूयाल दृथनैरिंकवी
रुत्स्थान्मभुलं **न** नूयाल दृथनैरिंकवी ॥ ॥ नूयाल दृथनैरिंकवी
नवर्जिनी ॥ **आ** ड नूयाल दृथनैरिंकवी ॥ ॥ नूयाल दृथनैरिंकवी
न ॥ ॥ **प** र्धुनंमभुलं **ध** महायानयाकनूकिं सतीनि
रावथथसियनिश्चयी ॥ ॥ विवागसदर्शपार्थमन्यनास्तिप्रिधुनं ॥ **न** नूयाल

यथिं पापं चंदमदृष्टिं हवनसः ॥ नमो कामविनाशिनं कार्यं हवनपूज ॥ धु
 लिनिमिलिं कामरागपापमदृष्टिं कार्यं संसारसंसारिणी ॥ सर्वकामप्र
 हारं नु नमस्ते मकराहव ॥ स मरु वा द्वा उ पतागमगासु पापना लमिडा हर्य
 ॥ पक्वमान्सा मृगं हृदं नका न्यः समया प्यगा ॥ दाता लान् मृगं हृदं नका
 यायुगत्वं ॥ नहि प्राप्तिवन्धकार्यः स्थितं न न पवित्रं कुरु ॥ प्राप्ति याजिवका
 यस्यायस्थी अवायमथा ॥ आचार्यं स्निहं संस्था यः सम्यक् वादं न वि क्रम ॥
 हनिष्य पिं आडा कृ निहं गुत्र माया उ पाध्या तवा पा कल्यां गुत्र नि च नायाय मथा
 यागसाधर्मिडा नायाय ॥ नास्ति किंचिदकुरु वं प्र ही पाय न सं गता ॥ वि कि
 ची रव सं च सं स्त्री अ पृष वाय ध क न नं राय म गं डी ॥ मा रे वि ना स्ति न पायं न

अगगवचीयथा॥**किं ध्याया**थयागसा हायमूम्वालनधगगयावचनगथ्यत्रुथं
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** ॥ **धुलि** नूग
नसमिथगुसमयसखवसुतकतवि ॥ ॥ **कय** गित्तुसखिश्चकल्वप्रगिस
मसाधर्मागगासदातवन ॥ **हंसा** नयाप्राप्तियापाडकवडसखभनयानाथं
थथयायू ॥ ॥ **अपि** वधर्मनैर्षायशथाविध्यतिष्ठिकः प्रियपूवत्प्रसन्नः ॥
मनातिः कल्याणायैवसर्वदेववाचिसखेऽसमन्वाक्रियते ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**
धि ॥ ॥ **थन** निष्ठासकस्य गुत्रयातिहारनायत्रुक्तकार्यमनुलसहास्यः
मनुलडल ॥ गुत्रयाधनदूस्यडाने ॥ **गीतयाय** ॥ **नागमा** नव ॥ निरुद्धवद्यादि
॥ **इह** क ॥ चक्षुलिकलतिलयानिर्गपदादक्षालिगाविश्वरुविश्वरुसि

महासूरवं विनवयं लिनं शुवा दद्यात्तुं हा जगतापि निहति पदं प्राणापि धनं
कृया नागमदागमचूददयं च सहजानन्दयव दामह ॥ **धन** धूनकाडा. धडा २ धासुध
मय ॥ **॥ गिष्यनधायक ॥** नृधमसरुलं जन्म सरुलं कीविर्नचम ॥ **आडा** कि
मिजन्मकायाया सारुलं रुतम्या नायां सारुलं रुत ॥ **॥** नृधवृद्धकलं जागवृद्धप
यासि साधनं ॥ **आडा** कि पिं वृद्धकलं सजन्मकायाया वृद्धयाकायरुत ॥ **॥ धन**
दमपतिनयक ॥ धाकलिमलुलधिलं सकल्यनं खानननं ॥ सगावृद्धकल ॥ सर्वगय ॥
नायां. सिद्धलूयक ॥ **आजिर्विद ॥** मलुलविमरुन ॥ वंगपूजा ॥ कोलदकध ॥ दगु
समयपक्षसालियहनवाहिकल्यां गुवृद्धाय **आजिर्विद ॥** मलुलपाता ज्ञायमगडा
॥ समयाचक्र ॥ गनचक्र ॥ कलकद्यायदानगमथा ॥ **॥ धन** सिष्यसम्भयाचक्र

य ॥ गीत कथि सर्व ॥ गुननिष्ठ व्याख्यान रूप ॥ मनुलक्ष उल्लेखाने ॥
वागवसन ॥ कथि सर्व ॥ वाकिलेखादि ॥ ॥ गीत ॥ सर्व विद्य ॥ दसप
तिगय ॥ गीत सादस हाय ॥ विषय ॥ धनद कृष्ण ॥ ॥ स्वकर्म ॥ नर ४ गुनवे
दशात् ॥ तथा गीत क दक्षिण नाना लीकाले वस्त्रादि न स्वमित्र विष्णु साग ॥ दे
वता नापि तत्र वमलुत स्यात् ४ पून ॥ नार्थ स्वकर्म प्रपूय मपलं दासिदासं तथा
हस्त्य च धन धान्य काश्चन यथ वस्तु मर्तु तथा ॥ संन्यास महि विष्णु सादि कवने
नाम्नादि सय नासन ॥ आत्मा ना च नि यदयम् ॥ कि पत्र निष्पन्न दय गुनी ॥
॥ गीत ॥ रिष्य क दक्षा विधान विधि ॥ ॥ द्वि विद्य विधि युति रूत ॥ सगिष्णू
पूर्वदि काय ह् पूर्वो आदि नन्दि नमस्का न विधि र्था मास ॥ ॥ ॥ ॥

१) अनष्टतोगिनियुक्ता ॥ सिकु ददं दयाया ॥ पत्रकं रूपं ॥ अष्टम अमनवलिदिय ॥ भार्गवी
पूजा

१०

ॐ नमः श्रीमहावै श्रीनवकसखायः ॥ नमः श्रीवडवा माक्षे ॥ ॥ अथ जिह्व
विधिमाह ॥ सिकु सूर्यं अपनाया ॥ सिकु क्रे अथ माक्षे अग्निका प्यता माक्षे ॥
पक्षे सात ॥ मलजान्थं सर्वमग पाद पक्षे गवा ॥ माग्राया तं अक पं धून काडी ॥ २
जाय ॥ गुग्गुलु मल ॥ पक्षे गवा अथ धन ॥ सिंधु ग ॥ सीक अथ मूल मर्तु ॥ वीर्य विधि
थं पूजा ॥ नद्या पूजा ॥ आदिकाय मलु लथिली ॥ लंख वलि दया ॥ ॥ वडवा माक्षे
दगुति ॥ क्रे अ सर्व मरु थापिं पूजा ॥ देडा पूजा ॥ यधर्मा ॥ अकाल मरु ॥ सिंधु पू
जा धर्मा का काक पूजा ॥ ॥ अथ लि नय वी नया ॥ ॥ यन अन्य समाधि सकर्ण धर्मा
वलि दया ॥ यन मूला का र्थ या रु डाने च्या रु प लं चाय मूजा नया ॥ ॥ यडा के स्वा
न रु दाल ग लं शा वना ॥ यानु यायि गी वडवा माक्षे नृपां पूष्या या नानिर्ग हान दव गोः

प्रवक्ष्य ॥ नितान्तजननीय ॥ ॥ गीत हा जारुन ॥ यन मूद्रा सहावना ॥ स्वहृदि
रुमयू नार्वे नानिग हानदवना प्रवक्ष्य यथा कर्म ॥ चक्रिकुलुसक छिन्नकर्मस
सा ॥ श्री कोश श्रीमिगार नलस रववेयाचना मो चतिछिन्नपा ॥ अतिटि वित्तिर्न.ग
प्रगल्भ हान स लक्ष्मण गार् प्रवक्ष्य कोश्यादि प्रविन ना ॥ कादि मूद्रा श्री कोश्यादि
स्वरावी नुवमिश्चिन्म ॥ ॥ यन धूपनि लांजन प्रियति पाता प मूद्राया धिछा
न ॥ ॐ श्री हूं प्रजा धूपदी पने वयादि टी सयित् ॥ पृष्ठा न्या ॥ पं ॥ ला ॥ चं ॥ तु ॥ ग
॥ स्वस्वमर्तु न जा प ॥ स्वा लवसि विरा प रू पचा न प्रजा ॥ गीत हा जारुन ॥ नालहा
या ॥ श्रीरुन नै गिरा ॥ गीत च न ॥ प्रहाउल्लोय ॥ नुनिधम हूं का न विजन वक्रसम्ब
न वज्र वाहि वल्लरु मूरव श्री यक्षादि रात्र कानिमा कर्षयित् ॥ ॥ नितान्तजन

॥ यडा कं द वता या न्या ॥ ५ ॥ उप य मं च य ॥ य न मू दं गि य म नु ॥ श्री व ड हं हं नू र
 क हं हं रु ॥ जा कि नी जा ल स म्भ रं स्वा हा ॥ ३ ॥ ॥ राम ॥ ॐ सर्व वृ द्ध दा कि नी य व ड व
 र्क नी य व ड वे वा र नी य हं हं रु ॥ स्वा हा ॥ ॥ प्र हा या सि च ना वा घु र्म ॥ ॥
 ॐ च व र धा व य र व ड ध क हं हं रु ॥ स्वा हा ॥ ॐ व ड वे वा र नी हं हं रु ॥ ३ ॥ च कि ॥
 गृ क द गो म नी वि व व कि नू का ए नू पि नी श्री व ड स ख स्य मू ड रं व हि व ध्मा त्म स लि
 गं ॥ ३ ॥ ॐ व ड ध र्म स म ह्यं क र नू र आ ली ति क रु ॥ स्वा हा ॥ ॐ ओं हं हं रु ॥ ३ ॥
 ॥ क यु ल द र्य ॥ गृ क द गो म नी वि व वा क व ड क र द र्य श्री व ड स ख स्य मू ड र व हि
 ध्मा त्म स लि गं ॥ ३ ॥ ॐ व ड सूर्य गे मा वि ध म य स म य ह्यं म हं न लो ध क रु ॥ स्वा
 हा ॥ ॐ सर्व वृ द्ध जा कि नी य व ड व र्क नी य व ड वे वा र नी य हं हं रु ॥ स्वा हा ॥ ३ ॥

कठिका ॥ गुरुदत्तामना विनयलसं तव स कठिका आवड सत्वस्य मूदयं वहिन
ध्यात्मसंस्कारं ॥ ॐ आश्वापवमाश्वाप ॥ कठिका विनयिकरुद्र स्वाहा ॥ ॐ ह ४
नमहिः स्वाहा ॥ हूं वाषट हूं हूं हूं हूं हूं ॥ ३ ॥ नृचक हूं ॥ गुरुदत्तामना
विनयचक ॥ मश्वात्मकं आवड सत्वस्य मूदयं वहि ध्यात्मसंस्कारं ॥ ॐ हूं हूं हूं हूं
प्रहा धक हूं हूं स्वाहा ॥ ॐ वैं हों यों हूं मों हूं हूं हूं हूं ॥ ३ ॥ नमस्वलात्मो ॥
गुरुदत्तामना विनय नृमाघसिद्धि ममला आवड सत्वस्य मूदयं वहि ध्यात्मसंस्कारं ॥
॥ ॐ आवड हूं हूं नृचक हूं हूं हूं ॥ जाकिनी जात सम्यक् स्वाहा ॥ ॥ नमो नृचक
नच ॥ सनृवगन्तु नृपिपायि स्वावक हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं ॥ यथासु मूदमाता ॥
ॐ कवसु प्रचय हूं हूं ॥ ॐ आदिहि ॥ ॐ नृपिनी य हूं हूं ॥ ॐ हूं हूं ॥ मस्कीमात

मन्त्रं ४ गिरि ह्रीं नाम न पार्थ ॥ ॥ स्वर्वांग उम नूतन गवतु मूत्र मन्त्रं न विरिह न हि म
 न्त्र ॥ गुरुदत्तो म नो विरुख द्वांग उम नू पा प्रकं थी वज्र सत्त्व स्य मूद्रा वद हि ध्या त्म
 सत्त्वितं ॥ ॥ यथा के पुष्पा न्या अः स्वा क स्वा न रु परा द न धर्म दूय ॥ स्वा ल
 वलि विय ॥ उ क मूख को स्वा म मा रु नी ने रु ला रि धी क कं ग व त न ॥ स्वा रु ल हि च कं ॥ वि
 सक्त न ॥ ॥ गाल का य ॥ गच्छ स्वय ॥ पि हा ज या डा स्वा ल व लि पा न १ विय ॥ न म
 स्वा न का य ॥ अ र्था व क्रा उ ग्या दि ॥ ॥ गीत वि श्व स नी नू रु ॥ ॥ अ क ॥ न म
 रु रुं न मा मि रुं न मा न म ४ रुं स्वा हा ॥ किं वि क्त प प नि य हा ग्र ह ० व अ सा य व रु
 ग्र ह ४ म स्या ग्र स रु सा जि गा वि न ग या पा ग पु ना प य हा ॥ ० ३ रुं स स प थ वि पु व द रु
 गी र्थ वि रुं वि वि रुं न हा ॥ वि म्य थी म द या त्म कं व व गु रू व द मू दा स र्व दा ॥ ॥

स्वावा॥ गीतद्वयसिल॥ वलिगभट्टविसर्जन॥ गभट्टलिकाय॥ पादत्रयपूजा
 कर्तृद्वयद्वयकृष्णपातिसुगुवनमस्कात्र॥ **॥ अक्षयव्याख्यानरूप॥** किंचि
 कल्प्यादि॥ **॥** धनगीतनुमदिमलुत. नृपकात्रयम्॥ **॥ वागते**
ववि॥ नमदिमलुतयादि॥ **॥ अक्षय॥** यावकीसर्वसत्तासत्त्वसंग्रह. संग्रहि
 नात्रुजावा. कलायुजावा. संखनजावा. उपपादकावा. नृपिनीवा. नृपिनीवा. सं
 गिनीवा. नृसंगिनीवा. नवसंगिनीवा. नामसंगिनीवा. सर्वगसत्तामयानलामुद्रा
 मन्त्रपदाप्रतिष्ठापयित्वा॥ **॥ स्वावा॥** गीतप्रभुदिन॥ **॥ अक्षय॥** नत्वा सर्वग
 आगनागुतगस. धनपयार्थगुना. आवकासननामद्विगुननी. संसावदासंग्रह
॥ नृपद्वयवद्वयगंदचसंगसत्ताधननगनीया. नानावर्त्मनथागनादित्रयनादह

निष्ठां च ॥ अतश्च महामहेश्वर इति ॥ ॥ यन पंतसायया समया नके ॥ ॐ सुवर्ग
समयस्त्वं हाऽसिद्धि वड यथा सुखमिति ॥ मादमख दोगंधिय ॥ ॐ सर्वथागवि
मूल्यादयामिह स्यात् ॥ अतिहृदि सुवर्गसमयस्त्वं हाऽसिद्धि वड यथा सुखमिति वड
चत्वा ॥ ॥ अथ सर्ववड वाचादि रचि विना रवि विषमि ॥ ह निष्ठा पिं न्ना डा च पिं स
कस्य वड वाचादि नृचि विना नया करु पाय ॥ ॥ नच सर्ववड वड वाचा न हस्य म
भुजप्रतिष्ठा यवक वानच प्रधामव ॥ ॥ च पिं च वड वाचादि या गु न हस्य मभुज स
दी हा डा या गु रव स्या ग काय मद्र भवन च न दव्य न्ना दिंक नान्य नृस्यार्ग क न नद्र ॥
ॐ न्ना रव भु वा ह ह ॥ ॐ न्ना रव वि न ह ॥ हिय क ॥ गभ ह्म लिका रा द ग य न ॥ ॐ न ह न
ग सु द ट स्या स्या सु सु रवा वड स्या स्या सिद्धि मां ॥ यन थ का लि न्ना थ ह प ल ची या गु ति

तय ॥ ॥ **पूज्यनाम** ॥ ॐ वज्र ठाक पूजा प्रस्ता नाया आत्मानि र्थानि क्रियामि ॥ **द**
क ठाक पूजा या य याग य डी स वि न दी ह ल पा ॥ ॐ सर्व न था ग न व ज ठाक अ चि मि
 व मां ॥ **स म र्क** न था ग न व ज ठाक अ चि वान या क रू पा य ॥ **म ध्य** ॥ ॥ ॐ सर्व न था
 ग न व ज ठाक पूजा प्रस्ता नाया आत्मानि र्थानि क्रियामि ॥ **द** ठाक पूजा या य याग य
 डी स वि न दी ह ल पा ॥ ॐ सर्व न था ग न व ज ठाक अ चि मि व मां ॥ **स म र्क** व ज ठाक
 अ चि वान या क रू पा य ॥ **पूर्व** ॥ ॥ ॐ सर्व न था ग न व ज ठाक पूजा प्रस्ता नाया
 आत्मानि र्थानि क्रियामि ॥ **न ल** ठाक पूजा या य याग अ रि ष्य क ला य याग डि मि अ वि न
 दा ह न पा ॥ ॐ सर्व न था ग न व ज ठाक अ रि षि र्क मां ॥ **स म र्क** न ल ठाक अ रि ष्य
 क वि डी रू पा य ॥ **द र्दि** ॥ ॥ ॐ सर्व न था ग न प द न दा क पूजा प्रस्ता नाया आत्मा

निर्यातयामि॥ **समस्तं** गथागन पद्म आक पूजा प्रवर्त्तना याय याग किमि सुविनः
दाह तपा ॥ **ॐ** सर्वगथागन पद्म आक प्रवर्त्तय मां ॥ **पद्म आक** नैवर्त्तक कर्म प्रव
नय प्रवृत्तपाय ॥ **परिधिं** ॥ ॥ **ॐ** सर्वगथागने विष्णु आक पूजा कर्म आत्मानि र्था
न्यामि ॥ **विष्णु आक** पूजा कर्म स्या याग किमि सुविन दाह तपा ॥ **ॐ** सर्वगथा
गन विष्णु आक कूर्च मां ॥ **समस्तं** धर्षि न विष्णु आक कर्म याक न का या क र
पाय ॥ **उग्र** ॥ ॥ **हर्षे पूर्व द्वा व स** ॥ गुर्वच न नी प्रह्ला ना या आत्मानि र्था न्या
मि ॥ **गुर्व** याच न स सिद्ध या याग किमि सुविन दाह तपा ॥ **सर्व** सत्त्व विग्र
नार्थ ॥ **हर्षे** **गुर्व** **समस्तं** सत्त्व प्रा नि न का या याग ॥ ॥ **अथ** सर्व वज्र वा ना हि कूर्त
प्रविष्ट ॥ **हर्षि** **व्य** पिं न्द्रा इष्ट पिं वज्र वा ना हि या कूर्त वा हा डी ली ॥ ॥ **गद हर्ष**

वज्रहानं प्रत्यादयामि ॥ **कीन** वज्रहान उत्पत्तिर्याना ॥ ॥ येन हानेन सर्वकायका
 सिद्धिर्वापि ॥ **गुगु** हानं च पिंसक सारं वज्रकायसिद्धिस्तथा ॥ ॥ प्राप्स्यसि
 किं नूतान्यासिद्धिः ॥ **मेता** सिद्धिश्चाप्युत्तिर ॥ ॥ न तत्त्वयदं नृदृष्टमनुत्तमस्य
 नगावकव्यं ॥ **चमिस्यं** चरवदेखा मलाक कृयाहुडाने क्रायमथा ॥ ॥ मार्कस
 मया व्यथामि ॥ **क्रासा** चक्रपत्रमथ निरागुचक्रयाव क्रासा गधं व्यथानकय ॥ ॥
खड्गंगमाद सधिय ॥ नृयने समयावर्जं मूत्रानस्त्राययद्यदि त्वं मिमाकस्य वि
 दूयात् ॥ **ध्वसम** यवज्जु मित्तसयात सचीनडात ग्ववेत्तं चरव चमिस्यं स्या हं
 डाने क्रासा च मित्तसयात चतुदायापि दाडाय ॥ ॥ **हने** खड्गंग नृगले न
 या ॥ **उं** वज्रसत्त्वस्य गंशुददयं समवस्ति न ॥ **नडा** हने च मित्रगले समयवज्जु च

डास ॥ ॥ निरिद्यनरुत्तयायागुयदिबुयादिमंनयं ॥ **आडा** ॥ **ॐ** निरिद्यनरुत्तयायागुयदिबुयादिमंनयं ॥
मलाकन्मयाहुडा न ग्ववेलं क्लागसा ॥ **ॐ** निरुगलेवलरुत्तयायागुयदिबुयादिमंनयं ॥
गलेनसा ॥ **ॐ** पिंनका रुय ॥ ॥ **ॐ** न्याहाप्य ॥ जिषा मलुलउयके ॥ ॥
थनकमपाननाद्रुसगया ॥ ॐ यके नाविक वा नि समया नि कुमादहन ॥ **ॐ** निरुत्तयायागुयदिबुयादिमंनयं ॥
जिषा पिंनमावसुक ननकया नूनिग्गवप रुया वा गु. ॥ **ॐ** निरुत्तयायागुयदिबुयादिमंनयं ॥
यागडास ॥ ॥ समयंनरुत्तयायागुयदिबुयादिमंनयं ॥ **ॐ** निरुत्तयायागुयदिबुयादिमंनयं ॥
गुर्कगलसा नूनिग्गवप रुय न कायाय सिद्धि लाय. गाडा नूनिग्गवप रुय ॥ ॥
ॐ निरुत्तयायागुयदिबुयादिमंनयं ॥ **ॐ** निरुत्तयायागुयदिबुयादिमंनयं ॥
ॐ निरुत्तयायागुयदिबुयादिमंनयं ॥ **ॐ** निरुत्तयायागुयदिबुयादिमंनयं ॥
ॐ निरुत्तयायागुयदिबुयादिमंनयं ॥ **ॐ** निरुत्तयायागुयदिबुयादिमंनयं ॥

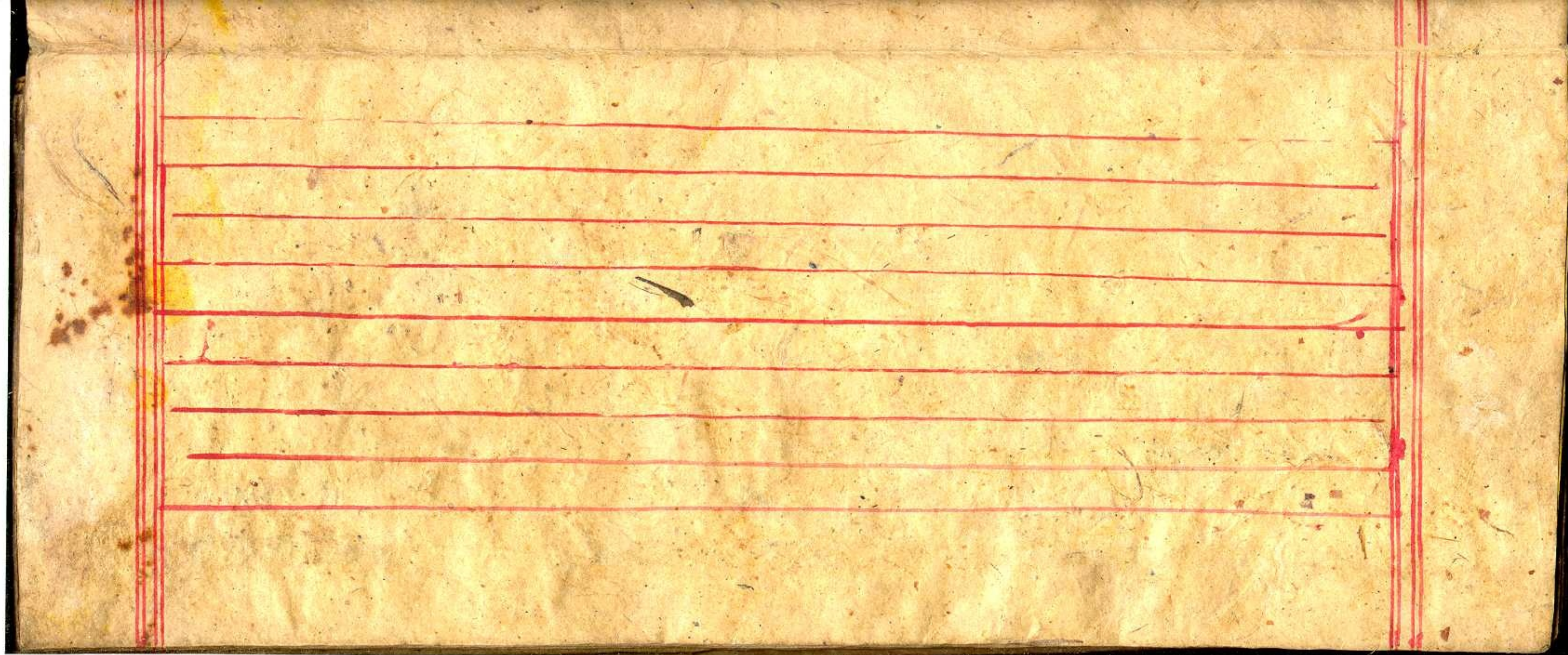
थयाडा ॥ नचलया हं नचमं नद्या मां नवि स मापवि हं नचक नक्रिया कृत्वा
 ॥ किं च या च मया न सा कृत्वा न ल म द य कं सं सा किं न सं दि का थं वि सं दि का न य ॥
 ॥ नचकं प न नं स्या दि मि व दं ॥ ॐ विं सि य नचक सं कृ ति डा न्य धर्म डा ॥
 ना पा य नचक सं तु ची ने मा ल्य ॥ ॐ नि स म या दा न वि चि ॥ ॥ य न मि ष्य
 यिं यिं यिं म यि य कं न य ॥ आव स रा व ना ॥ न न ३ नृ य स र्व ग थ ग न अ चि मि ष मां
 ॥ न न स्ति न वि क्ता या ग न व ज स ल यो गं सृ द च मा न वा ॥ स टि नि शु न्य ना न क र्व आ का
 का न ज मि ना रु नृ प नि ष्या च स र्व ग थ ग न अ चि मि ष मां ॥ व ज स ल म आ वि न हि मि
 वा च यि लो न स्य ह दि नं ज्ञा न व ज्ञां क ॥ च तु को नं पी न पृ थ्वी वि म भु ले सूर्य नी त हं मि
 न मि व र व शु क व रु न क आ क ॥ वा नृ त म भु ले च चै शु क ह ३ का न क ह ० य का न ज

चत्पताकाद्वयं ॥ कथन्वाहं नीलाननममलुलचन्द्रवर्कश्रुकावविहाय ॥ खद्वि
उवमिहिलिखित्ककायवाग्वजानानीययथाकर्म ॥ गत्सुगावेषहं ह८६
श्रुकावष्यकहाय ॥ पादद्वयावधसा. वायुमलुलीदीपित ॥ नजानवर्दीकानू
तमिकानरुचिबलननमलुल ॥ नकजेकावधिव्यक्तिव्यमानमिष्यजे८७
नेनलिसमूह८॥ पादशुषिप्रविष्टहंकायादिवज्जिहिआ. पूर्यमान. समस्त
विवंधमयान् ॥ ॥ गालजाय ॥ धनउमवृथासंधूपयारमन् ॥ इंश्रवसय
नोरयननववचावय२हं ह८७आर्ष ॥ धा १०८ ॥ गीतनमोहं ॥ ननकन ॥ मि
ष्यमलुलउयकं ॥ गमथा ॥ ॐ श्रयंमलुलननयामिष्याप्रवेमिनी. यथापूर्य
तथेवालुदेवतानांकलकनान् ॥ ॥ धनपूष्यननयकं ॥ ३१ हद्वारुखांकनकं

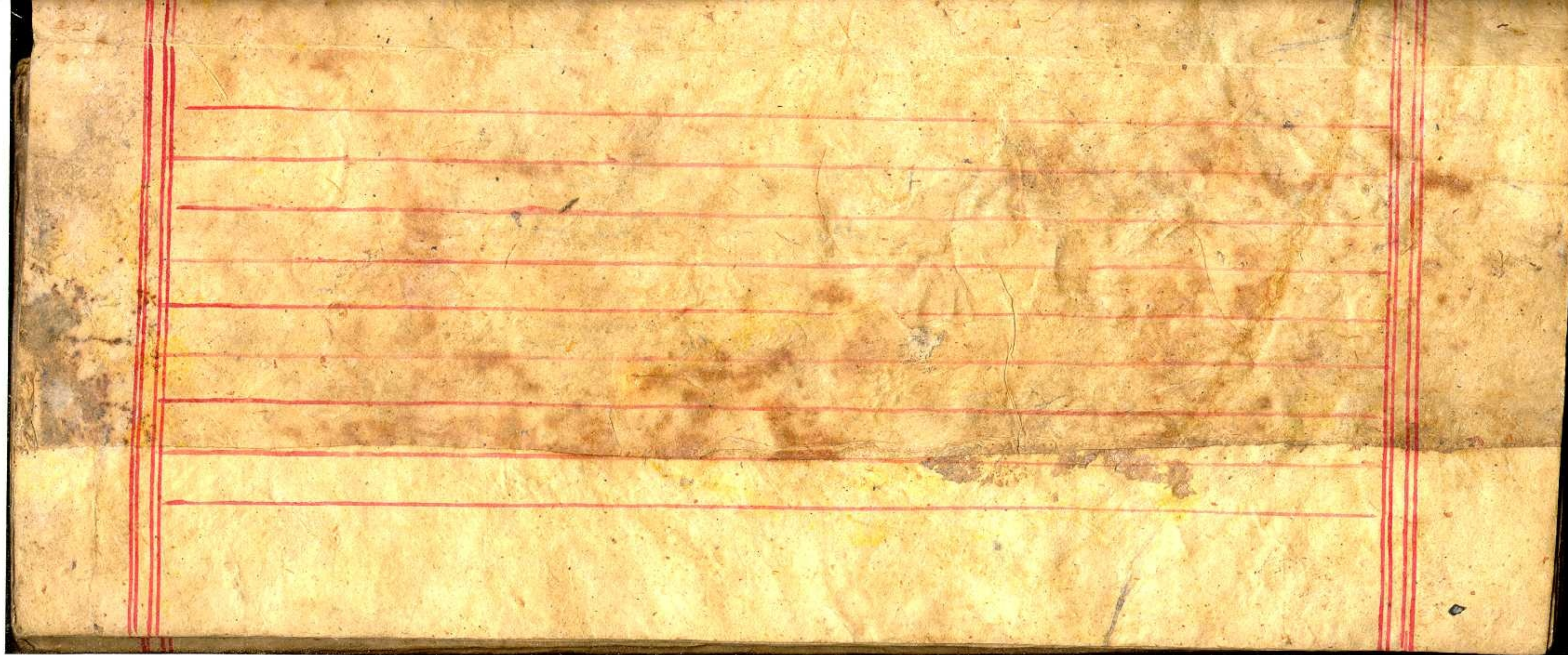
हाथ जोड़ लपंग यक ॥ **ग्रा ॥** उँ गिब वज्र दृष्ट मेरु वज्र ॥ गामे वद दयं ॥ धिगि
 वृ सर्वसिद्धि मे प्रयच्छ हं हृ हृ हृ हा ॥ आर्ष विव हं प्रगिरु कसुमा ऊँ सि नाथ हा ह
 ॥ **॥ गदनू गिष्य ॥** हृ हृ हृ हृ प गिललाग लं हृ नृ प्र वय ॥ स काल डं हृ य वि
 राया ॥ **॥ नृद्विपगन को कायक ॥** उँ हान च हृ हं ॥ नृ खा हा ॥ पथन नृ च प
 न नृ यनय गृ ह वज्र प ॥ **॥** दडा ख चक मनुत स पूजा या चक द हृ हा द र ह
 यक ॥ **॥ ॐ द ग ल म बु लं प ॥** अ अ व र ग न संप्रति ॥ **॥** द हृ हा ग या डी ध
 मनुत सय ॥ **॥** लं च वृ ह क लं गा ॥ नृ द म नृ नृ चि वि ग ॥ **॥ हृ गिष्य पिं नृ डी ॥**
 हृ पिं वृ ह या क ल स जा ग ल मृ द म नृ नृ चि वि ग न या ना ॥ **॥** संपदा सर्वसिद्धि नां
 ह मया ॥ **॥** हृ विष्य सि ॥ **॥ संप्रति सकल ॥** सिद्धि या प ल व लु ग ल प द लाय ॥ **॥** वज्र प
 ग्रा ग ल उँ नृ म नृ व्वा ना ध नां क नृ ॥ ॐ गि प ० यि स्वा ॥ **॥ वज्र ॥** प नृ डी म नी हृ र्षि ह आ

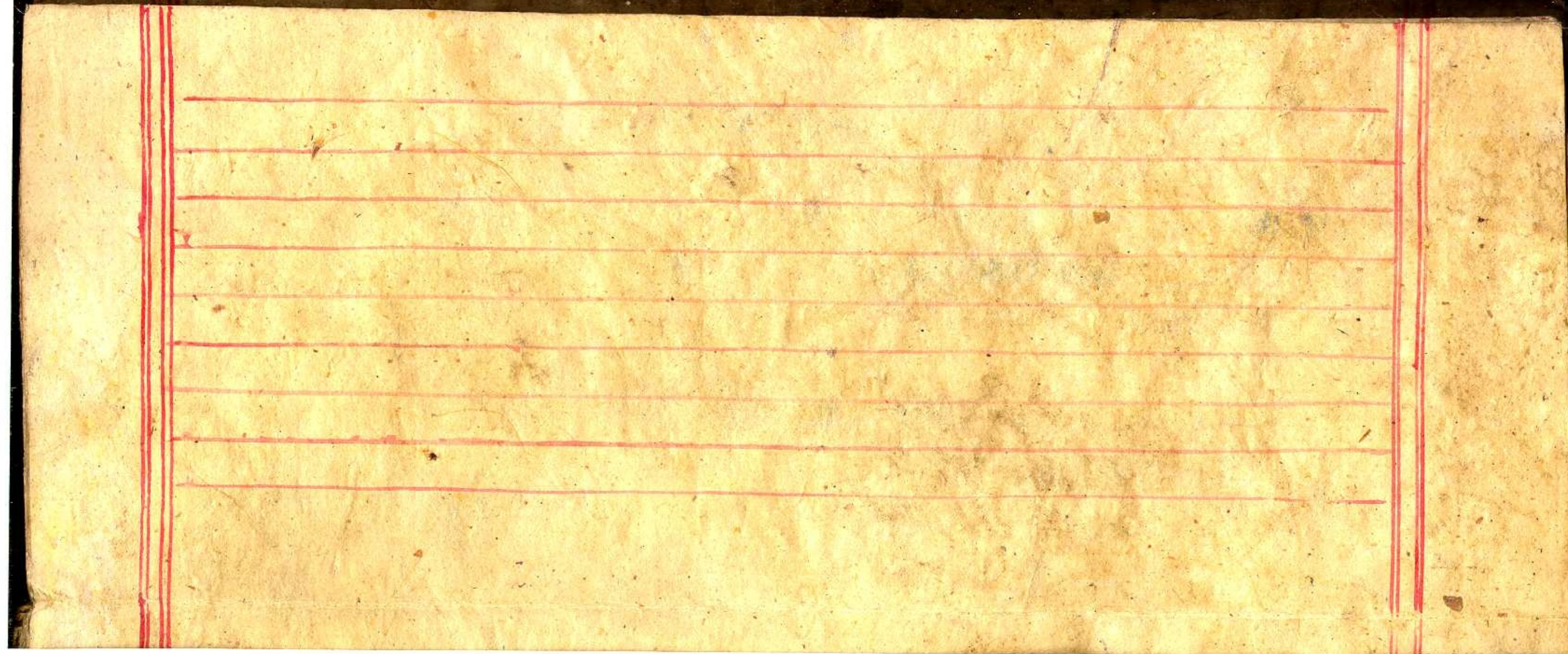
डा म झ ल या ना चां म नु आ ना ध ना या दा ॥ ॥ ध न गि ष्य न ध य के ॥ व ड म लु
लं म हा म लु लं प्र वि ना हं ॥ व ड म लु लं ग र्ध म हा म लु लं स कि पि दा हा ड य धू न ॥
या ग म लु लं म हा म लु लं द र्जि ना हं ॥ या ग नं उ त्प दि रू या चां गु ग र्ध म लु लं कि मि र्णं
स्व य धू न ॥ ॥ गु य म लु लं म हा म लु लं दि कि ना हं ॥ गु य नं गु य म लु लं ग र्ध म लु
लं स्व य धू न ॥ ॥ हा ३ ० गि पा य री ॥ हा हा हा कि मि म हा हा ग्ध ल या या पा
द प्र सा द म्भा कं कि मि र्णं ला य धू न ॥ ॥ ध न म लु लं या र्व क नं ॥ ध न स्वान रू क या र्व
क नं ॥ हा सि ष्य पिं ड मि त र्ध हा ग्ध पू र्वा का व स प न म ग्ध वी या के सि ड म या ना ग या द
धु गु या र्प न्य नं य न म ग्ध वी या द र्जि ने ला ग ॥ ॥ मि लो षि षे वा पू र्वा य न कि ॥
मि ल स रू ग हा म हा मू द्रा सि दि ॥ ॥ ली च नं वा मू र्व वा म नु सि दि ॥ मि र्वा स मू उ स

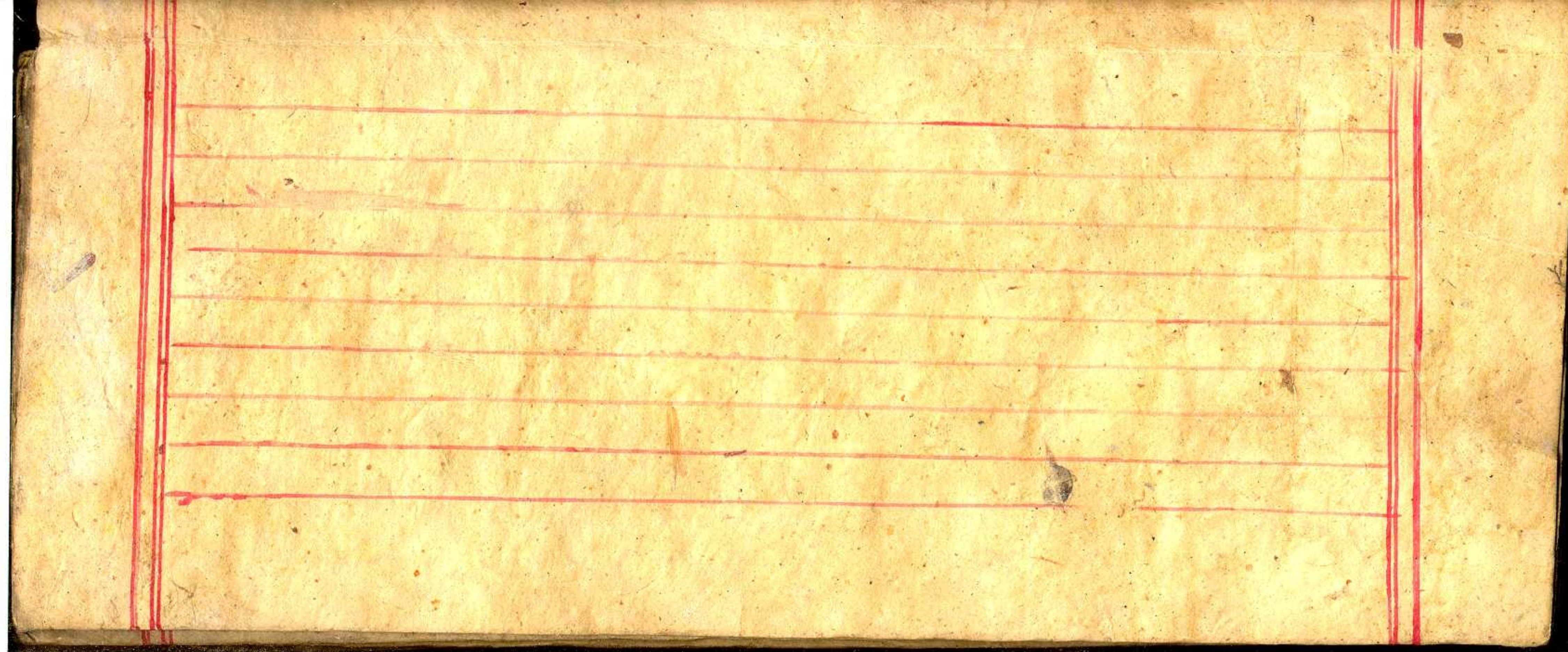
रुगसा मन्त्रसिद्धि ॥ ॥ उद्गमांश उद्गमसिद्धि ॥ वाहा सरुगसा उद्गमसिद्धि ॥ ॥
 मध्यमांश मध्यमा ॥ वाध सरुगसा मध्यमसिद्धि ॥ ॥ अक्षरांश अक्षरसिद्धि ॥ गु
 ति सरुगसा हरिकुसिद्धि ॥ ॥ प्रिलेखात्पनिगति किप्रसिद्धि ॥ प्रिलेखात्पनिगति
 सा हरिसिद्धि ॥ ॥ दया देवमानक ने प्रगति दयासिद्धि ॥ निष्क देवमाया नूक य
 रुगसा निष्क देवयासिद्धि ॥ ॥ जगु नद्यां दावर्ग कपगति गल्कलैरवति ॥ यं गु
 लि स्वलि सरुगसा गुगुति रुग उा क्रयासिद्धि ॥ ॥ वाहवगुलेखात्पनि वजाव
 लि वहि श्वनासिद्धि ॥

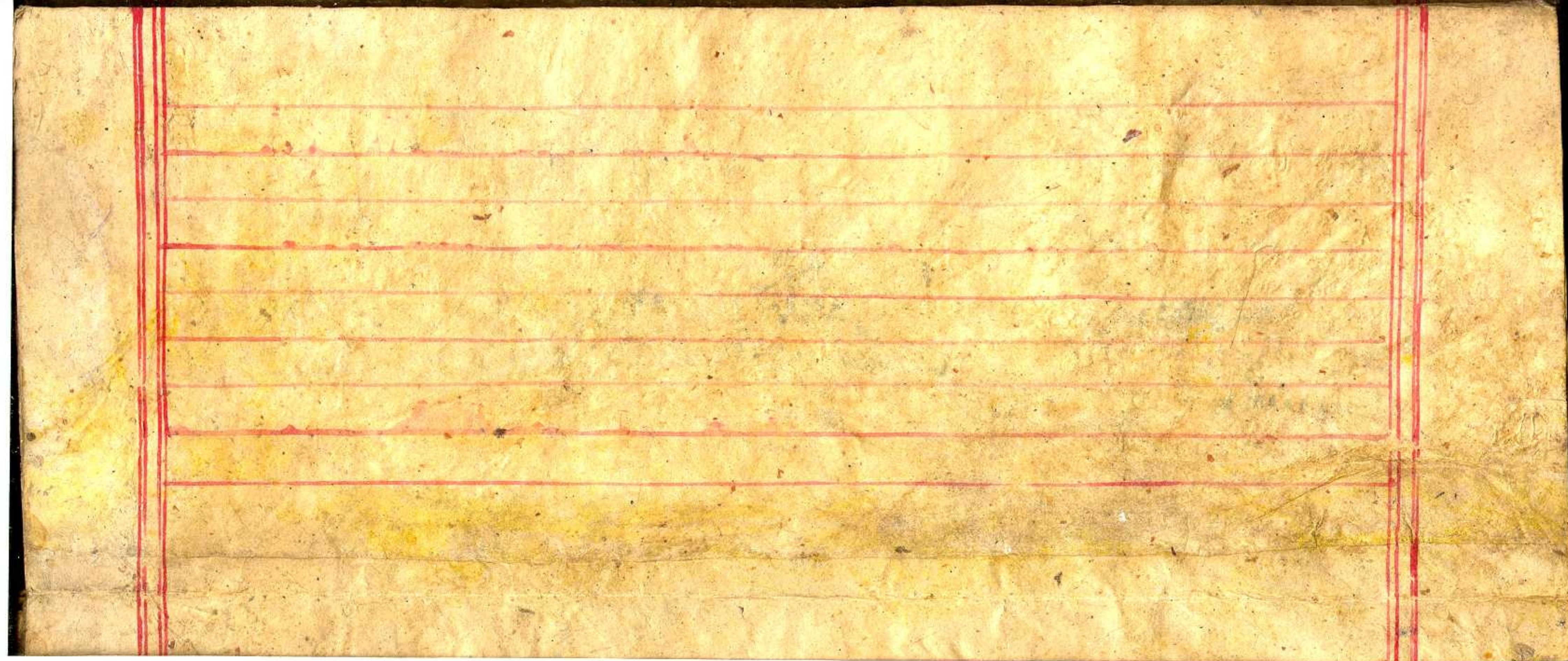


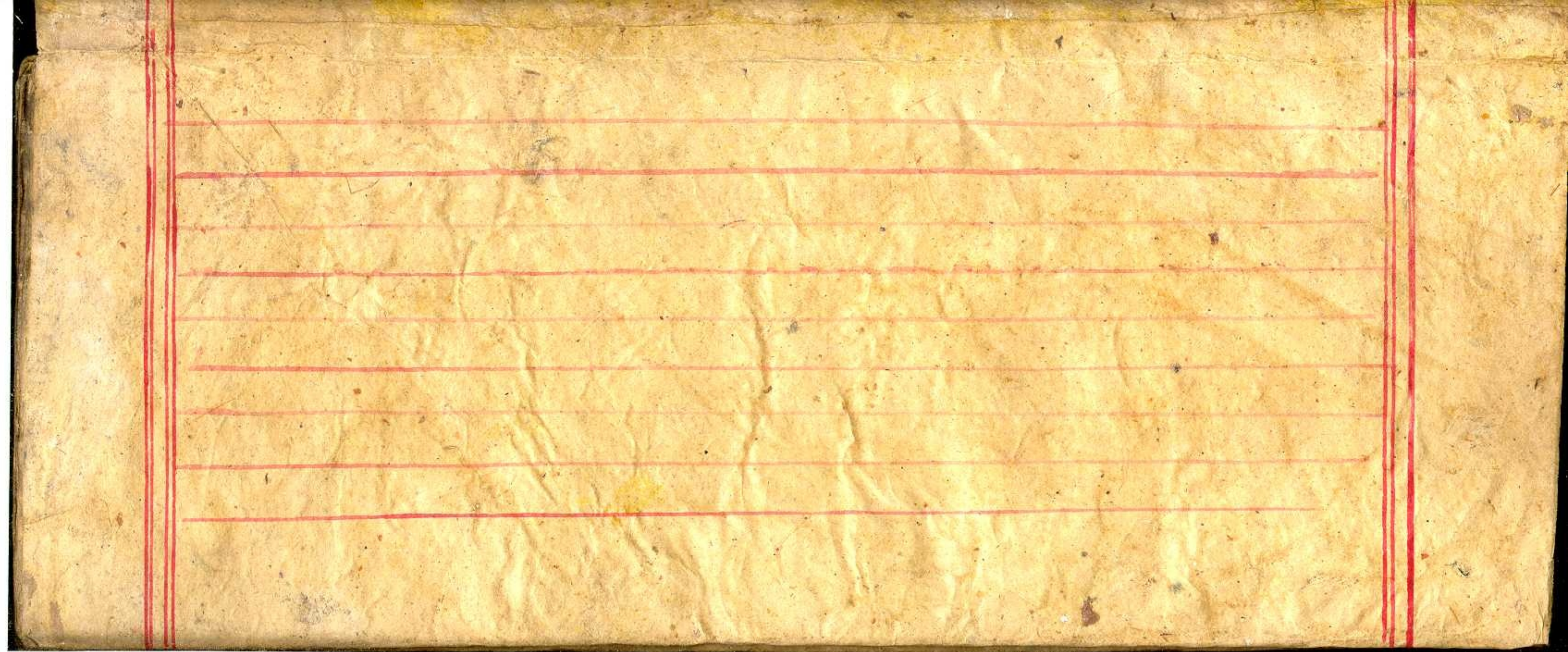
۹۲

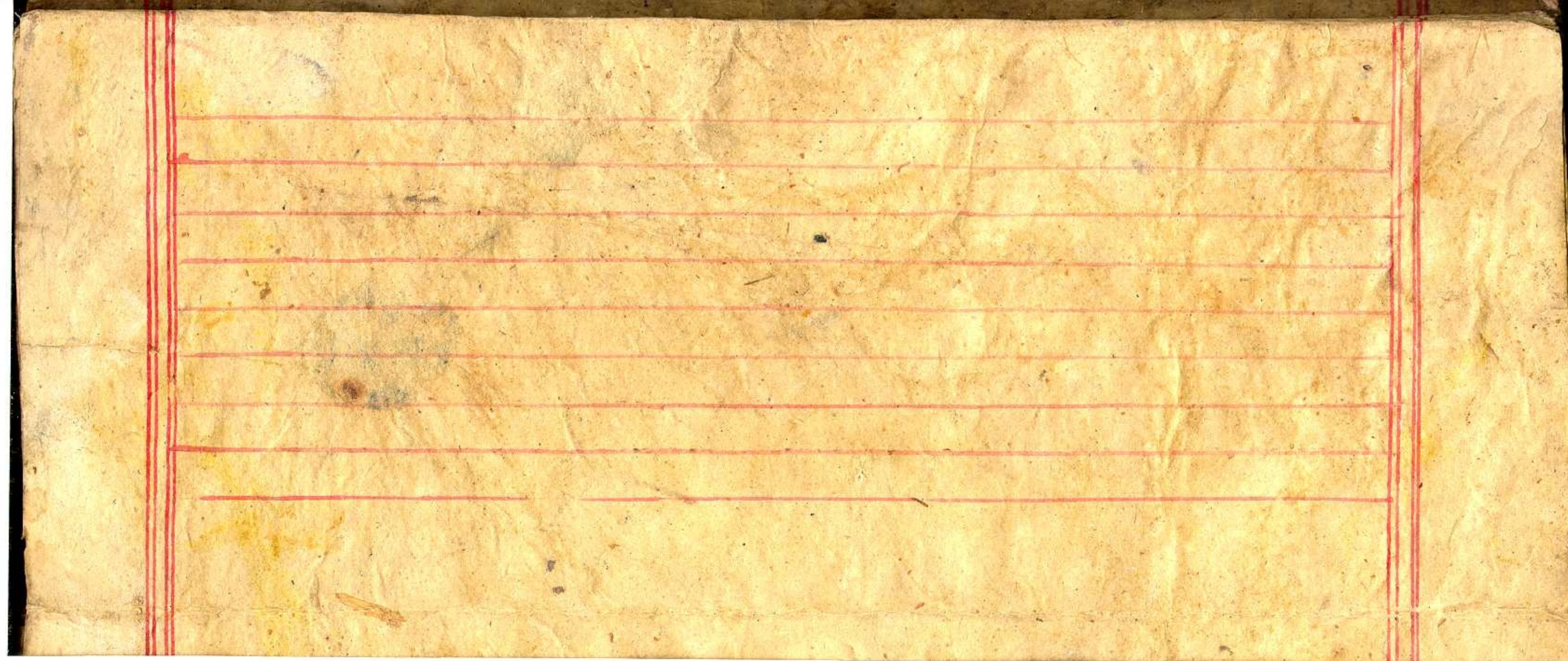


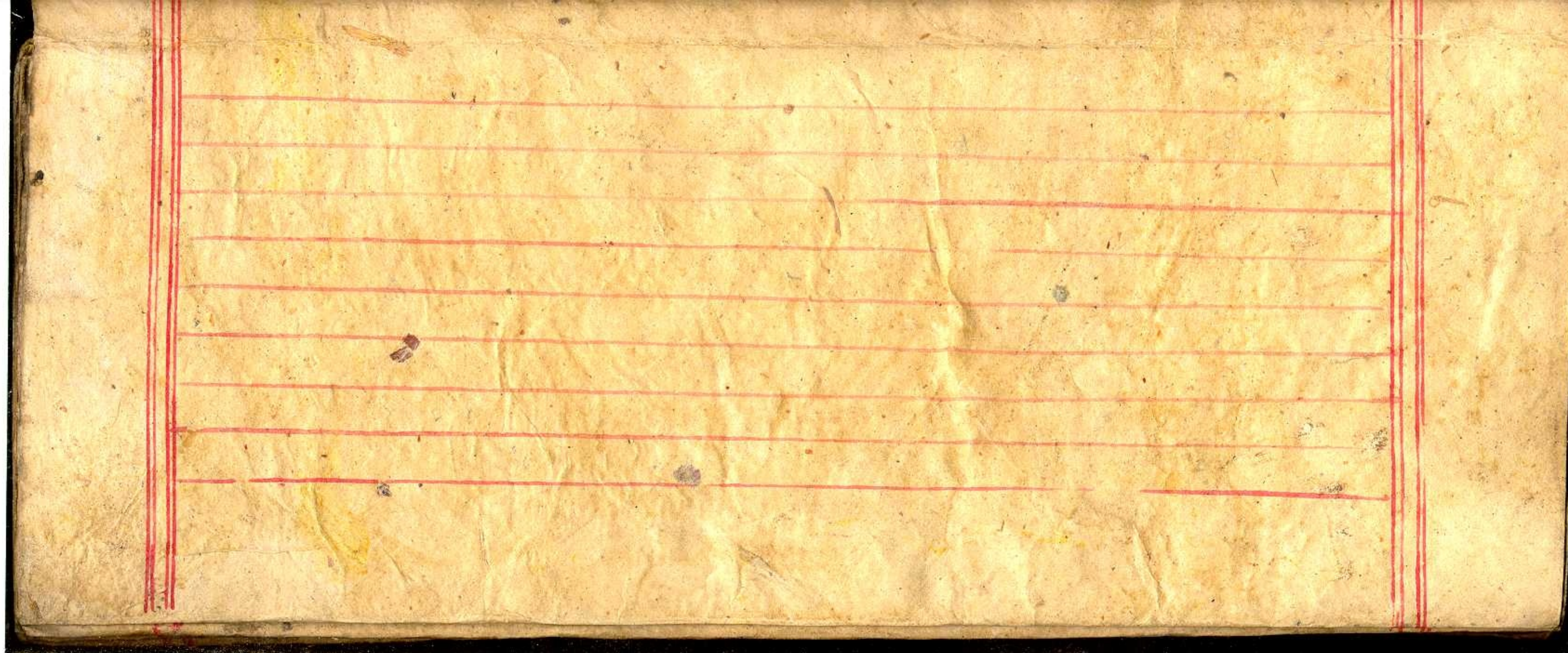


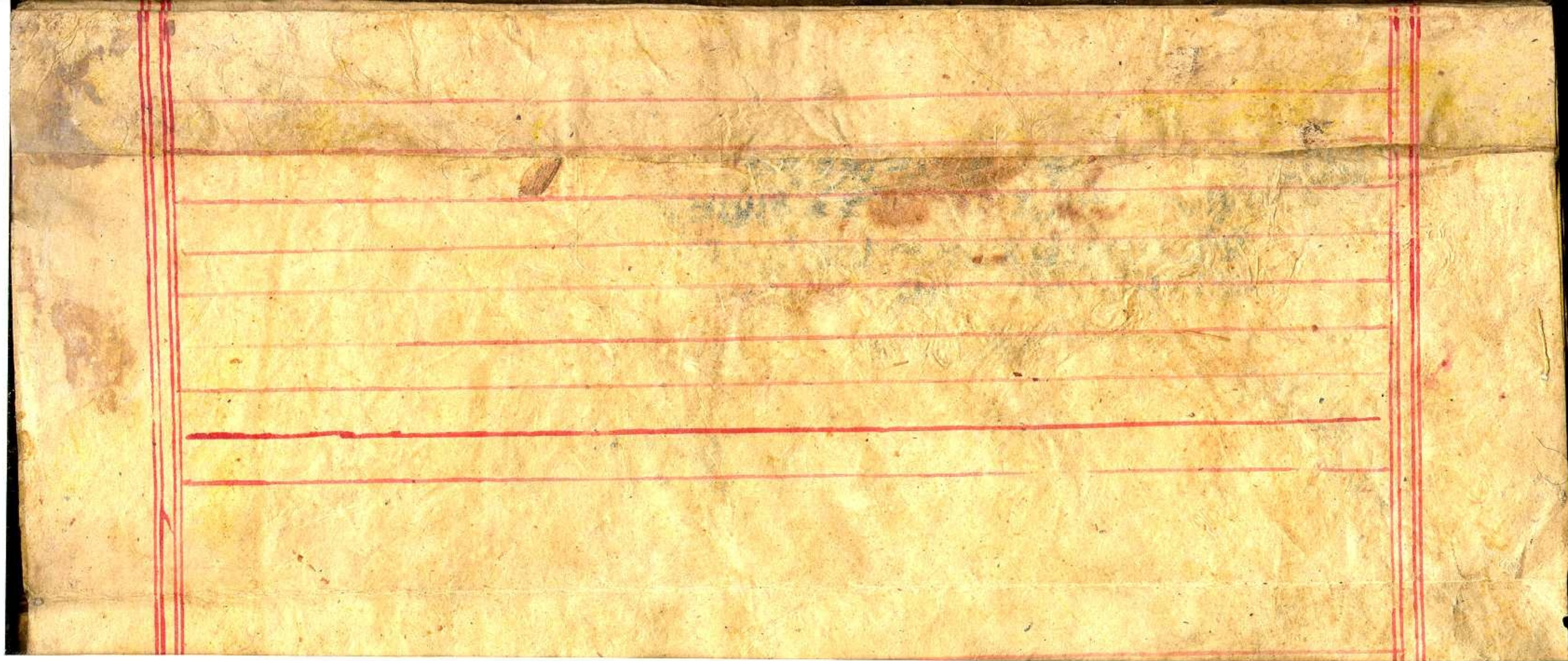


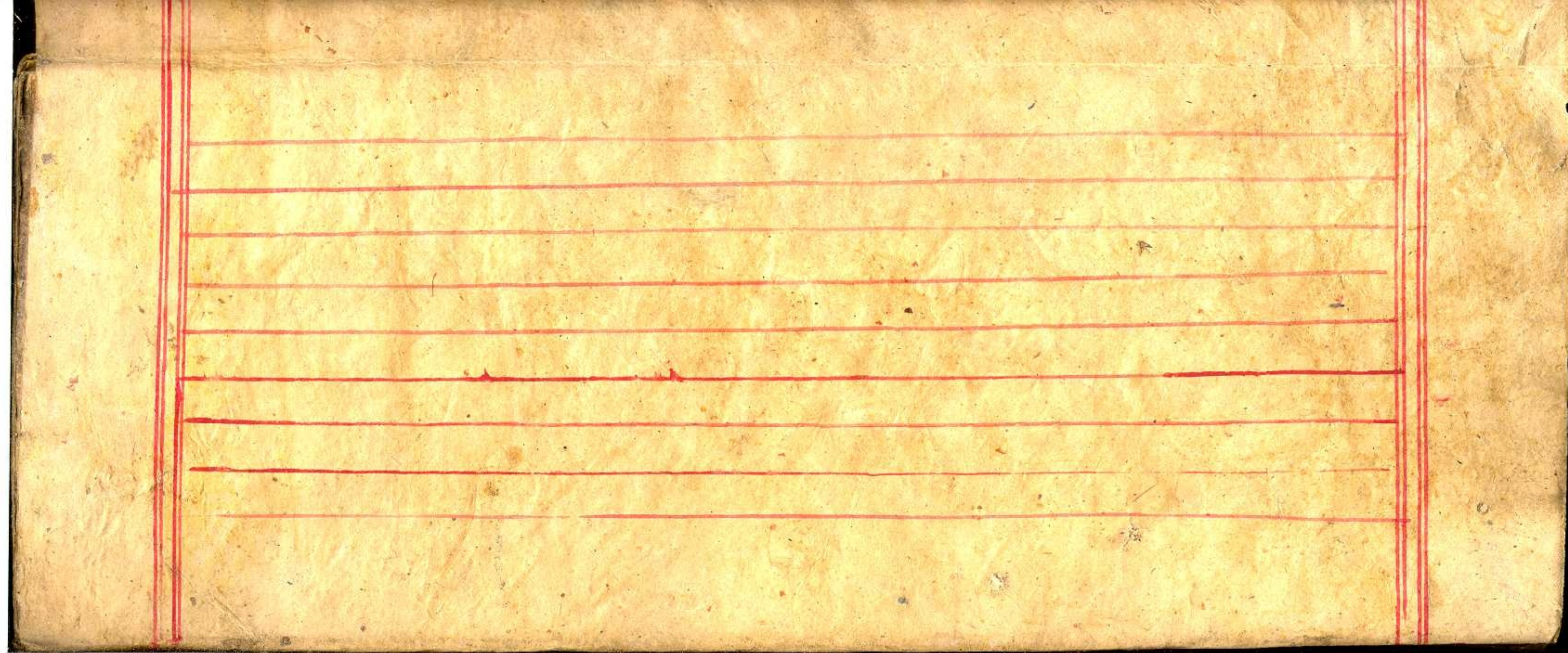


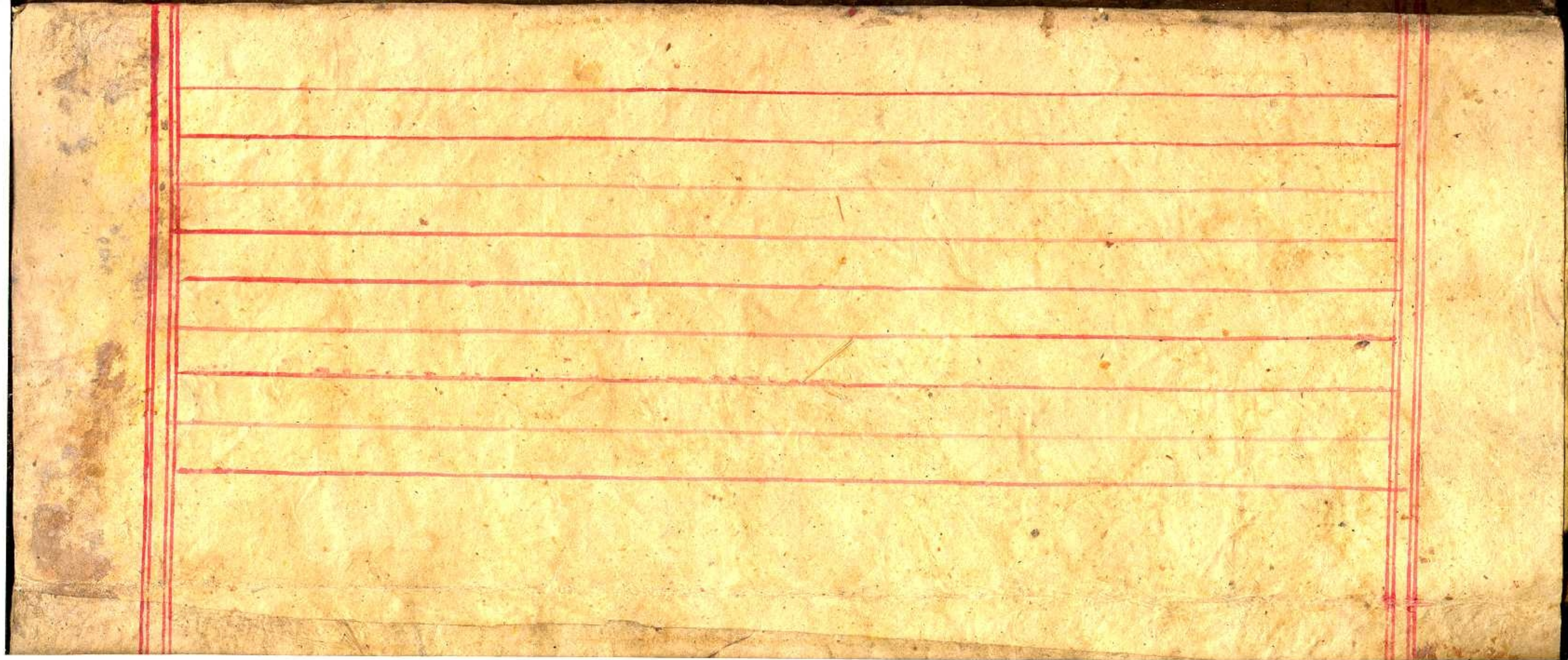


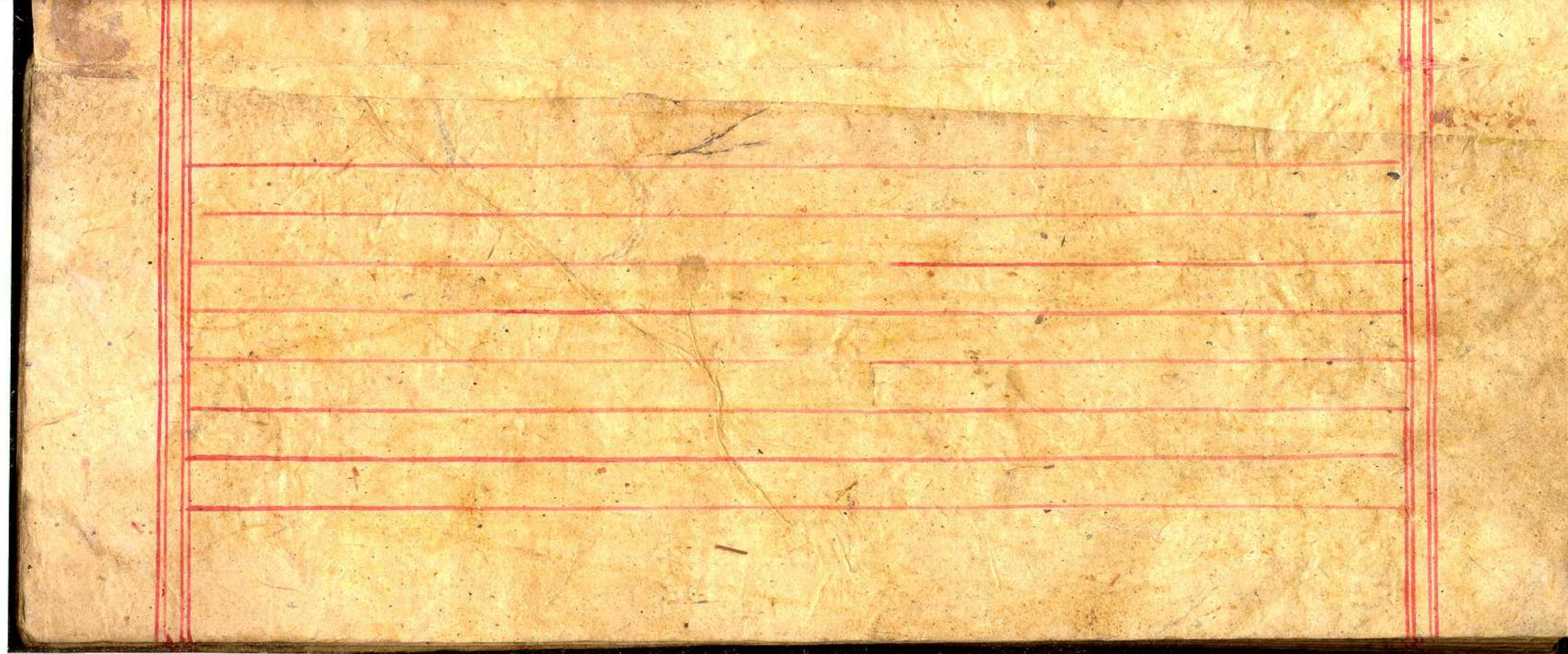


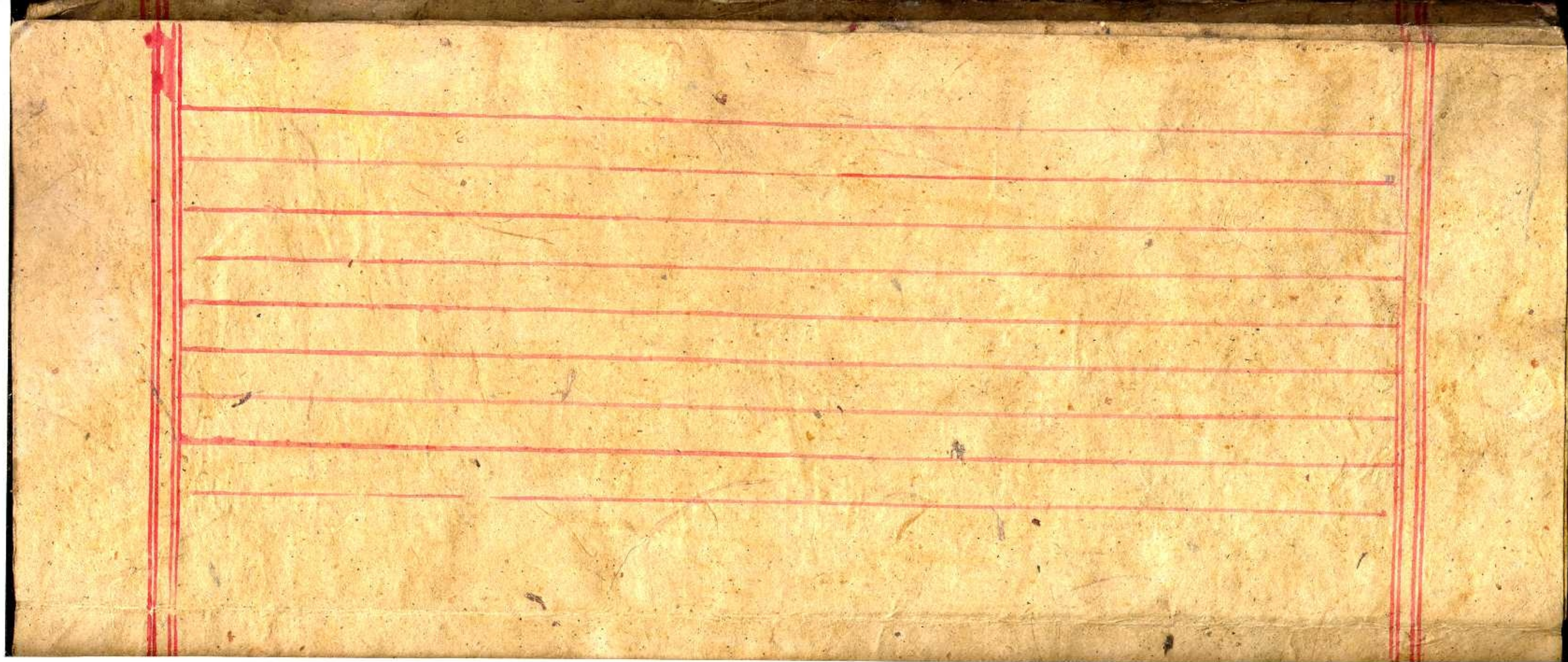


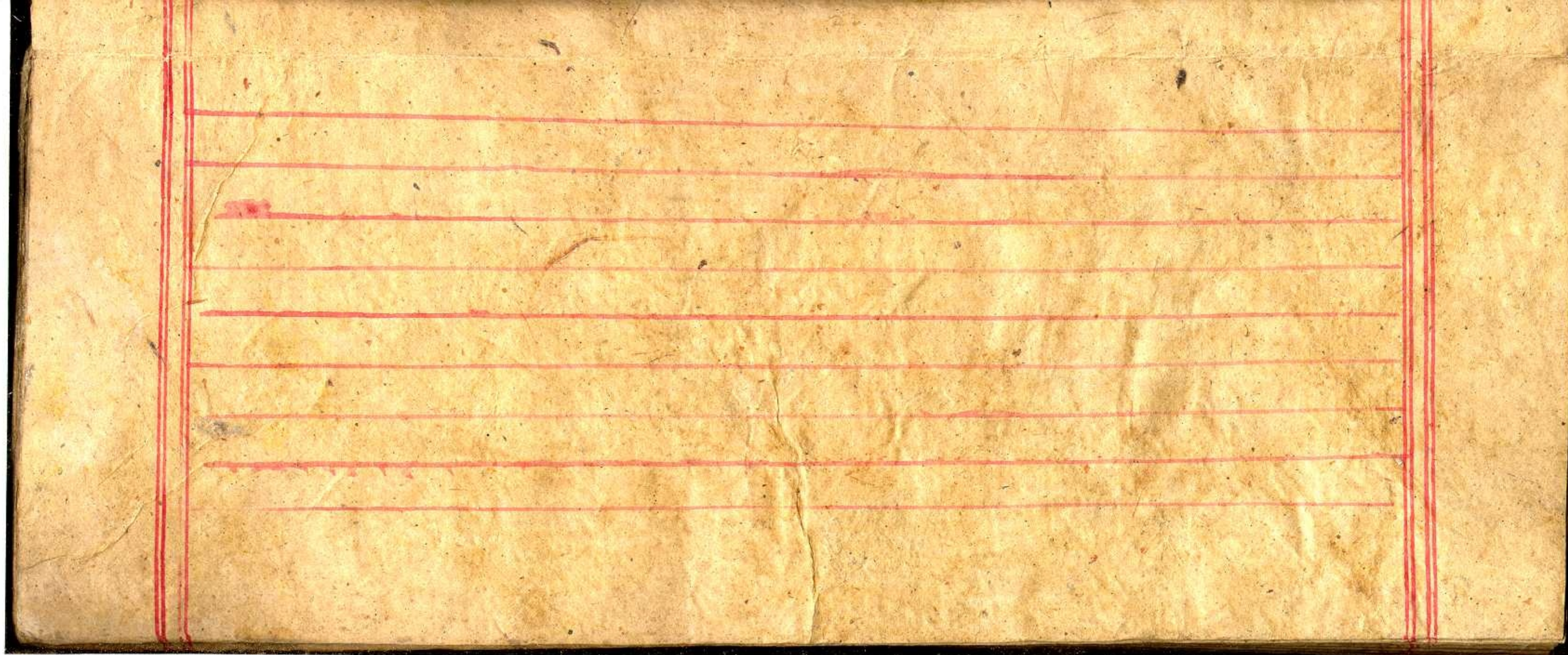


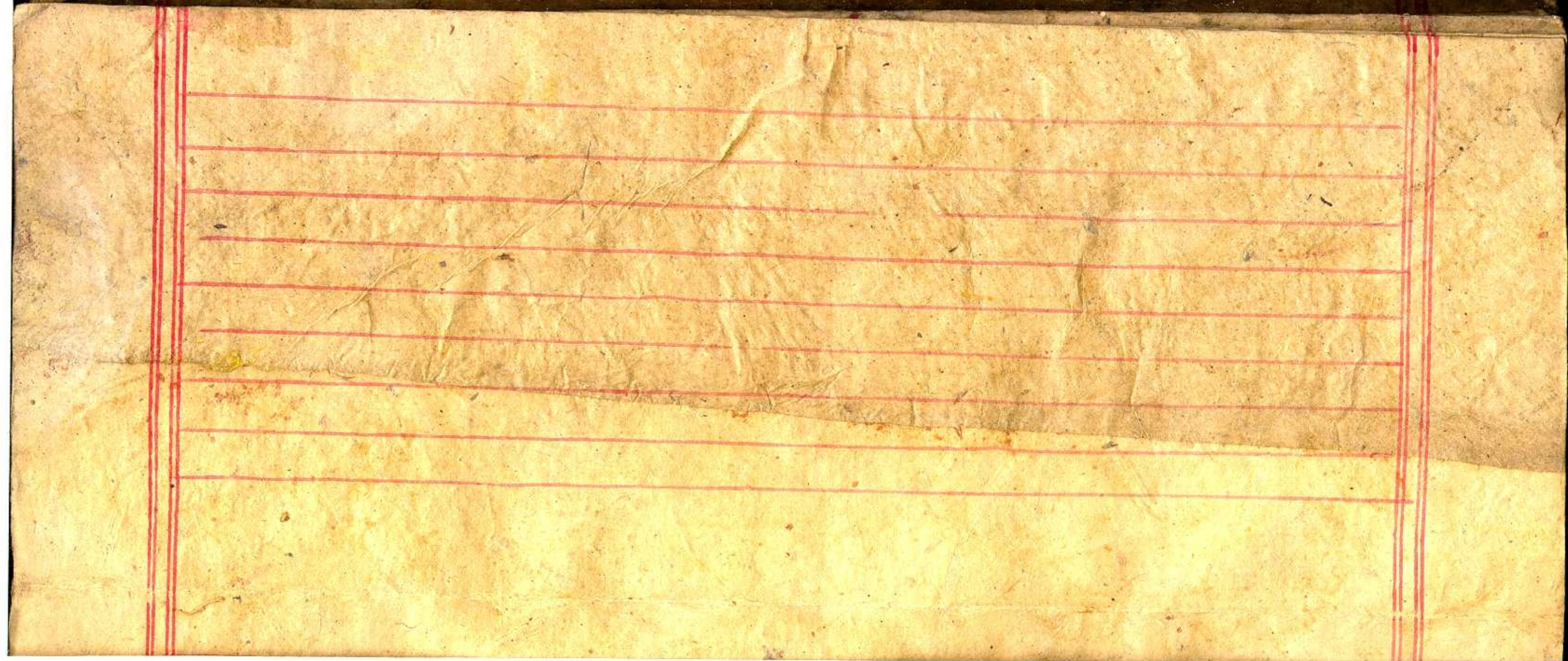


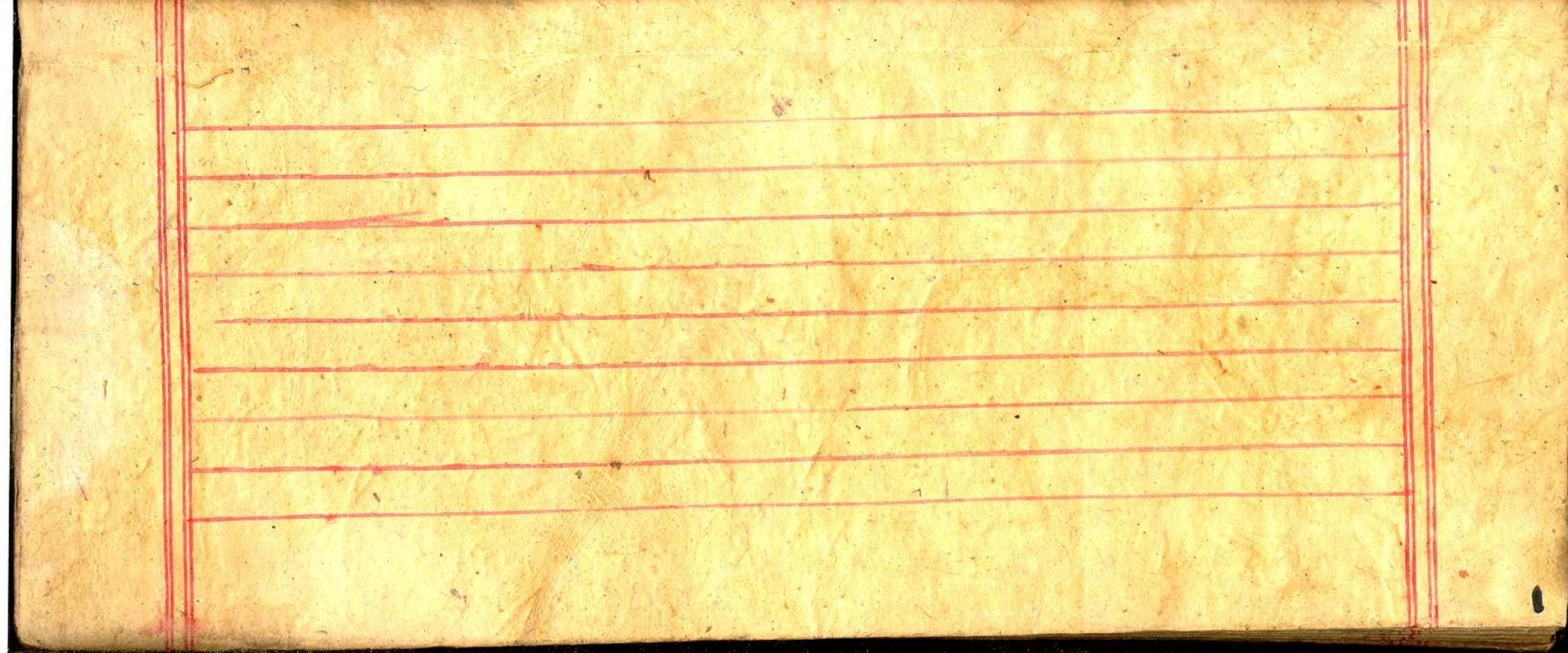


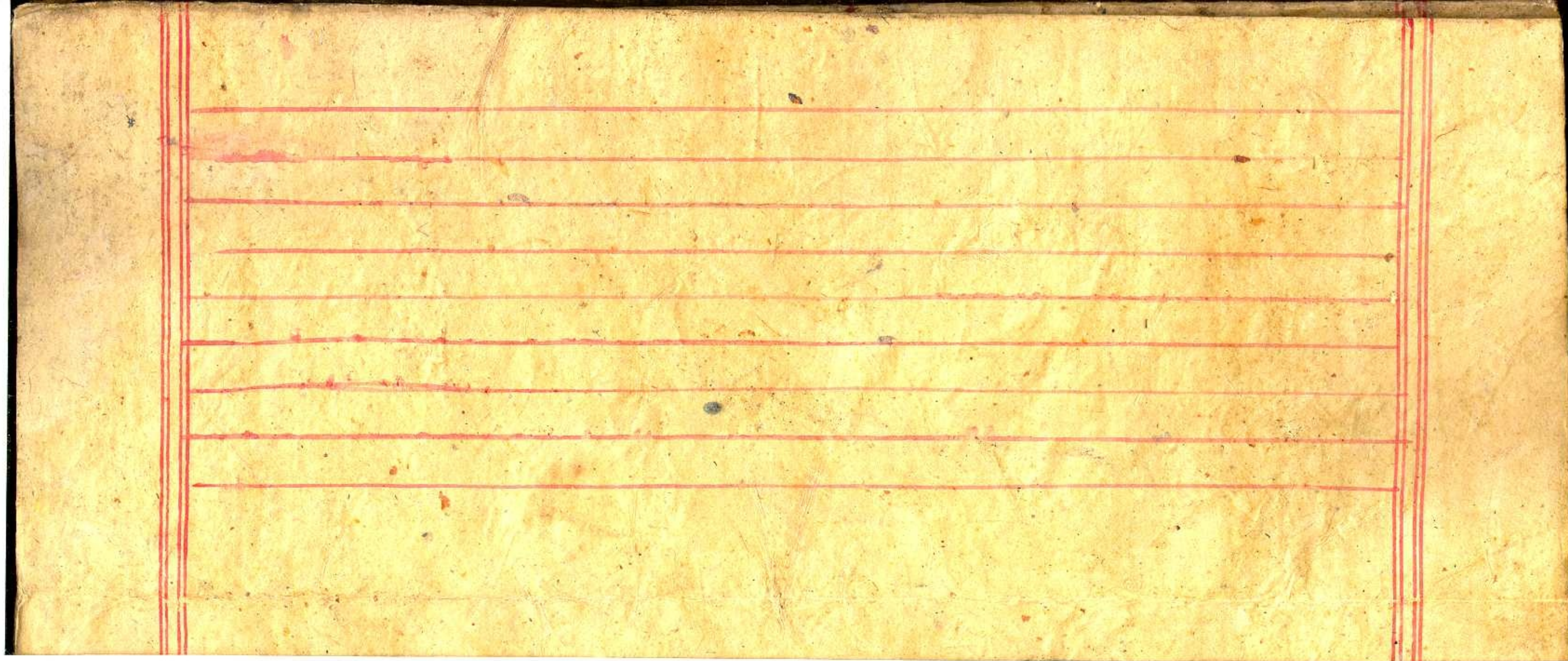


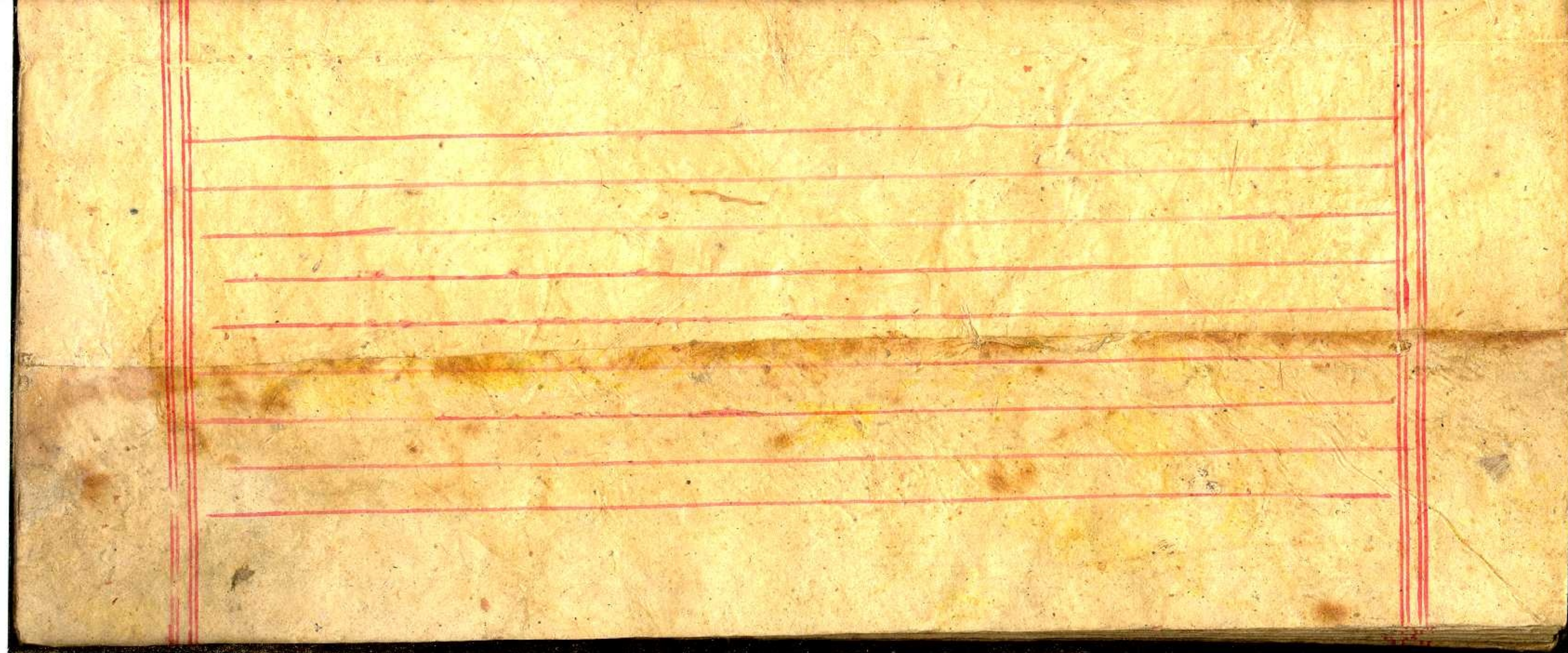


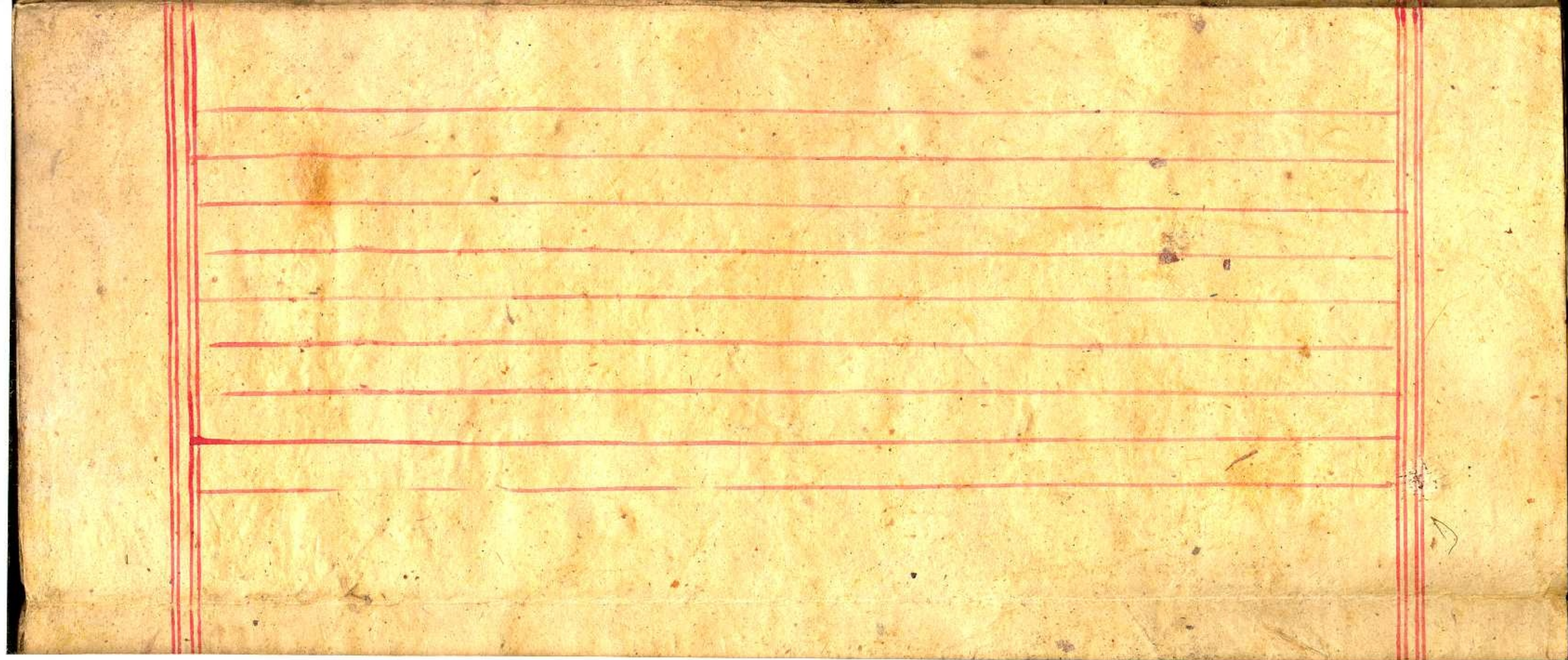


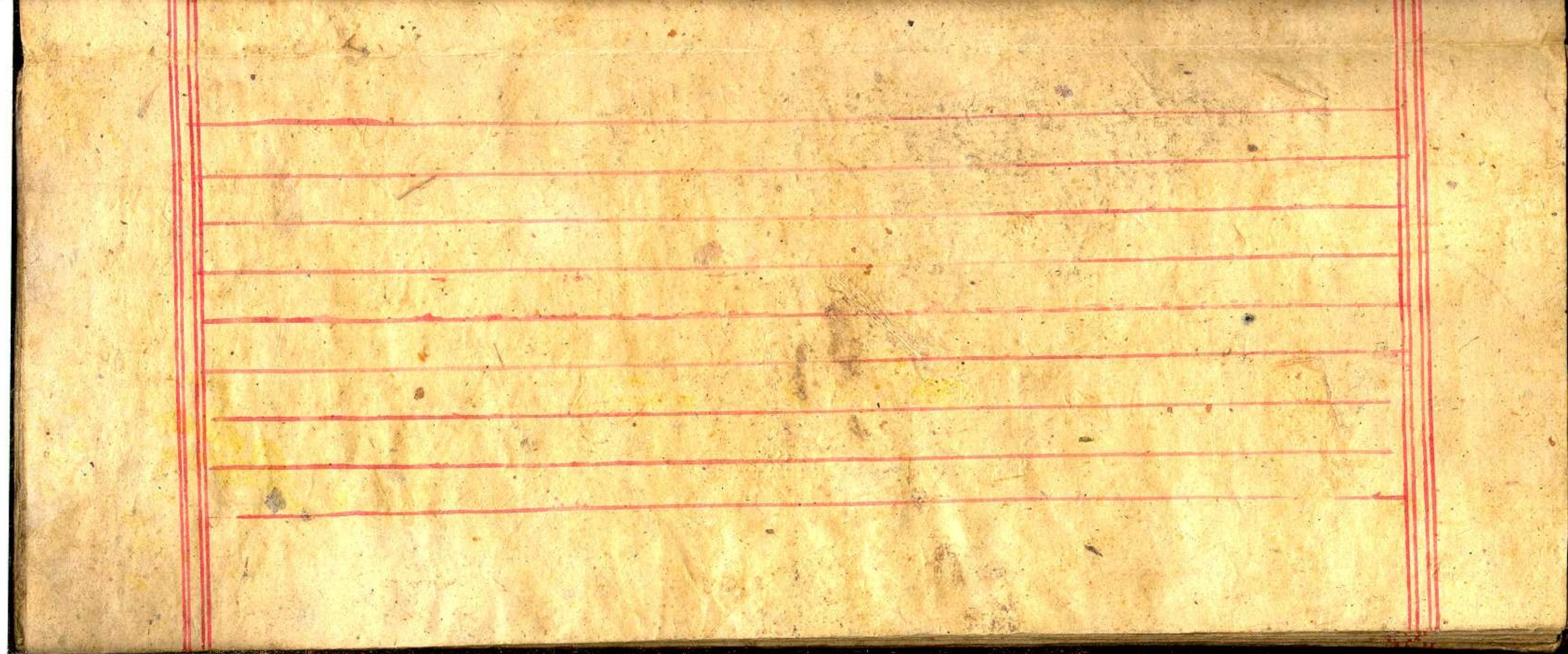


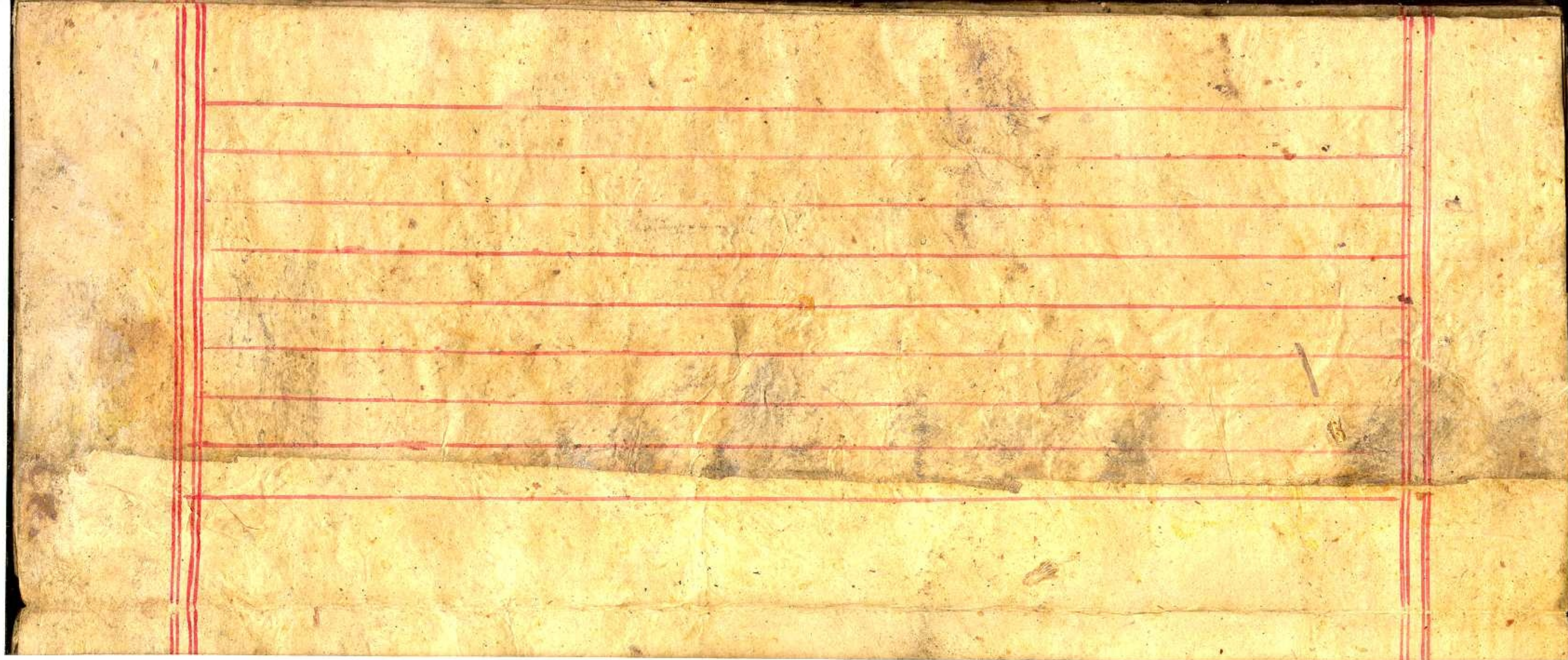


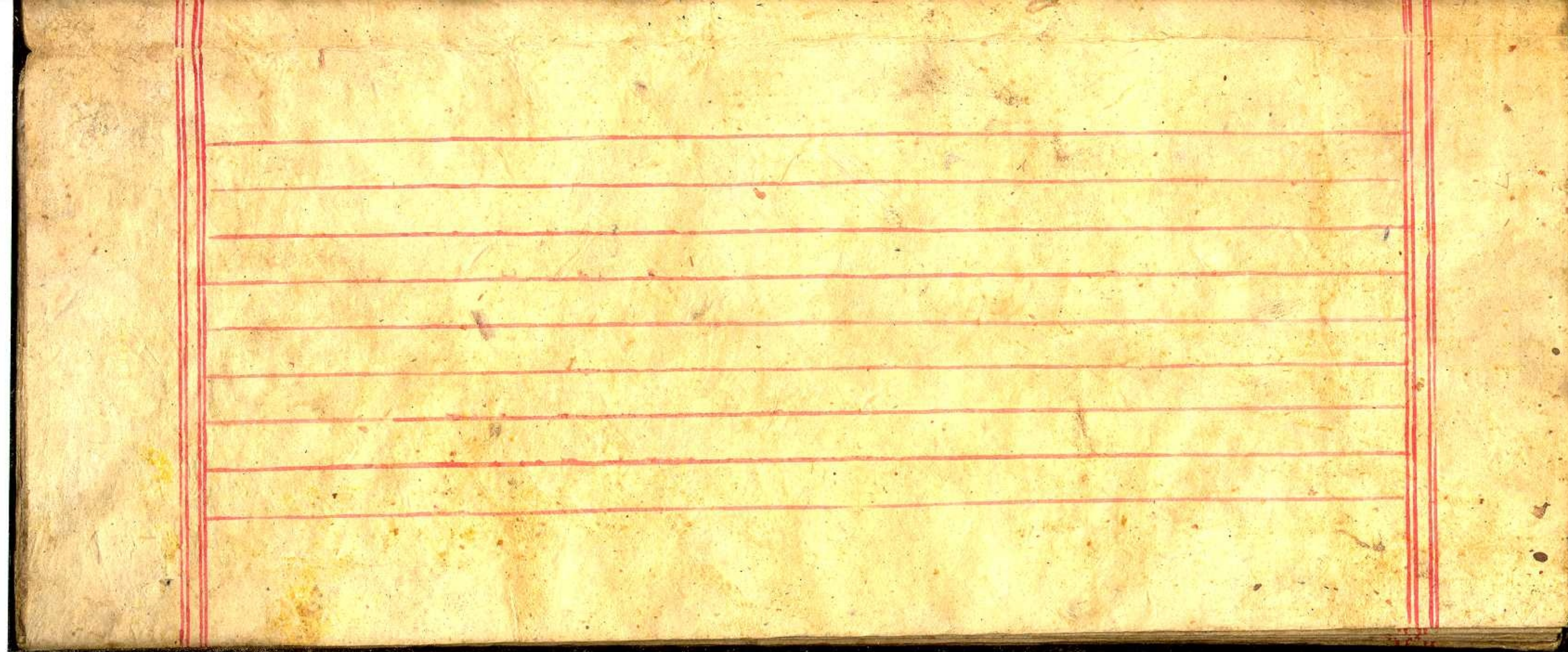


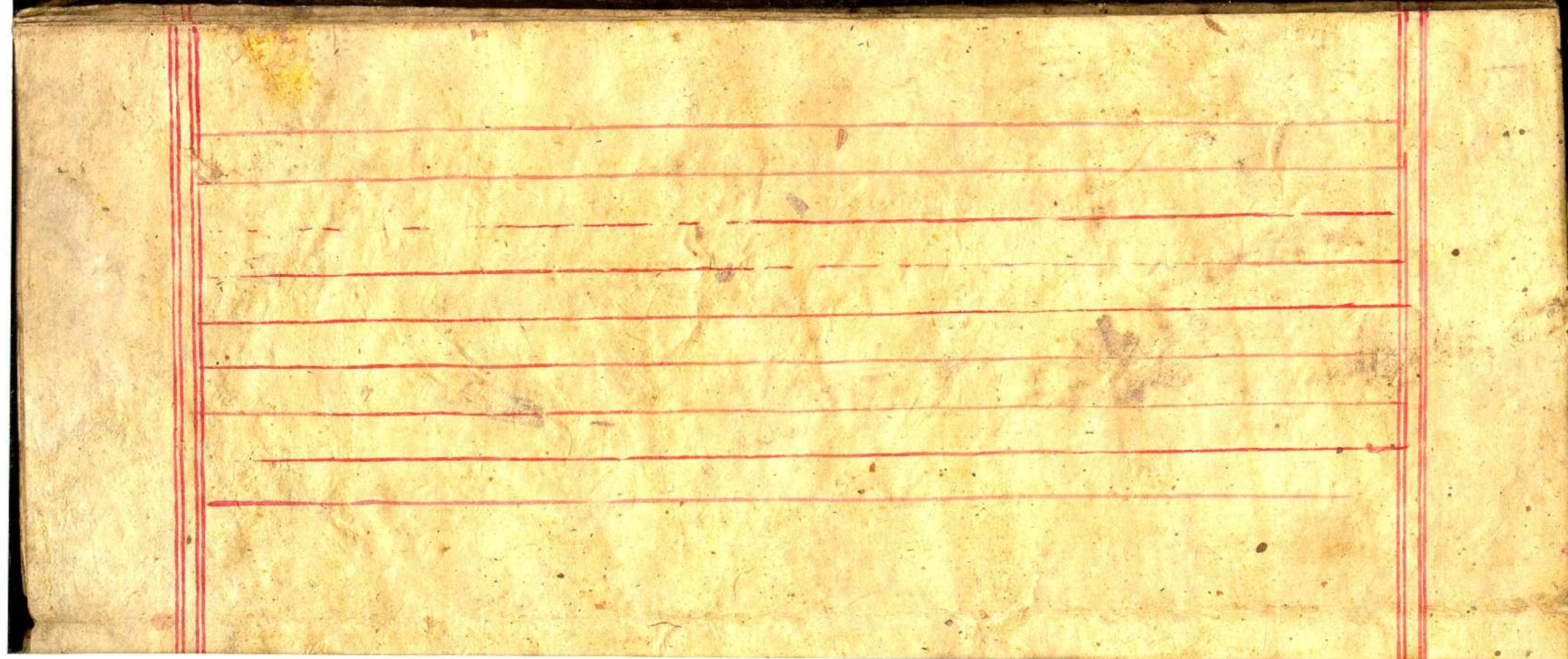


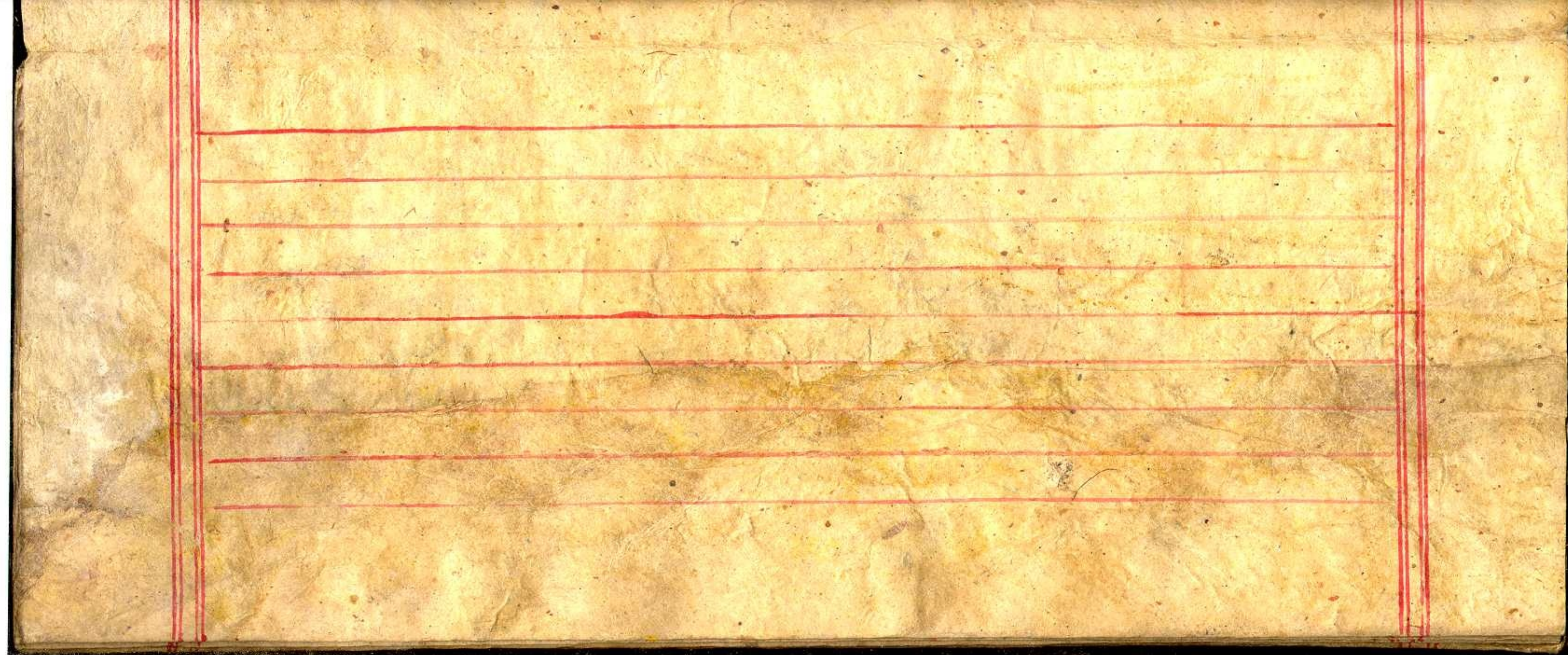


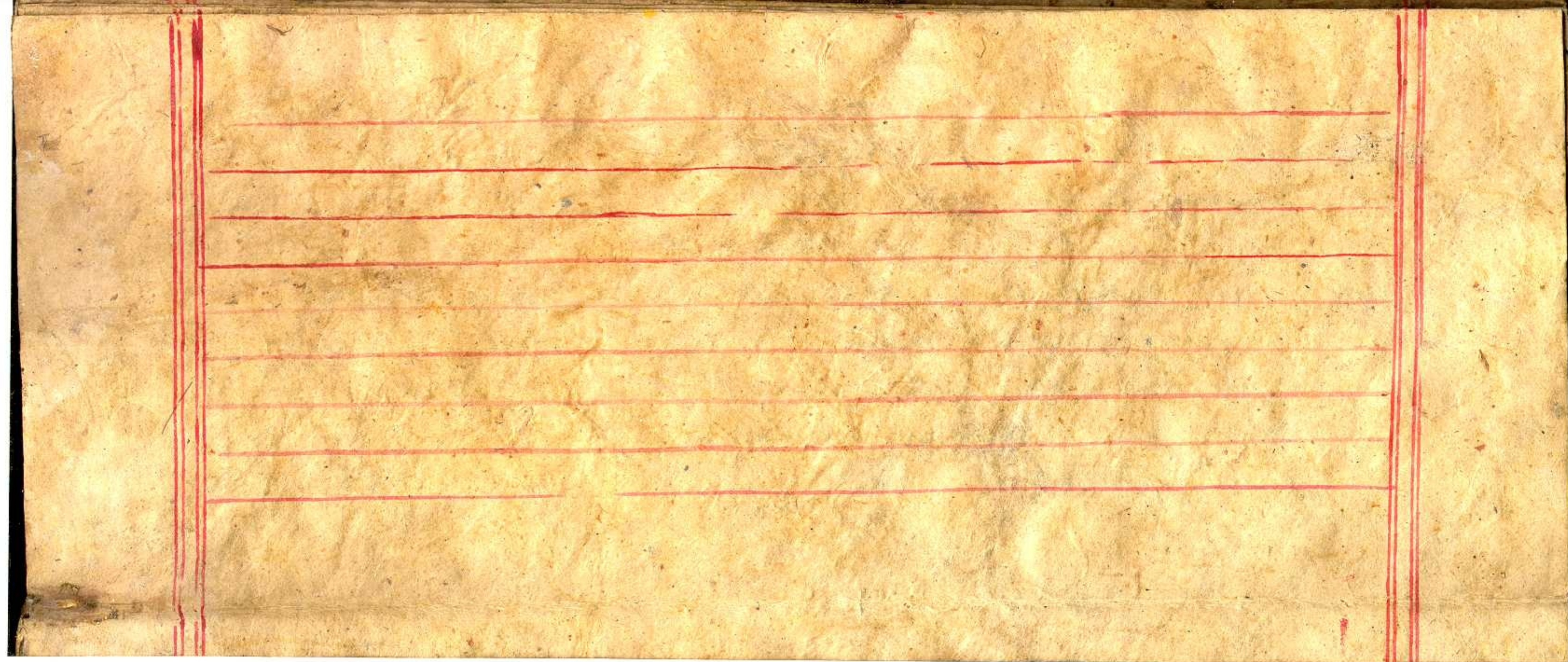


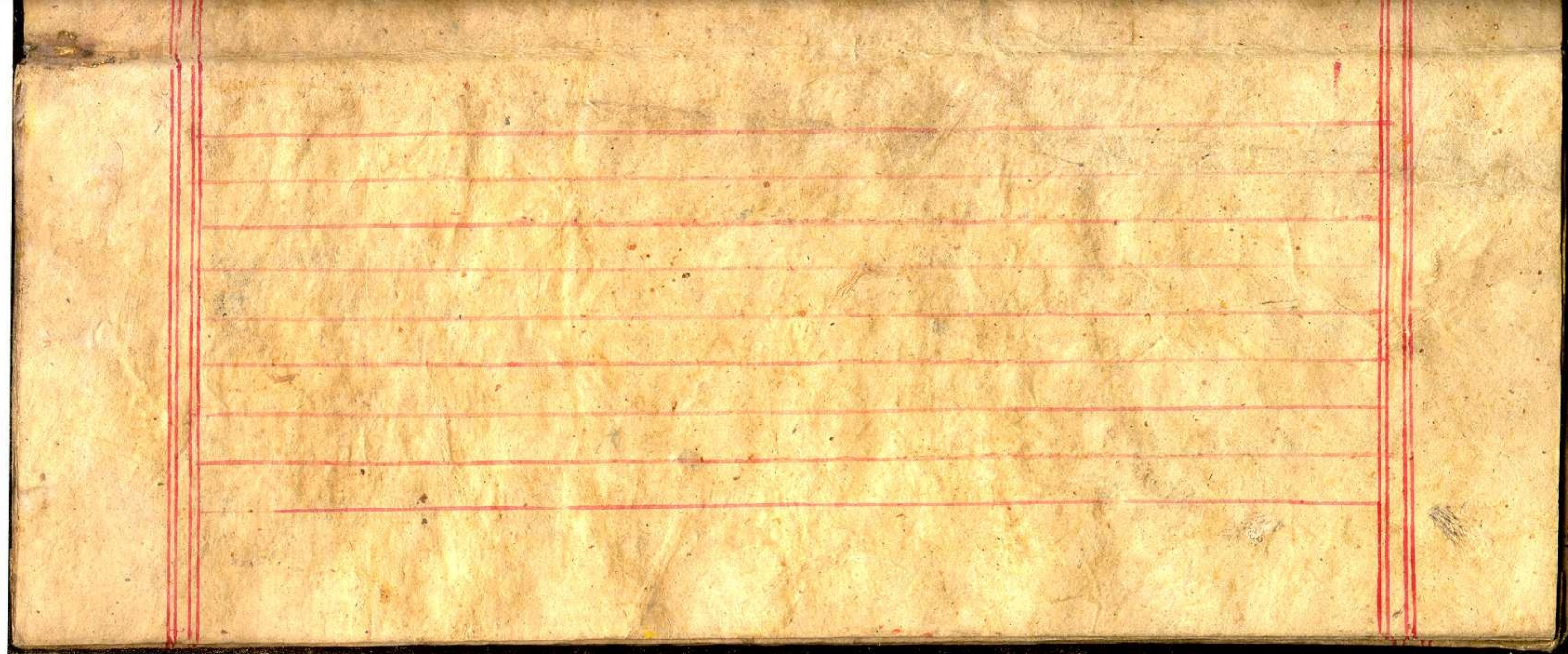


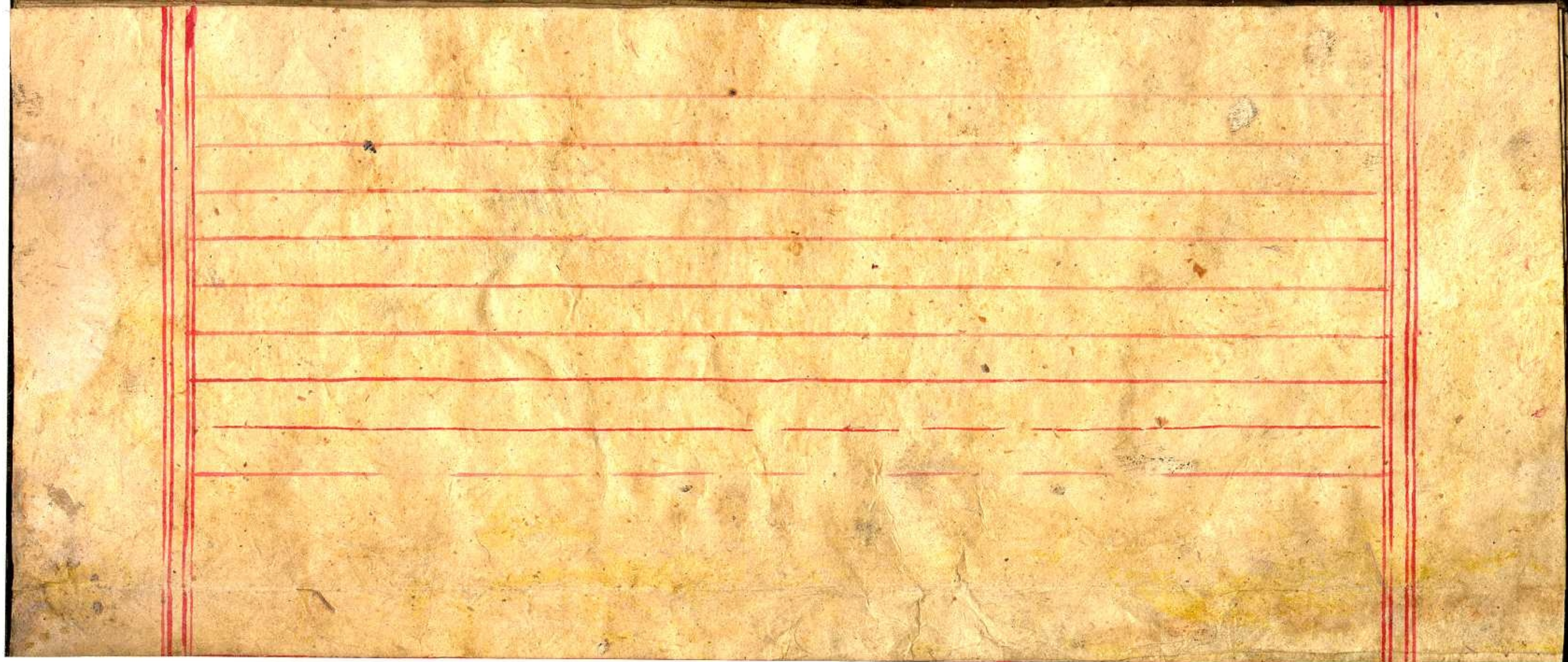


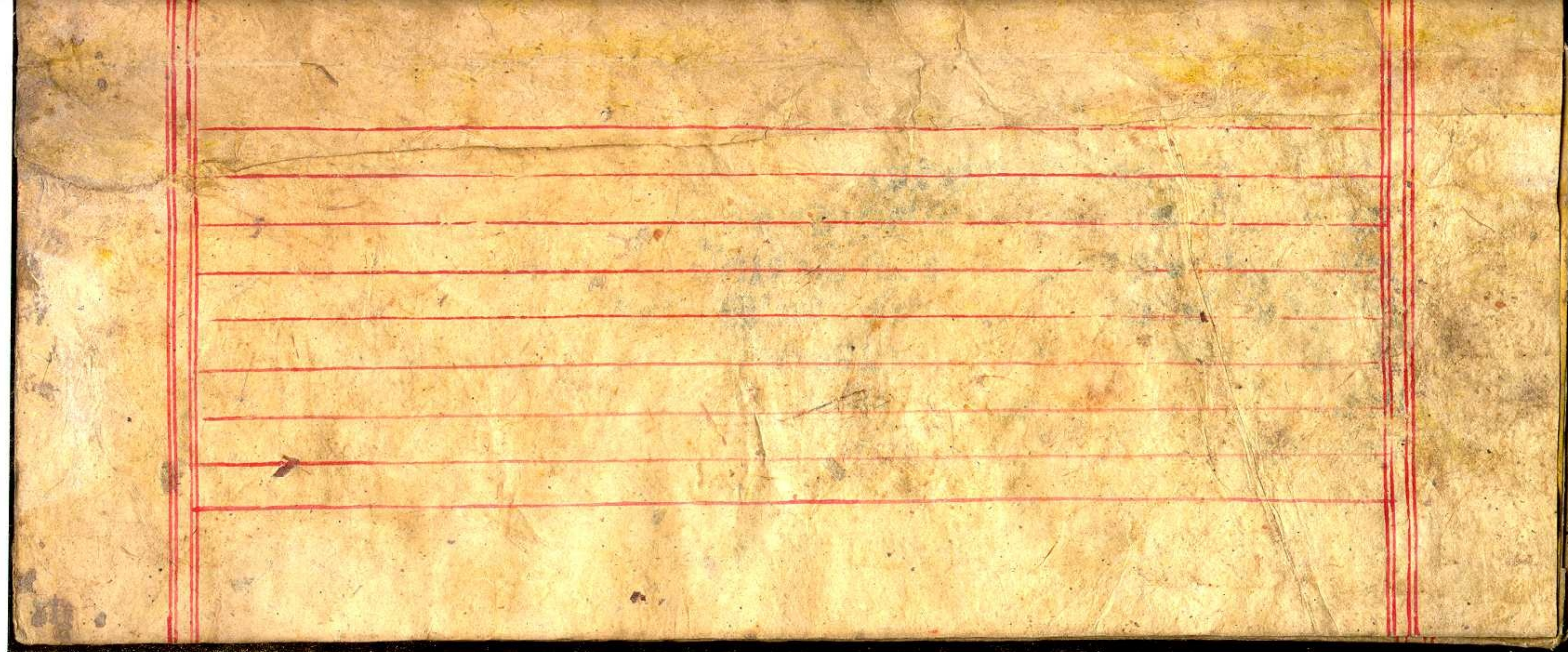


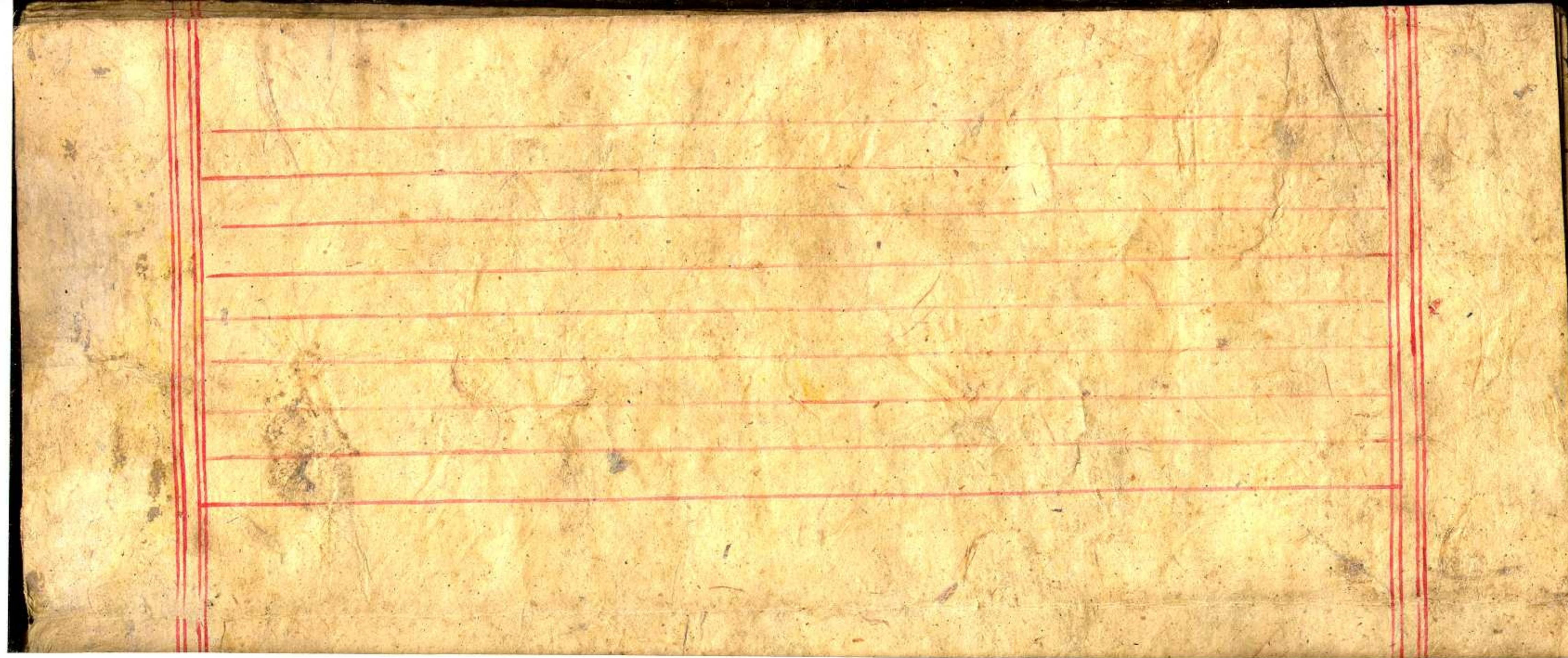


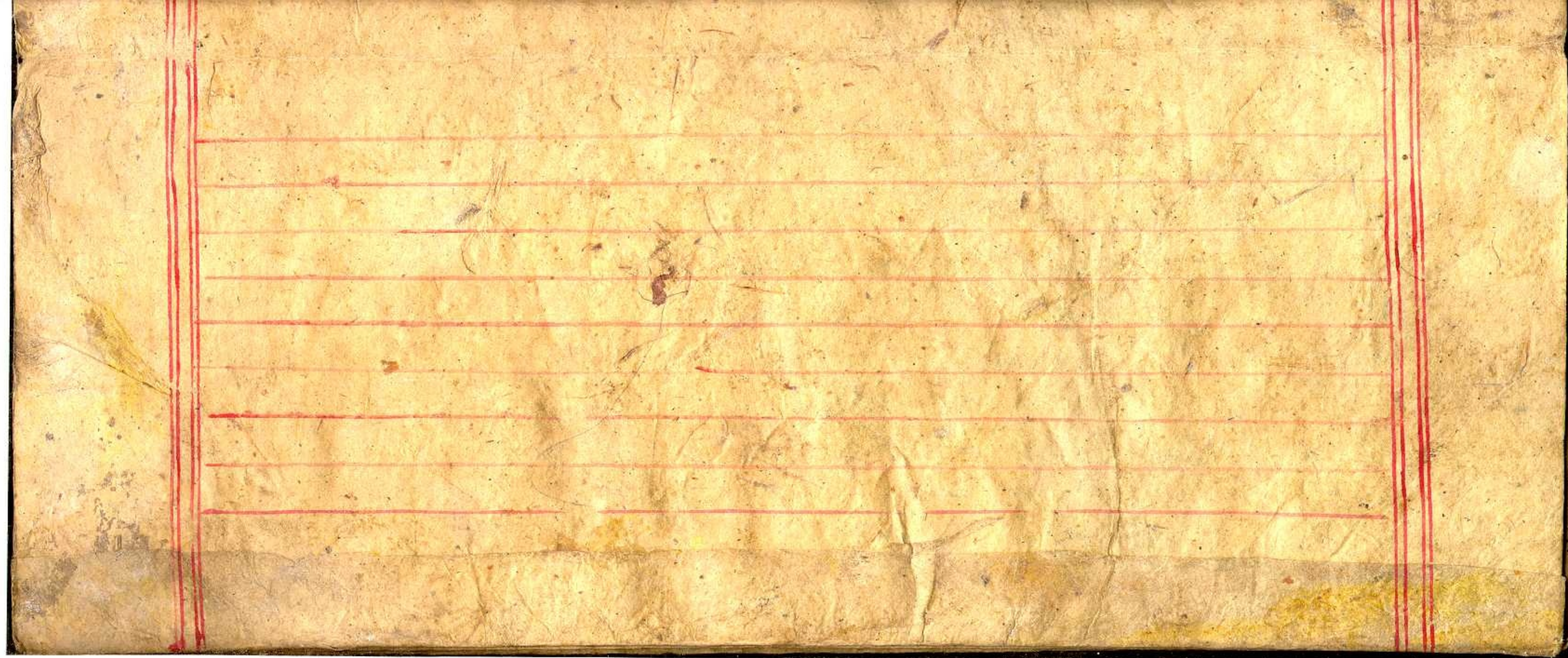


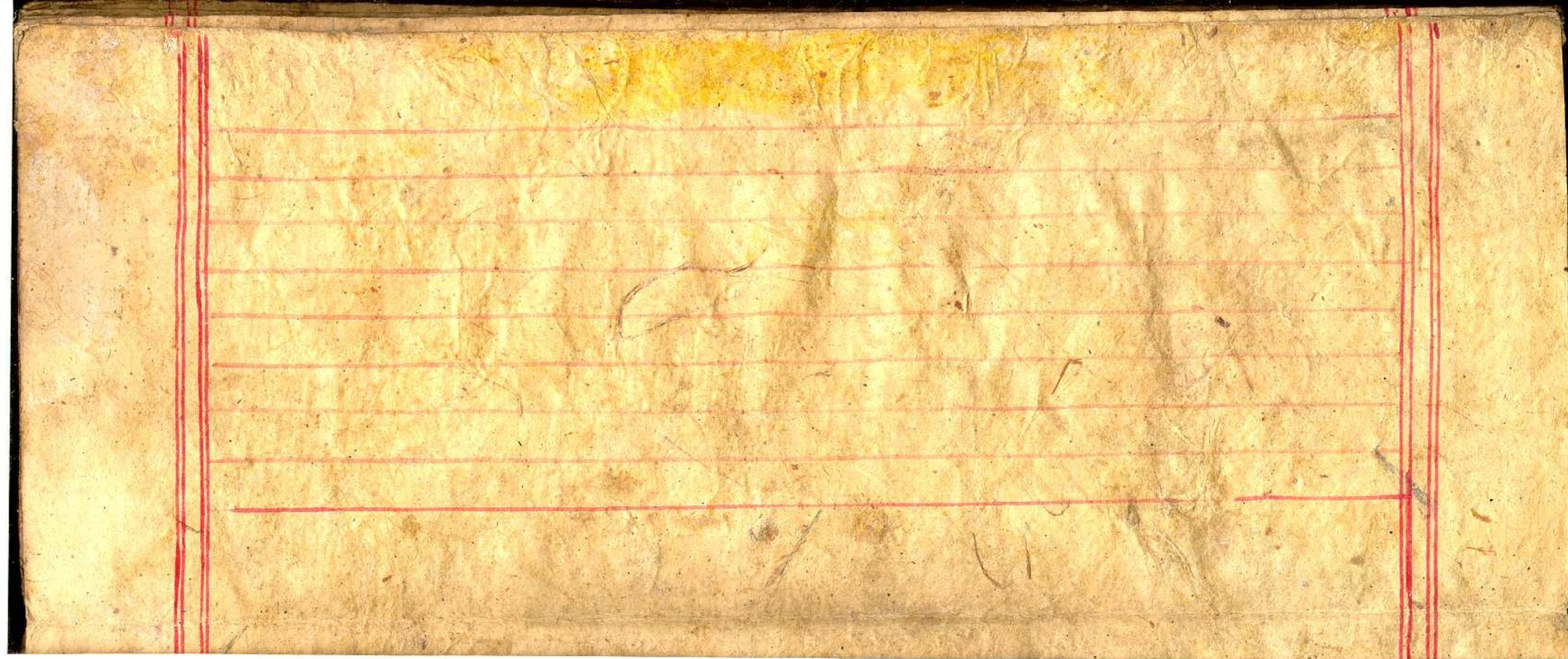


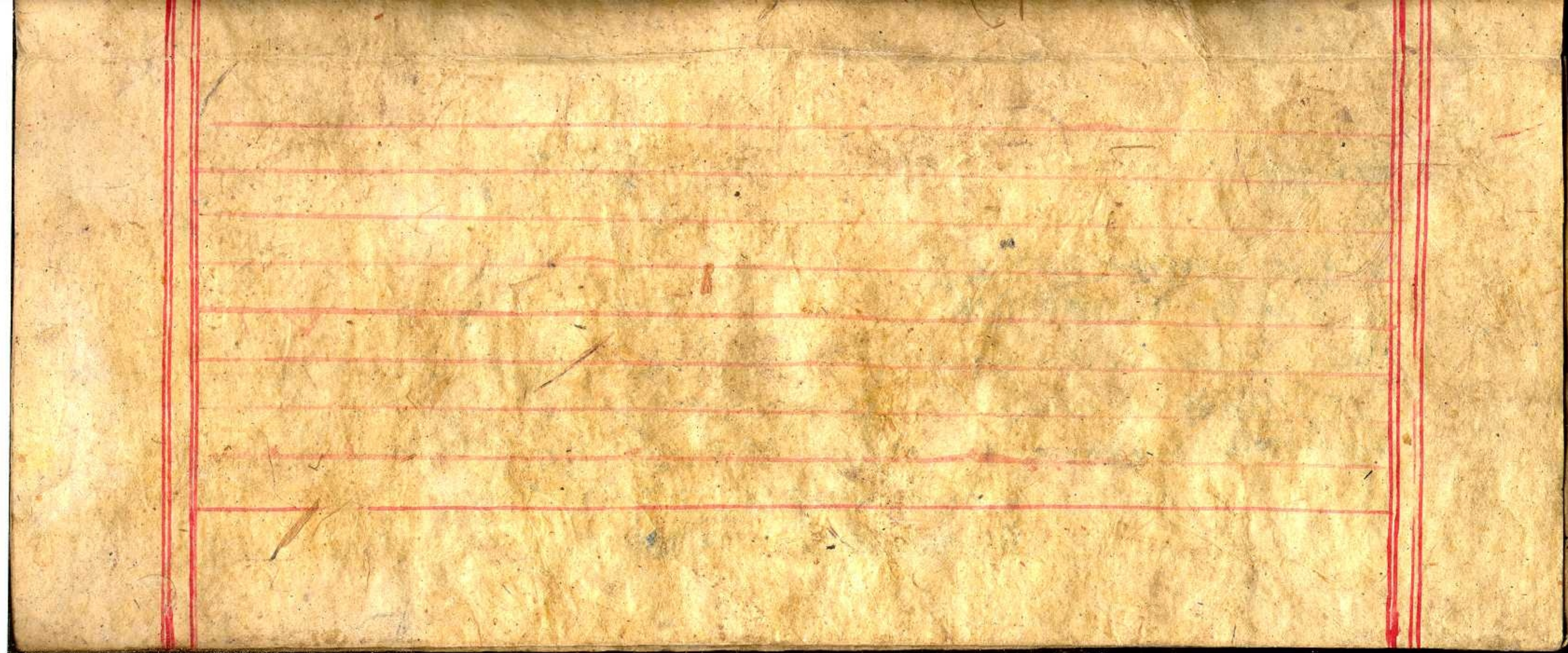


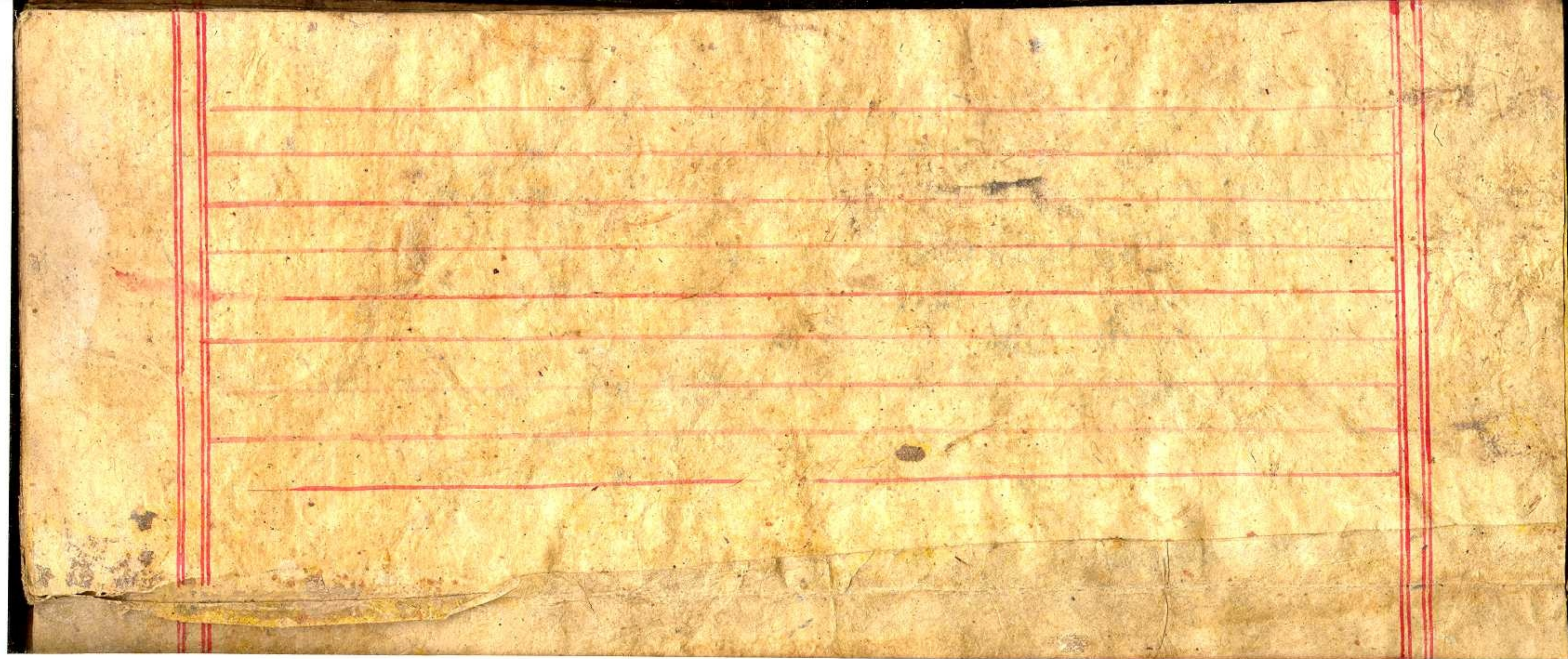


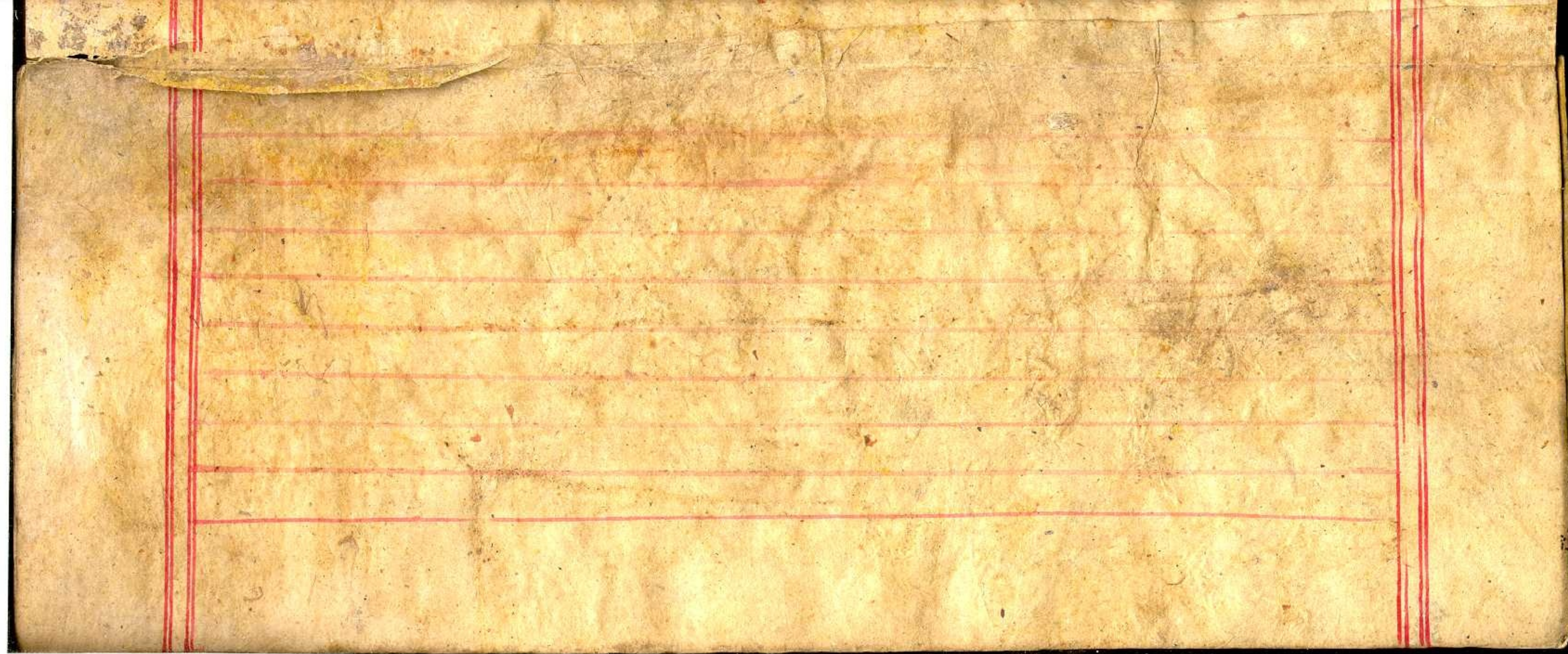


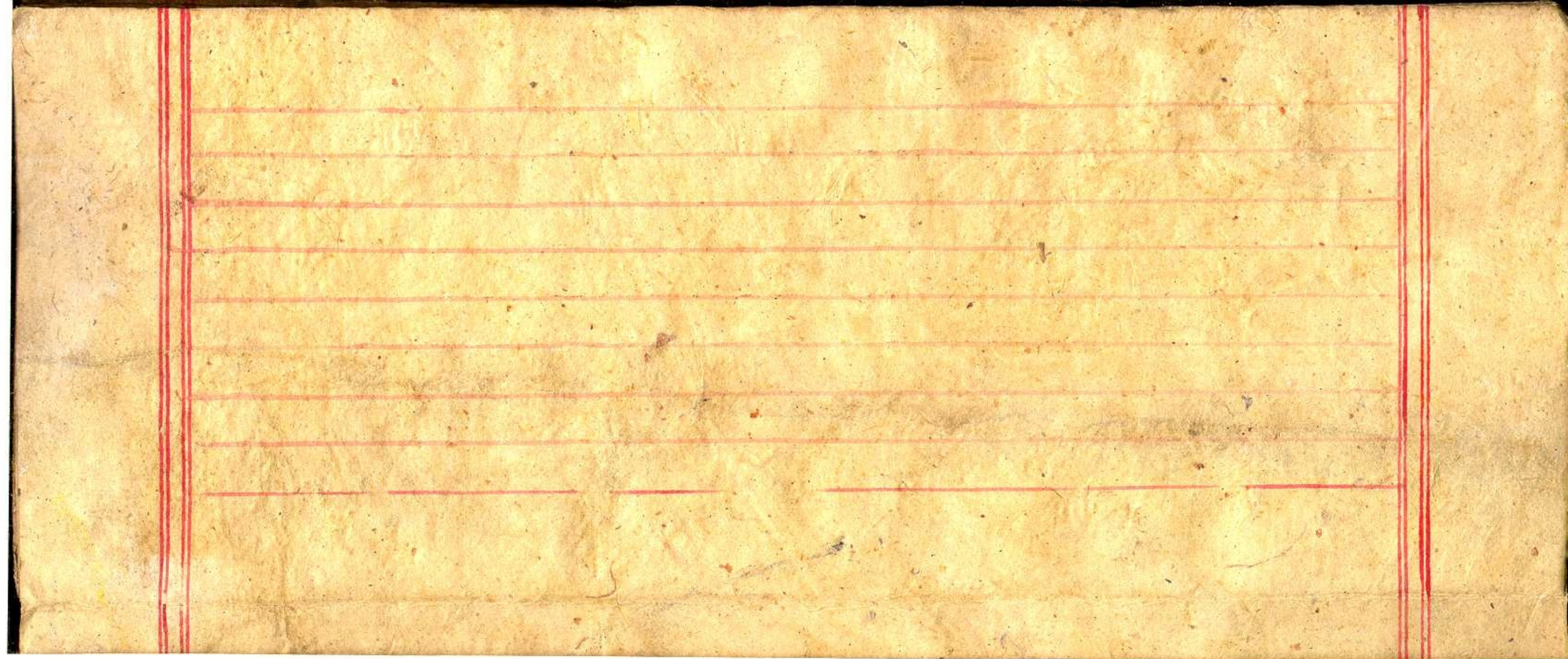


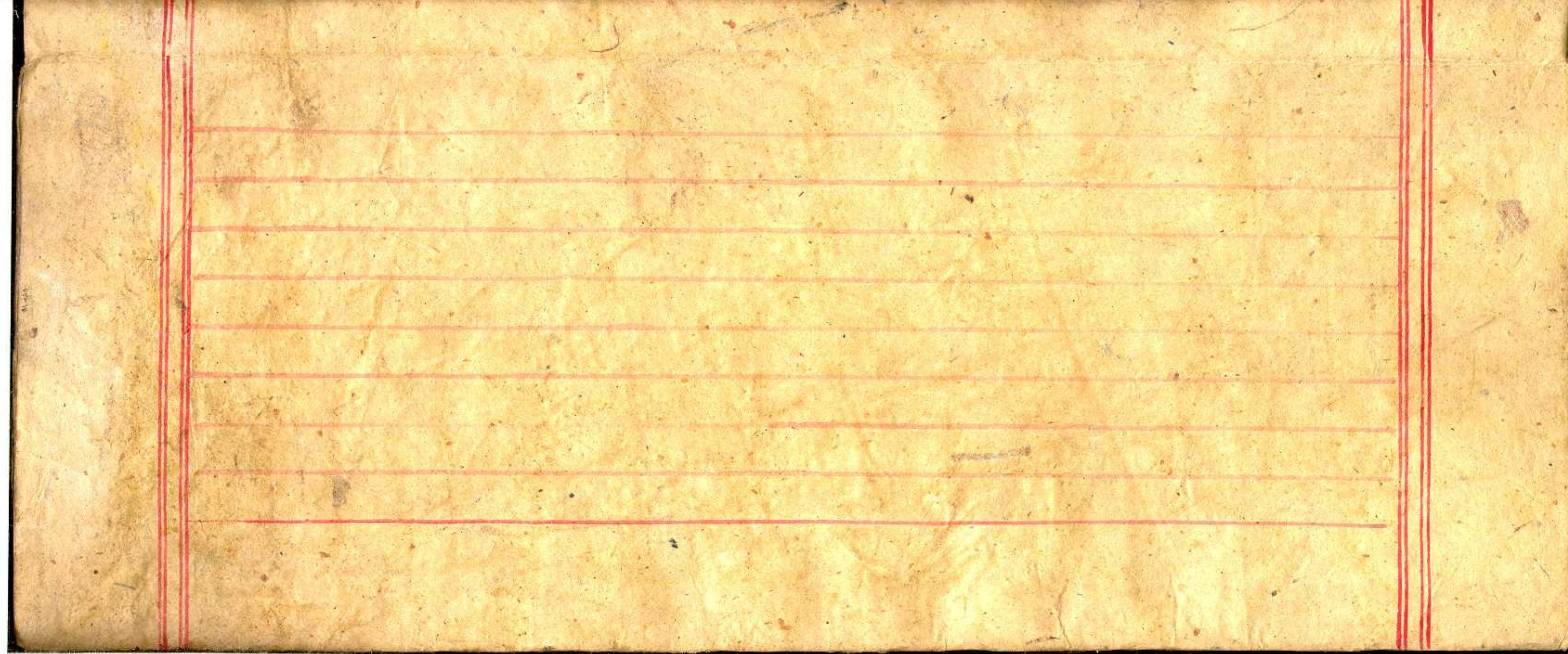


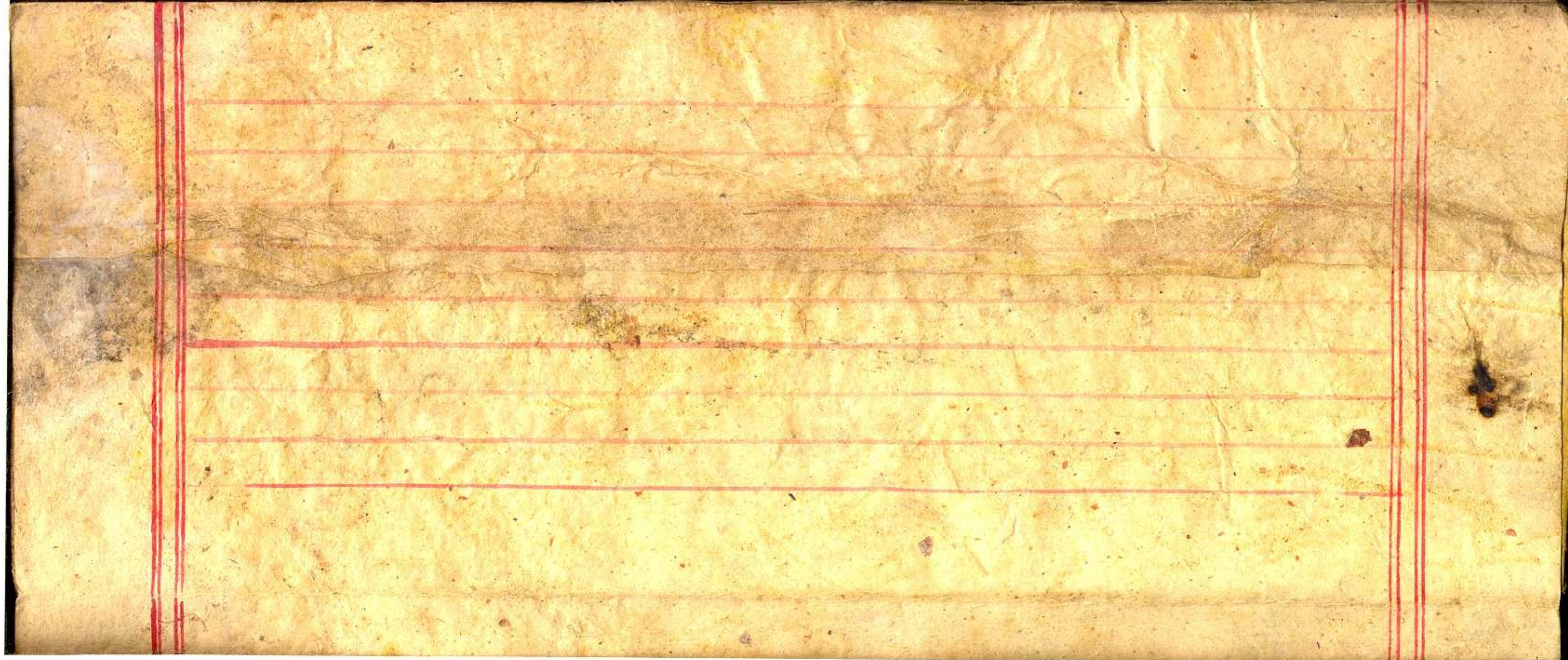


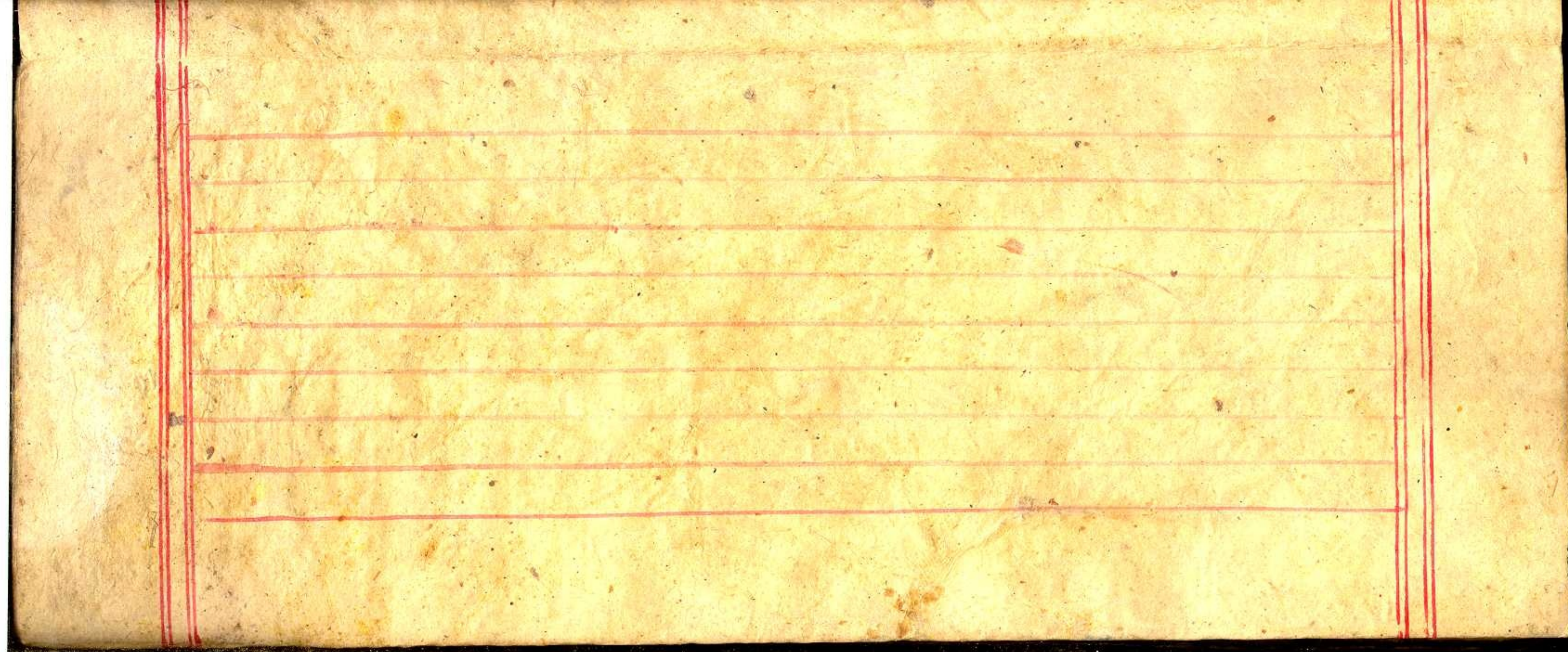


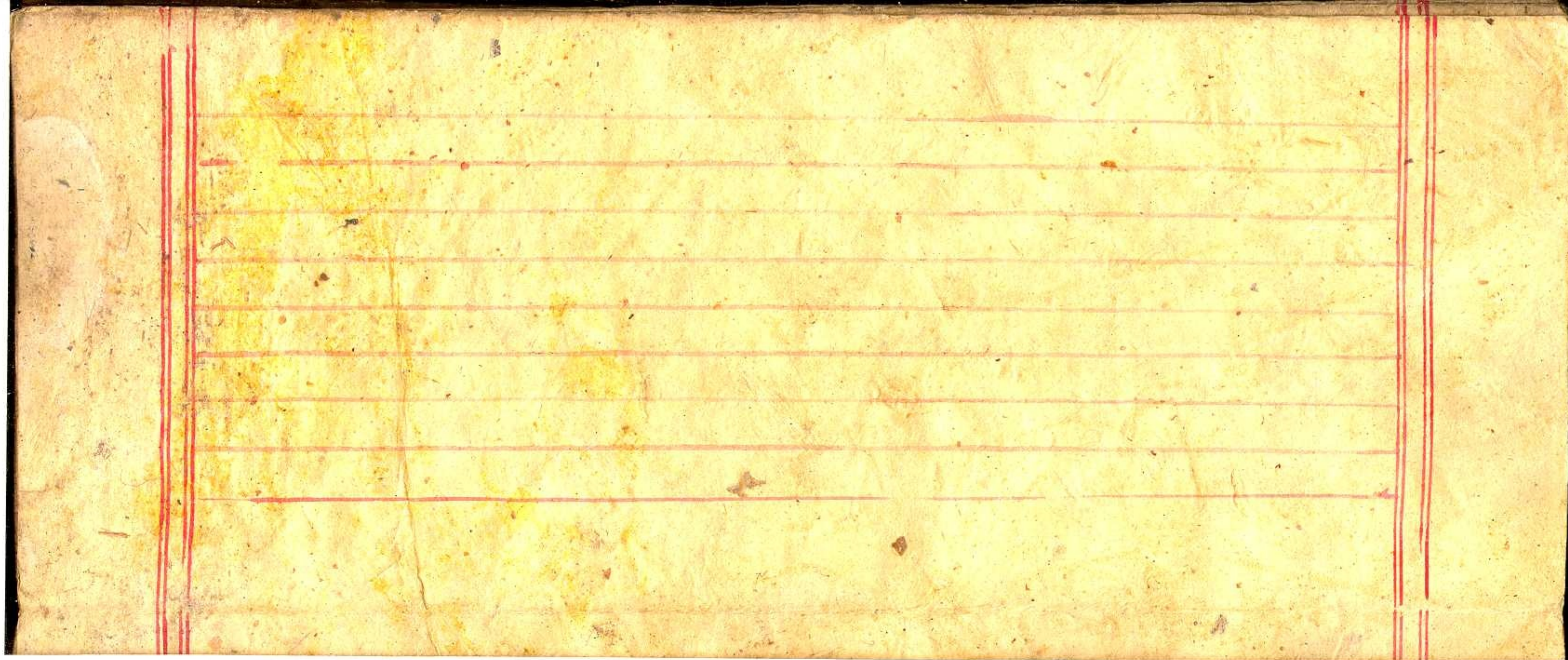


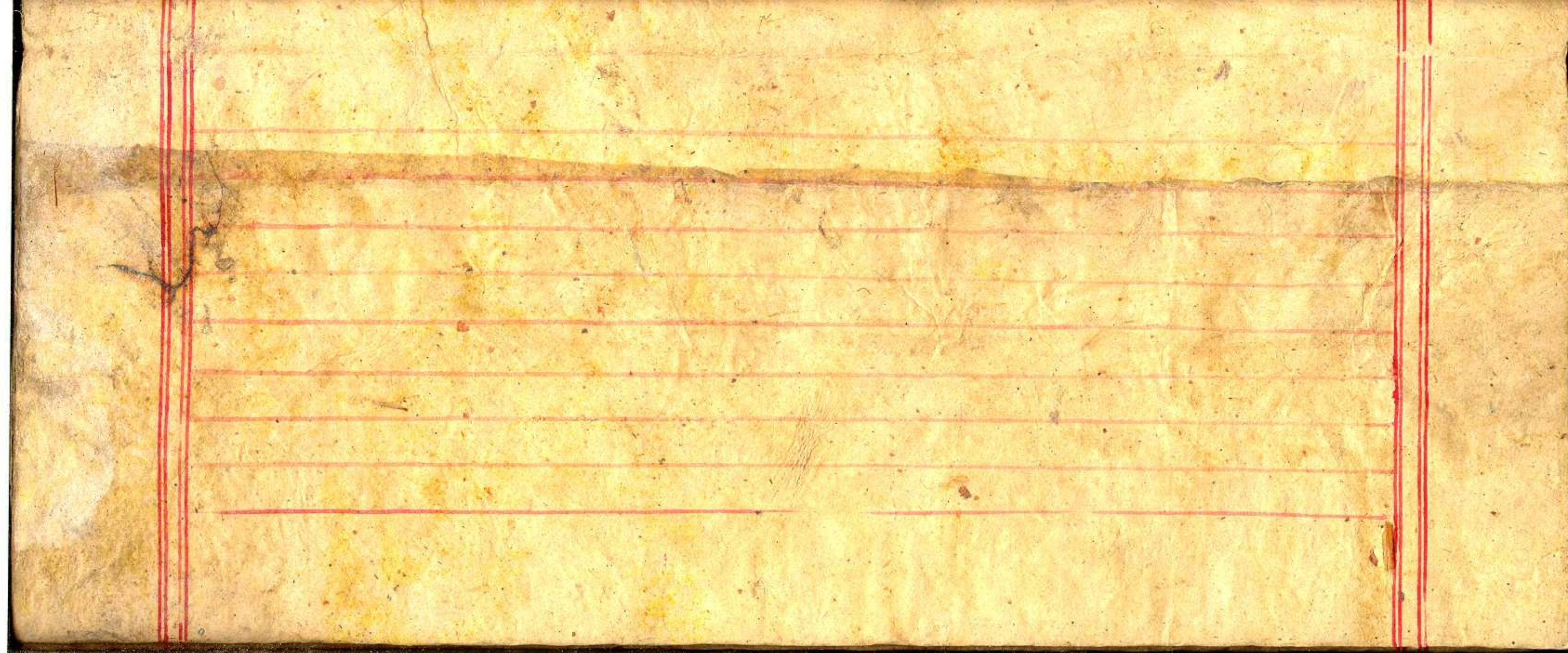


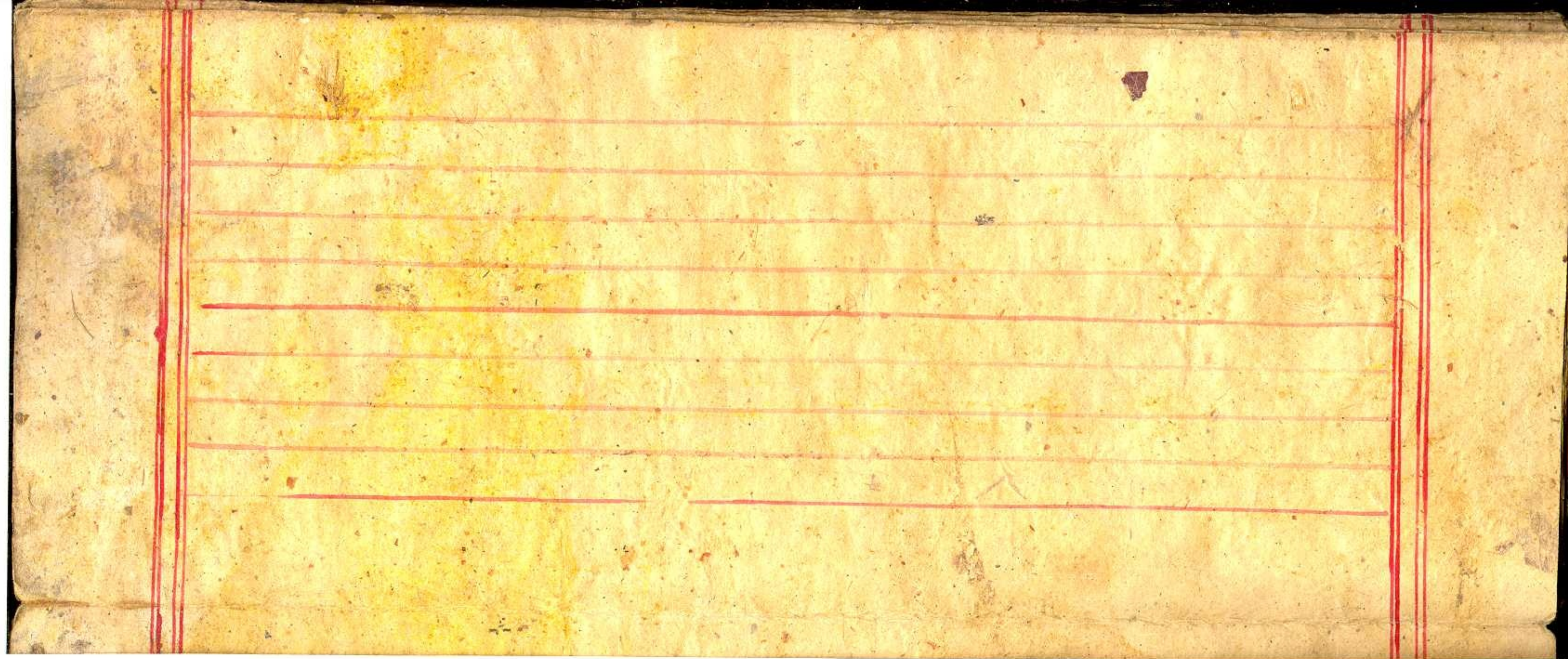


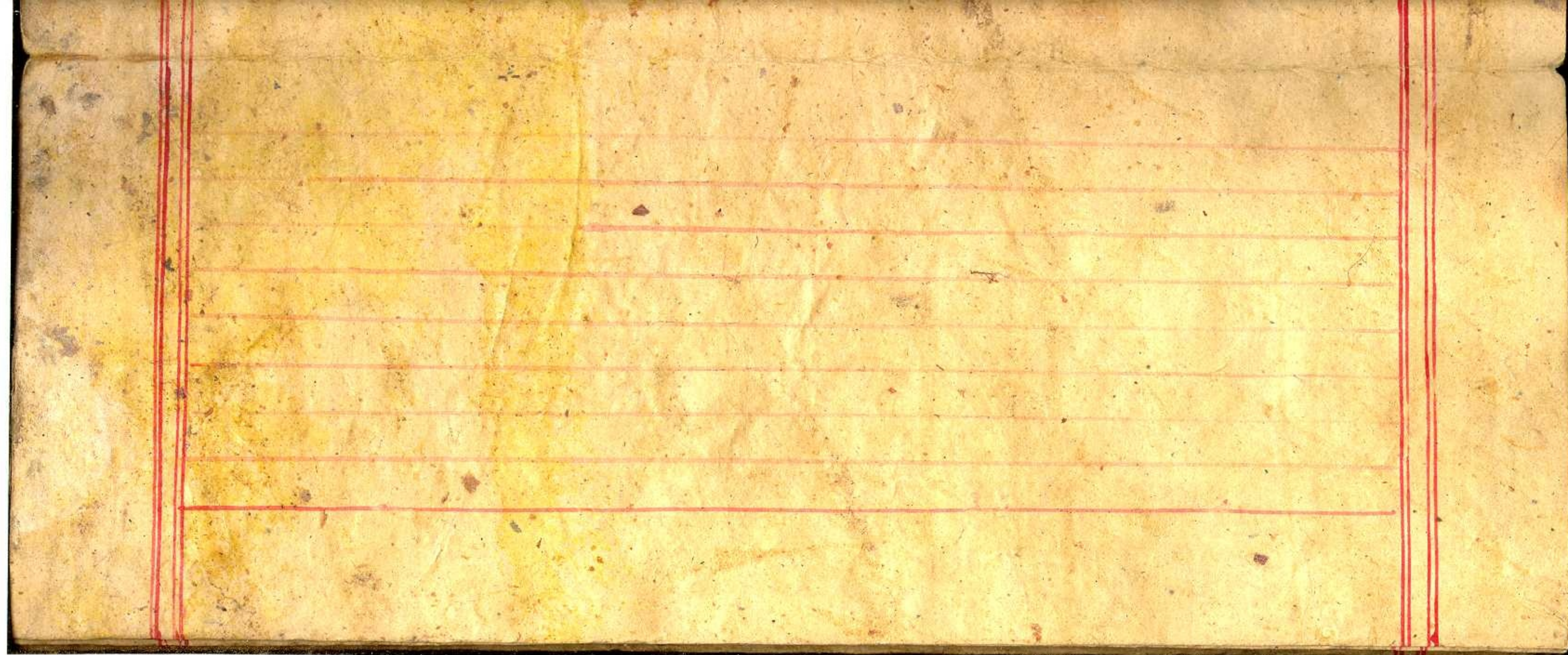


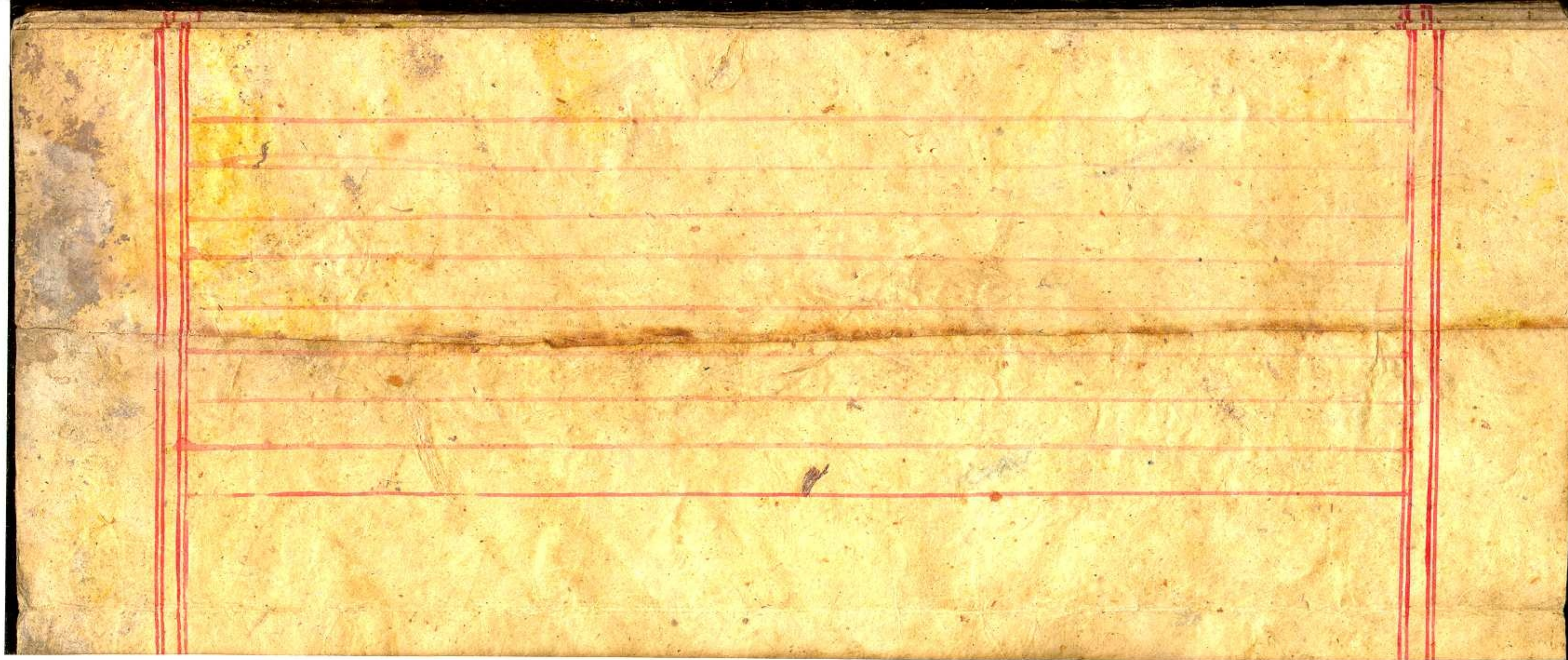


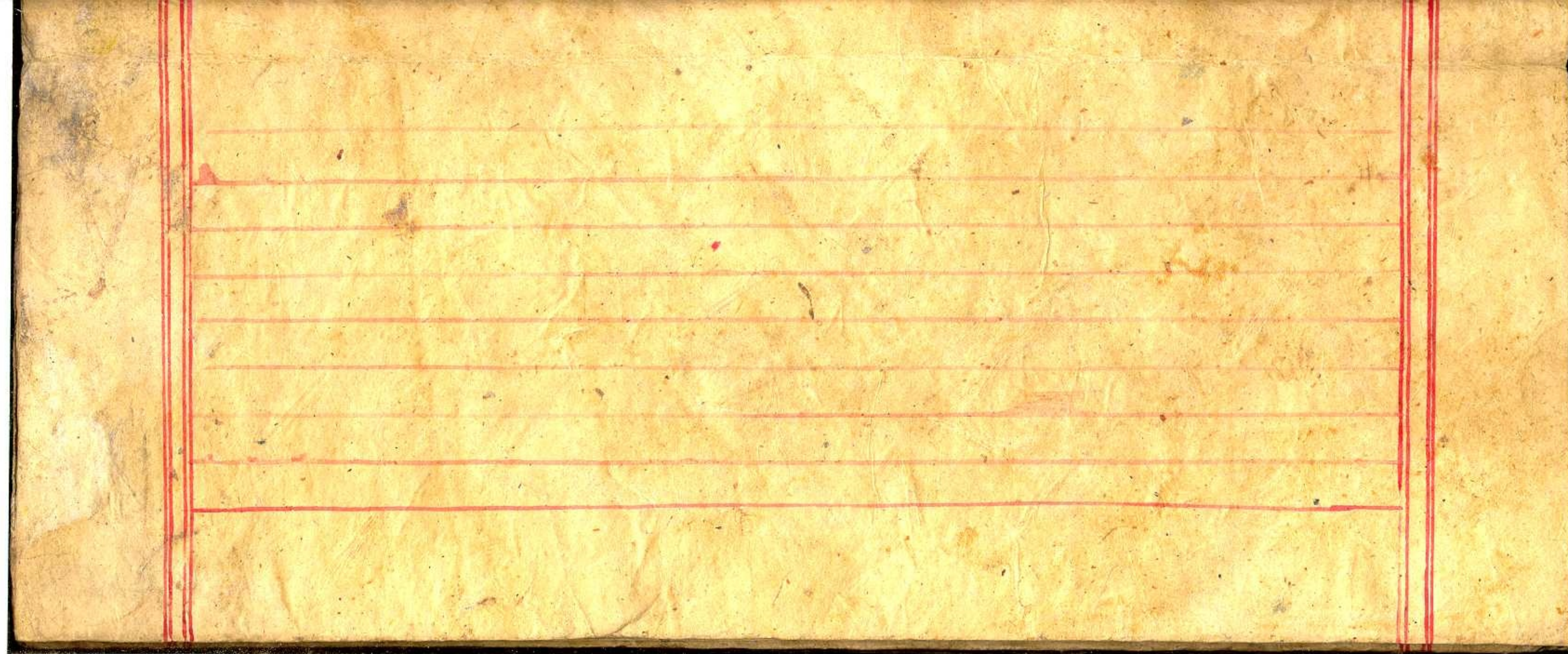


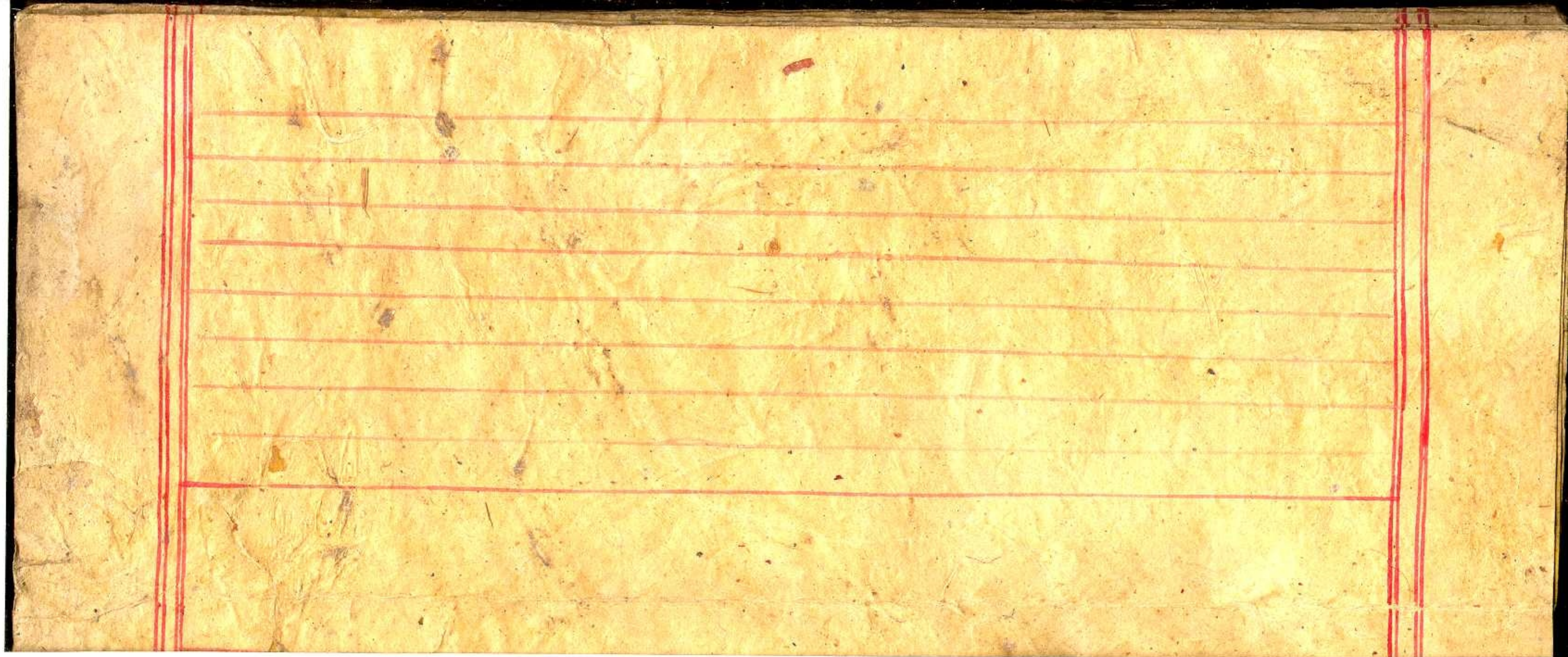












8

